जनपद फिरोजाबाद के लघु एवं वृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की
शिक्षाशास्त्र विषय में "डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी"
की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

2003

शोध निर्देशक-
डॉ० बाबूलाल तिवारी
प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

शोधकर्त्री -
शैल प्रभा
एम०एस-सी०, एम०एड०

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

घोषणा-पत्र

मैं, (श्रीमती) शैल प्रभा घोषणा करती हूँ कि यह शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की शिक्षाशास्त्र विषय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु स्वयं कार्य करके पूर्ण किया है। इसका शीर्षक ***"जनपद फिरोजाबाद के लघु एवं वृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव"*** था। यह मेरी निजी कृति है और अन्यत्र कहीं प्रस्तुत नहीं की गयी है।

Shail Prabha

(श्रीमती) शैल प्रभा

शोधकर्त्री

प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी

☎ (0517) 2444192

निवास
शिक्षक आवास
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय परिसर, झाँसी

पत्रांक..............   दिनांक.......................

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोध प्रबन्ध ***"जनपद फिरोजाबाद के लघु एवं वृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव"*** बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की शिक्षाशास्त्र विषय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु **(श्रीमती) शैल प्रभा** ने स्वयं पूर्ण किया है। यह इनका निजी कार्य है जो मेरे संरक्षण एवं निर्देशन में पूर्ण किया गया है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(डॉ. बाबूलाल तिवारी)
निर्देशक

प्राक्कथन

वर्तमान जटिल एवं क्लिष्ट समाज में मानव की जीवन परिधि अत्यन्त व्यापक होती जा रही है। उसे नित्य प्रति नयी-नयी समस्याओं का सामनां करना पड़ता है, क्योंकि नवीन एवं पुराने मूल्यों के संघर्ष में वह पुराने मूल्यों को पूर्णतया छोड़ नहीं पाता एवं नवीन मूल्यों को पूर्णतया स्वीकार नहीं कर पाता। अतः ऐसी विषम परिस्थिति में व्यक्ति को विशिष्ट अवलम्ब की आवश्यकता पड़ती है, तब परिवार ही उसे अवलम्ब प्रदान कर पथ प्रदर्शित करता है। परिवार मानव समाज की आधारभूत एवं मौलिक इकाई है तथा वह आधारशिला है जहां बालक अपने सामाजिक जीवन का विशाल भवन अवलम्बित करके भावी जीवन में प्रवेश की तैयारी करता है। माता-पिता के संरक्षण में पलित शिशु में प्रेम, सहयोग, कर्तव्य, परोपकार सहिष्णुता इत्यादि की प्रारम्भिक शिक्षा स्वयं अर्जित होती जाती है जो कि व्यक्ति के भावी जीवन में मूल्य निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। मूल्य मानव जीवन दर्शन के अविभाज्य अंग होते हैं, विभिन्न व्यक्तियों के व्यवहार में विभिन्नता का कारण मूल्यों में अंतर ही है। मानव अपने सीमित साधनों में अनन्त आवश्यकताओं को परिपूरित करने में असमर्थ होता है, तब उसके अन्दर मानसिक तनाव उत्पन्न हो जाता है। अतः विरोधी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने के लिए वह मूल्यों का सहारा लेता है। परिवार उसके इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारिवारिक सम्बन्ध व्यक्ति में ऐसी अन्तर्दृष्टि अभिवृत्ति का प्रस्फुटन कर देते हैं कि व्यक्ति विकट से विकट परिस्थिति को भी अपने प्रयत्न के अनुकूल बना लेता है।

किसी भी देश का सामाजिक, भौतिक एवं आर्थिक विकास उस देश के प्राकृतिक एवं मानवीय साधनों के समुचित शिक्षण में निहित है। सृजनात्मक प्रतिभा सम्पन्न बच्चे ही किसी राष्ट्र के महत्वपूर्ण मानवीय साधन है। मौलिकता कल्पना, आविष्कारिता केवल वैज्ञानिकों, कलाकारों, कवियों, फिल्म अभिनेताओं या कुछ लोगों की बौद्धिक निधि नहीं है बल्कि यह सभी बालकों में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती हैं। सृजनात्मक चिन्तन के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने से ही समाज अपेक्षाकृत अधिक भिन्न, सार्थक एवं प्रगतिशील हो सकता है।

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भली भांति कर सकता है। लघु एवं बृहद् परिवार का प्रभाव उपलब्धि पर पड़

सकता है, इसलिए इन परिवारों के बच्चों की उपलब्धि का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव किस प्रकार पड़ता है, ताकि सरकार द्वारा चलाए जा रहे परिवार नियोजन अभियान को और समृद्ध बनाया जाए। भारतवर्ष में जनसंख्या की समस्या को अधिक से अधिक लघु परिवारों के द्वारा सुलझाया जा सके और छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता और उपलब्धि को बढ़ाया जा सके। अतः प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने लघु एवं बृहद् परिवारों की बालिकाओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है जिसमें परिवारों का चयन करते समय सामाजिक-आर्थिक स्तर को ध्यान में रखा गया है।

इस प्रयास की सम्पूर्ण सफलता का श्रेय **डा. बाबूलाल तिवारी** को है जिसके सुयोग्य एवं सहानुभूतिपूर्ण निर्देशन में मुझे अनुसंधान कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ तथा जिनके निरन्तर प्रोत्साहन के परिणामस्वरूप शोधकार्य सम्पन्न हो सका।

मैं जनपद फिरोजाबाद के विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यो, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की भी आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर प्रदत्तों के एकत्रीकरण में मुझे सहायता प्रदान की है।

शोध कार्य में निरन्तर आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करने वाले अपने परिवारजनों एवं अन्य सभी शुभचिन्तकों के प्रति उनके अनुपम योगदान के लिए सभी का आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं अपनी पुत्री **कु० मृणालिनी** एवं पुत्र **मयंक** के अभूतपूर्व सहयोग के प्रतिदान में स्नेह सिंचित आशीष तथा सुख, समृद्धि एवं ज्ञानमय जीवन की कामना करती हूँ।

अन्त में, मैं **श्री विनय कुमार,** संचालक विनय कम्प्यूटर्स, माथुर काम्पलेक्स, शिकोहाबाद के प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने इस शोध प्रबन्ध के सुचारु रूप से टंकित किया है।

शोधकर्त्री

(श्रीमती) शैल प्रभा

एम.एस.सी., एम.एड.

अनुक्रमणिका

अध्याय	अध्याय सम्बन्धी विवरण	पृष्ठ सं.
अध्याय-१	**प्रस्तावना** आवश्यकता एवं महत्व, समस्या का कथन, उद्देश्य, परिसीमायें, प्रयुक्त प्रत्ययों की व्याख्या	1 - 54
अध्याय-२	**सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन** भारतीय अध्ययन, पश्चिमी अध्ययन	55-103
अध्याय-३	**अध्ययन की योजना एवं प्रक्रिया** (अ) न्यादर्श का चयन (ब) प्रयुक्त उपकरण (स) प्रदत्तों का संकलन (द) प्रयुक्त विधि एवं प्रविधियाँ	104-126
अध्याय-४	**प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन**	127-137
अध्याय-५	**निष्कर्ष, भावी अनुसन्धान के लिए सुझाव एवं शैक्षिक उपयोगिता** आगामी अध्ययन हेतु सुझाव, शैक्षिक उपयोगिता	138-148
	सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची परिशिष्ट-१ : सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी परिशिष्ट-२ : पारिवारिक सम्बन्ध सूची परिशिष्ट-३ : व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली परिशिष्ट-४ : सृजनात्मकता का शाब्दिक परीक्षण	149-157

अध्याय-१

प्रस्तावना

अध्याय- प्रथम

प्रस्तावना

मानव जीवन आज इतना अधिक जटिल एवं क्लिष्ट हो गया है कि इस संघर्षमय वातावरण में युवा पूर्ति एक महत्वपूर्ण समस्या बन गई है। जिन बालकों के हाथों से देश का निर्माण होना चाहिए, वह हाथ जब अन्न के लिए हाथ फैलाकर दया की भीख मांगते हैं तो एक भयावह रूप नेत्रों के सम्मुख उपस्थित हो जाता है। देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिए आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों का अध्ययन करना पड़ेगा। उन कारणों को जानना होगा, जिसके कारण हमारी दशा उन्नति के स्थान पर अवनति की ओर जा रही है। यदि ध्यानपूर्वक परिस्थितियों का अवलोकन किया जाय, तो हमारी अवनति का मुख्य कारण जनसंख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि है, जिसने हमें चारों ओर से निराशा के गहन अंधकार में धकेल दिया है। यदि यह वृद्धि संख्यात्मक के स्थान पर गुणात्मक रूप ले ले, तो न केवल अधिकांश समस्याएं हल हो जायेंगी, वरन् आशा की नयी किरण हर क्षेत्र में प्रस्फुटित होकर नवीन स्फूर्ति एवं साहस प्रदान करके हमारी अवनति की दिशा को उन्नति की ओर मोड़ देगी।

मानवीय समस्याओं में जनसंख्या की समस्या मौलिक और प्रधान मानी जाती है, क्योंकि अत्यधिक जनसंख्या न केवल व्यक्ति और परिवार को परन्तु देश और विश्व को भी हानि पहुंचाती है। जनसंख्या का अनियन्त्रित विस्फोट व्यक्ति की योग्यता, स्वास्थ्य व प्रसन्नता को परिवार के आर्थिक स्तर व उसके सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति को, देश की आर्थिक प्रगति व वैभव को तथा विश्व में शान्ति स्थापना में नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। जब परिवार के सदस्य परिवार के बड़े आकार व कम आय के कारण अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते हैं तो उसके लिए अवैध उपाय प्रयोग में लाते हैं जिससे समाज में न केवल अपराध जैसी

सामाजिक समस्यायें बढ़ती हैं बल्कि भावनात्मक विकार व विघटित व्यक्तित्व जैसी मनोवैज्ञानिक समस्याएं भी उत्पन्न होती है।[1] जिनका प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास पर तथा भावी जीवन में मूल्य निर्धारण पर, शिक्षा पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

आज के युग में जनसंख्या की समस्या के अध्ययन की आवश्यकता इस लिए उत्पन्न हुई है कि संसार की दो तिहाई अर्थ व्यवस्था अत्यधिक जनसंख्या से पीड़ित है।

सम्पूर्ण संसार के क्षेत्रफल में भारत का हिस्सा केवल 2.46 है, जबकि इसको संसार की 25 प्रतिशत जनसंख्या को सहन करना पड़ता है। जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद भारत का स्थान दूसरा है। 1991 से 2001 के बीच जनसंख्या के बढ़ने की दर 1.93 प्रतिशत प्रति वर्ष रही है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 102 करोड़ 70 लाख 15 हजार 247 थी। जबकि 1971 में भारत की जनसंख्या 54,81,59,652 थी।

जनसंख्या के बढ़ने से कई समस्याएं उत्पन्न हुई। एक **प्रमुख समस्या** उचित शिक्षा का अभाव है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में शिक्षित प्रतिशत 65.38 था जिनमें पुरूषों का प्रतिशत 75.85 और स्त्रियों का प्रतिशत 54.16 था।

जनसंख्या के बढ़ने से **दूसरी समस्या** आवास की समस्या होती है। बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए नए-नए आवासों की व्यवस्था करना अत्यन्त कठिन कार्य है।

लोगों को आवास देने के लिए जहां एक तरफ सरकार को अधिक धन की आवश्यकता होती है, वहीं दूसरी तरफ हरे भरे वृक्षों को काटकर मकान बनाने से प्रदूषण की समस्या भी उत्पन्न होती जा रही है।

जनसंख्या के बढ़ने से **तीसरी समस्या** ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की तरफ लोगों का पलायन है। गांव में जनसंख्या के तीव्र गति से बढ़ने के कारण खेतों का आकार अनार्थिक होता जा रहा है अर्थात् खेत छोटे-छोटे टुकड़ों में टूटते जा रहे हैं।

इस कारण उनकी उर्वरा शक्ति भी कम होती जा रही है और खाद्य पदार्थों का उत्पादन भी कम होता जा रहा है।

जनसंख्या की **सबसे महत्वपूर्ण समस्या** आर्थिक विकास को अवरूद्ध करने की है, जनसंख्या के तीव्रगति से बढ़ने के कारण प्रति व्यक्ति आय कम होतीजाती है जिसके परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति बचत, प्रति व्यक्ति विनियोग, प्रति व्यक्ति पूंजी निर्माण और प्रति व्यक्ति आर्थिक विकास की मात्रा भी कम होती जाती है।

बम्बई में एक **नेशनल सेमिनार** जनसंख्या शिक्षण पर आयोजित की गई जिसमें इस बात पर बल दिया गया।

"To enable the students to understand their family size is controllable that population limitation can facilitate the development of a higher quality of life in the nation and that a small family size can contribute materially to the quality of living for the individual family."[2]

एक **सेमिनार** यूनेस्को द्वारा बैंगकोक में भी आयोजित की गई जिसमें कहा गया है-

"An educational programme which provides for a study of the population situation in the family, community, nation and world, for the purpose of developing in the students rational and responsible attitude and behaviour towards that situation."[3]

भारत जैसे देश में साधनों की इतनी कमी है कि यहां किसी प्रकार की भी जनसंख्या वृद्धि आर्थिक पिछड़ेपन की ओर बढ़ावा देती है। बच्चे और अनुसूचित जनजातियां देश के आर्थिक विकास में किसी प्रकार का सहयोग नहीं देते। यह भी देखा गया है कि जिन प्रदेशों में अनुसूचित जनजातियों की संख्या अधिक है वहां विकास की दर भी उतनी ही कम है और निर्धनता का फैलाव भी उतना ही अधिक है।

जनसंख्या और योजना पर तत्कालीन योजना मंत्री नारायण दत्त तिवारी ने कहा था-

"अन्त में जनसंख्या की समस्या पर भी विचार करना होगा। अब तक मेहनत करके जो कुछ हमने पाया, उनसे हमारे समाज के रहन-सहन के स्तर में सुधार के दर्शन नहीं हुए, इसका कारण है जनसंख्या की अनियंत्रित वृद्धि।"

जब तक जन्मदर संयमित नहीं होगी तब तक गरीब लोगों की आमदनी बढ़ाने के सारे उपाय विफल होंगे। बहुत दिनों से हमारे सामने सुसंगठित परिवार नियोजन कार्यक्रम मौजूद हैं, धीरे-धीरे हम इसे अपने स्वास्थ्य कार्यक्रम के साथ जोड़ते जा रहे हैं। अब यह परिवार कल्याण कार्यक्रम बन गया है। हमें इस रास्ते पर बड़ी दृढ़ता से चलना है। लेकिन इसके लिए जोर जबरदस्ती नहीं करनी है। यदि हम इस समस्या की ओर से आंखें बन्द किए बैठे रहेंगे तो जनसंख्या वृद्धि को काबू में रखना और भी मुश्किल हो जायेगा।

मार्च 1979 में योजना आयोग भारत सरकार द्वारा प्रकाशित जनसंख्या नीति की **संगोष्ठी की अन्तिम रिपोर्ट में** कहा गया था-

"हम महसूस करते हैं कि विद्यालयों में उचित स्तर पर दिया गया स्वास्थ्य तथा जनसंख्या शिक्षण जनसंख्या नियमन कार्यक्रम में सहायक होगा, विशेषकर यदि यह माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं को दिया जाय, दुर्भाग्यवश बड़ी संख्या में लड़कियों का विद्यालय छोड़ना, विशेषकर कम विकसित राज्यों में, इस कदम की उपयोगिता को बहुत सीमित कर देता है। फिर भी हम इस विचार का समर्थन करते हैं।"

एक और समस्या जो इसी से जुड़ी हुई है, वह परिवार नियोजन की है। प्रायः जनसंख्या शिक्षण और परिवार नियोजन को एक ही मान लिया जाता है और सोचा जाता है कि शिक्षा भी इसी का अंग होगी। वास्तव में यह अलग-अलग विचार हैं जिनका यदि कोई आपसी सम्बन्ध है तो केवल इतना ही कि वे सभी हमारे आचार विचार और जनसंख्या की समस्या से जुड़े हुए हैं। यदि जनसंख्या का नियंत्रण नहीं हुआ तो कल का भारत आज के भारत से भी बदतर होगा।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि देश का भविष्य बहुत से निर्बल व्यक्तियों की अपेक्षा कुछ सबल व्यक्तियों के हाथों में अधिक सुरक्षित रह सकता है।

परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई है। परिवार में ही बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है। परिवार सामाजिक जीवन की शाश्वत पाठशाला है, सामाजिक गुणों का पालना है। स्नेह, प्रेम, त्याग, सहयोग, अनुशासन, परिश्रम, नैतिकता आदि गुणों का स्थाई विकास बच्चे में पारिवारिक वातावरण के फलस्वरूप ही हो पाता है। जो व्यक्ति के भावी जीवन में मूल्य निर्धारित करने में तथा क्षमताओं को विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।[4] अतः आवश्यकता इस बात की है कि बालक को परिवार में उपयुक्त एवं इच्छित वातावरण मिले, जहां रह कर वह अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं को विकसित करके देश को उन्नति के शिखर तक ले जाने में सहयोग प्रदान करें।

भारतीय समाज में विभिन्न जातियां, धर्म व वर्ग पाये जाते हैं। इन सबकी अपनी परम्पराएं रीति-रिवाज, आचार-विचार और रहन-सहन होताहै। इनके आदर्शो, मान्यताओं एवं मूल्यों में अन्तर होता है, इसके बीच में जन्म लेने वाला बालक इनसे किसी न किसी प्रकार प्रभावित हुए बिना नहीं रहता, क्योंकि बालक प्रारम्भ में न शक्ति एवं सामाजिकता की दृष्टि से अपूर्ण होता है। उसका विकास व्यक्तिगत रूप में होकर समूह में होता है। वह अपनी तुलना समाज के अन्य व्यक्तियों से करते हुए अपने मूल्यों का निर्माण करता है। समाज के अतिरिक्त विद्यालयी शिक्षा भी इसके विकास में प्रत्यक्ष रूप से सहायक होती है।

प्राचीन काल में विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार समाज के धनी वर्ग को था। अतः शिक्षक वर्ग भी केवल उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करना कर्तव्य समझते थे। ऐसी स्थिति में विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों का प्रायः अभाव रहता था जिसके परिणामस्वरूप समाज के सभी वर्ग जैसे धनी, गरीब व मध्यम के विद्यार्थी

शिक्षा से लाभान्वित नहीं हो पाते थे और अशिक्षित रहकर अपना जीवनयापन करते थे।

कोठारी कमीशन के अनुसार– "भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है।"[5]

हमारा विश्वास है कि यह कोई चमत्कारोक्ति नहीं है। विज्ञान और शिल्प विज्ञान पर आधारित इस दुनिया में शिक्षा ही लोगों की खुशहाली, कल्याण और सुरक्षा के स्तर का निर्धारण करती है। हमारे स्कूलों और कालेजों से निकलने वाले विद्यार्थियों की योग्यता पर ही राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के उस महत्वपूर्ण कार्य की सफलता निर्भर करेगी जिसका मुख्य लक्ष्य हमारे रहन–सहन का स्तर ऊंचा उठाना है।

इससे यह ध्वनित होता है कि शिक्षा ही विद्यार्थियों के रहन–सहन स्तर अथवा सामाजिक–आर्थिक स्तर का निर्धारण करती है तथा विद्यार्थी को इस योग्य बनाती है कि वह आर्थिक रूप से सम्पन्न हो सके, अतः विद्यार्थियों को इस प्रकार की शिक्षा दी जाय जिससे उनकी व्यवहारिक एवं व्यवसायिक कुशलता में उन्नति हो, और वे अपना आर्थिक व सामाजिक विकास कर सके। परन्तु शिक्षा केवल रहन–सहन के स्तर को निर्धारित नहीं करती, बल्कि रहन–सहन का स्तर भी शिक्षा को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त रहन–सहन के स्तर का प्रभाव बालक के व्यक्तित्व मूल्यों पर भी पड़ता है।

रहन–सहन का स्तर बालकों के अभिभावकों को प्राप्त होने वाली शिक्षा, आय, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा आदि पर निर्भर करता है। भारतवर्ष में राष्ट्रीय आय की वृद्धि की दर और उनका स्तर दोनों ही असन्तोषजनक है, इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण दोष यह है कि यहां आय का वितरण असमान है जिसके कारण कि अधिकांश जनता का सामाजिक आर्थिक स्तर निम्न कोटि का है। इस प्रकार परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का भी बच्चे पर प्रभाव पड़ता है। इस सम्बन्ध में "जे.एस. प्लांट" इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यदि परिवार आर्थिक संकट में होता है तो बच्चे में सहनशीलता आदि गुणों का विकास होताहै, बड़े होने पर ऐसे बच्चे धन जमा करते हैं,

सुख और सन्तोष का अनुभव करते हैं, इन बच्चों में, अपव्ययहीनता की भावना का उदय हो जाता है और वे दूसरों की अपेक्षा अपने को हीन समझने लगते हैं।

एक उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर का बालक अधिक योग्य न होने व सामान्य योग्यता होने पर भी सम्मान का पात्र होता है, परन्तु एक निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक को कुशल होने पर भी अधिक सम्मान नहीं मिल पाता। ऐसी दशा में निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चे अधिक उन्नति नहीं कर पाते।

आज आवश्यकता इस बात की है कि बालकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाया जाय, उनकी समस्याओं का समाधान किया जाय, ताकि वह अपना सर्वांगीण विकास कर सकें।

प्राचीन काल से भारतवर्ष में विषमताओं की भरमार रही है, कुछ प्राकृतिक विषमतायें हैं, तो कुछ मानवीय विषमतायें। ये विषमतायें आज भी विद्यमान हैं। समाज में विभिन्न प्रकार के उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक होते हैं जिसके कारण भारत में असमानता की भावना का तीव्र गति से विकास हो रहा है।

यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि जिन बालकों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च होता है, उनका पालन-पोषण उचित प्रकार से होता है, तथा उनकी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। वह अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करते हैं, तथा समाज के साथ अपना उचित समायोजन करके अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं। इस प्रकार उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर से बालक को निम्न लाभ होते हैं-

1. बालक उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है।
2. बालक की अधिकांश आवश्यकताएं व इच्छायें पूर्ण होती हैं।. जिससे उसे आत्मसन्तोष मिलता है।
3. उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है, क्योंकि उसे संतुलित आहार की प्राप्ति होती है।
4. उसके ज्ञान व व्यक्तित्व का विकास होता है।
5. वह अपनी इच्छानुसार व्यवसाय का चयन कर सुखी जीवन व्यतीत करता है।

6. इन बच्चों में आशावादिता तथा सुरक्षा की भावना देखने को मिलती है। नये कार्यो को करने के उत्साह की प्रचुरता रहती है।
7. वे हीन भावना के शिकार नहीं होते और गरीब बच्चों की तरह आत्म-ग्लानि, संकोच और बेचैनी का अनुभव नहीं करते।

इसके अतिरिक्त उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर होने से बच्चों के बिगड़ने का डर रहता है, जिससे लाभ के स्थान पर कुछ हानियां भी होती हैं, जो कि बर्बादी का कारण है-

1. बचपन से ही बच्चों के हाथ में अधिक धन आ जाने से उनमें, फिज़ूल खर्च, दिखावे की प्रवृत्ति विकसित होती है।
2. वह सिनेमा अधिक देखता है, जुआं खेलता है, और मित्रों पर अधिक खर्च करता है जिसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है।
3. धन के बल पर उसमें मिथ्या गर्व की भावना पनप सकती है और इसी आधार पर उसमें दूसरों के प्रति अवहेलना व पक्षपात की भावना पनप सकती है।
4. धन के बल पर बालक या बालिका लापरवाह हो जाते हैं और अपने हाथ पैरों की अपेक्षा धन पर अधिक भरोसा करने की प्रवृत्ति उनमें विकसित हो जाती है।

इसके विपरीत जिन बालकों का समााजिक-आर्थिक स्तर निम्न होता है, इसका प्रभाव उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। उचित भोजन, घर और डाक्टरी देखभाल की कमी, बुरी शारीरिक बनावट को प्रदर्शित करती है। इस प्रकार के बच्चों में शक्ति, वाक् चातुर्य एवं आत्मविश्वास की कमी होती है जो कि उसके समायोजन के लिए आवश्यक है। इन बालकों की इच्छायें व आवश्यकताएं पूर्ण न होने के कारण इनमें नैराश्य भावना उत्पन्न हो जाती है, तथा वे चिड़चिड़े व क्रोधी हो जाते हैं। ये बच्चे निराशा का अनुभव करते हैं तथा जीवन के प्रति उनका स्वभाविक आकर्षण कम हो जाता है। प्रतिकूल सामाजिक-आर्थिक दशायें ही बच्चों को अपराधी, बाल अपराधी बनने में सहायता देती हैं, अर्थात् उनके व्यक्तित्व में अपराध प्रवृत्तियां पनप जाती हैं। ये बच्चे अधिक सुखी सम्पन्न परिवारों के बच्चों का नाना प्रकार की सुविधाओं तथा विलासिता की वस्तुओं का उपभोग करते देखते हैं और चाहने पर भी

अपनी निर्धनता के कारण उन वस्तुओं को प्राप्त नहीं कर पाते तो उनमें हीनता की भावना ही नहीं पनपती, वरन लाचारवश जलन की भावना भी उत्पन्न हो जाती है। पहले से वैध तरीकों से उन वस्तुओं को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं और जब वह उन तरीकों में असफल होते हैं तो चोरी जैसे अवैध तरीके अपनाते हैं। इसके अतिरिक्त इसका अन्य प्रभाव यह होता है कि निर्धनता को दूर करने के लिए माता-पिता दोनों को व्यवसाय के लिए निकलना पड़ता है, जिससे माता-पिता और बच्चे एक दूसरे से दूर रहते हैं जिससे बच्चों परनियंत्रण ढीला पड़ जाता है। साथ ही ऐसे माता-पिता न अच्छे मकान में रह पाते हैं और न बच्चों को उचित शिक्षा ही दे पाते हैं, इस तरह के बच्चे न तो स्कूल जाते हैं और न खाली समय बिताने के लिए मनोरंजन के स्वस्थ साधन जुटा पाते हैं। उनके लिए रास्ते में खेलना या बाल अपराध करना स्वाभाविक हो जाता है। अध्ययन से पता चलता है कि आधे सें अधिक बाल अपराधी निर्धन परिवारों के सदस्य होते हैं। इस प्रकार निर्धनता के कारण जब मां को प्रतिदिन घर से बाहर रहना पड़ता है तो परिवार का संगठ्न बिगड़ जाता है और बच्चे बर्बाद हो जाते हैं। निर्धनता के कारण छोटे बच्चों को भी नौकरी करना, विशेषकर सड़कों पर वस्तुओं को बेचने का कार्य करना पड़ता है तो उनके नैतिक व शारीरिक स्वास्थ्य का पतन हो जाता है।

बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में वंशगत विशेषतायें व वातावरण जिसमें वह पलता है, दोनों ही प्रभाव डालते हैं, तथपित बाह्य वातावरण अर्थात् परिवार का विशिष्ट महत्व है क्योंकि वंशानुगत से प्राप्त गुणों का परिमार्जन व परिष्करण परिवार में ही होताहै। जैसा कि निम्न पंक्तियों में कहा गया है-

"Home is the place the child comes back to with his experiences. It is the lair to which he retreats to pick his wounds; the stage to which he returns to parade the glory of his achievements the refuge he tends in which to brood over his ill treatment real or fancied. Home in other words in the place to which one brings the every day run of social experience to sift to evaluate to appraise, to understand or to be twisted, to fester, to be megfnified or ignored as the case may be."[6]

परिवार में ही बालक का पालन-पोषण होता है, परिवार के सदस्यों के साथ वह अन्तःक्रियायें करता है। इन अन्तःक्रियाओं के फलस्वरूप ही बालक का

शारीरिक-मानसिक, व संवेगात्मक विकास होता है। बच्चे के प्रारम्भिक वर्षों में परिवार में ही बच्चे की विभिन्न अभिवृत्तियों, अभियोग्यताओं, जीवन शैली, व्यवहार व आचरण के मापदण्डों तथा अन्य व्यक्तित्व गुणों जैसे सृजनात्मक स्वतन्त्र विचारशीलता आदि के विकास का अवसर मिलता है।

''**बैरन व चार्ल्स**'' का विचार था कि बालक के व्यक्तित्व पर घर के भावात्मक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

परिवार से तात्पर्य बच्चों व उनके माता-पिता तथा भाई-बहनों से है।

''**ब्लैचर**'' ने भी परिवार की व्याख्या करते हुए बताया कि **''परिवार से हम सम्बन्धों की वह व्यवस्था समझते हैं जो माता-पिता व उनकी सन्तानों के मध्य पायी जाती हैं। माता-पिता के अपने बच्चों के साथ सम्बन्ध उनके व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। जिन परिवारों के माता-पिता अपने बच्चों के लिए अति चिन्तित रहते हैं तथा अति नियंत्रण रखते हैं, ऐसे परिवारों के बच्चे सांवेगिक दृष्टि से अपने को असुरक्षित समझते हैं तथा समाज में असमायोजित हो जाते हैं।''**

"Teagarden said, "All manner of behaviour deviation can be and often, accounted by the subtelies of relationship."

यदि माता-पिता के अपने बच्चे के साथ उचित सम्बन्ध नहीं हैं तो बच्चे न्यूरोटिक व अपराधी बन जाते हैं जबकि पारिवारिक उचित सम्बन्ध बच्चों में स्वस्थ स्वबोध का विकास करते हैं तथा बच्चा व्यक्तिगत व सामाजिक रूप से समायोजित होता है।

"Mendelbaum (1964)" ने बताया कि **परिवार एक ऐसी पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है जिसमें बालक अपने व्यवहार के लिए आधार व निरन्तरता प्रदान करता है।**

''**पैक**'' ने भी उपर्युक्त विचारधारा का समर्थन करते हुए कहा है-

"Each Adoloscence is just the kind of person that would be predicated from the knowledge of the way his parents treated him, indeed it seems reasonable to say that, to an almost starting degree each child learns to feel and act psychologically and morally as just the kind of person his father and mother have been in their relationship with him."[7]

"Mandelbaum" ने ही बताया कि माता–पिता की अभिवृत्तियां बालक की शैशवावस्था से ही प्रभावित करती हैं। यदि एक शिशु विश्वास व स्नेह प्राप्त करता है तो उसमें आत्म स्वीकृति व सुरक्षा तथा सृजनात्मकता की भावना विकसित हो जाती है। माता–पिता के अपने बच्चों के साथ सम्बन्ध विभिन्न रूपों में दिखाई देते हैं। तथा इन सम्बन्धों की विभिन्नताओं से ही बच्चे के व्यक्तित्व व व्यवहार में विभिन्नतायें परिलक्षित होती है, जैसे– अतिरिक्त सुरक्षात्मक अभिवृत्ति में माता–पिता अपने बच्चों की प्रत्येक शारीरिक व मानसिक क्रियाओं के प्रति सजग रहते हैं। फलतः ऐसे सुरक्षात्मक वातावरा में पले बच्चे पूर्णतः आश्रित हो जाते हैं, उनमें विचारों को प्रेषित करने व उत्तरदायित्व को ग्रहण करने की क्षमता नहीं रहती है। वे सावैंगिक रूप से अत्यन्त अस्थिर तथा हीन भावनाओं से ग्रसित हो जाते हैं। इस प्रकार ऐसे बच्चों के किसी भी प्रकार के ज्ञानात्मक कौशल का विकास नहीं होता है।

इसके विपरीत यदि माता–पिता अपने बच्चों को अत्यधिक स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं उनके साथ अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं, उनके लिए अधिक धन व शक्ति का व्यय करते हैं, बच्चे की प्रत्येक रूचि को प्रोत्साहन देते हैं, कम से कम नियन्त्रण रखते हैं, ऐसे परिवारों का वातावरण स्वस्थ व प्रेमपूर्ण होता है। बच्चों को अपनी रूचियों तथा व्यक्तित्व की समस्त क्षमताओं को विकसित करने का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है।

तृतीय प्रकार के मां बाप ऐसे होते हैं, जो अपने बच्चों पर कोई ध्यान नहीं देते हैं, दूसरे शब्दों में वे अपने बच्चों से अलगाव का सम्बन्ध रखते हैं, उन्हें व उनके विचारों को कोई मान्यता नहीं देते हैं, ऐसे माता–पिता अपने आप में मस्त रहते हैं। अतः इन परिवारों के बच्चे क्रूर व अपराधी हो जाते हैं, उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का ह्रास हो जाता है, उनमें आत्मविश्वास का अभाव होता है, प्रेम व सहयोग के अभाव में उनके बौद्धिक, व ज्ञानात्मक विकास के रास्ते अवरूद्ध हो जाते हैं, फलतः सृजनात्मकता भी दमित हो जाती हैं।

कुछ माता–पिता अपने बच्चों के प्रति स्वीकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, उन बच्चों के माता–पिता उनके प्रति विशेष प्रेम व रूचि प्रदर्शित करते हैं, तथा बच्चों को

परिवार का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं, वे चाहते हैं कि उनके वच्चों के व्यक्तित्व के गुणों का अधिकतम विकास हो, अतः वे उन्हें अत्यधिक अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं, ऐसे वातावरण में बच्चों का अनुकूल व अपेक्षित विकास होता है। उनमें नई-नई रूचियों का विकास होता है तथा व्यक्तित्व के प्रमुख गुण सृजनशीलता के विकास का पूर्ण अवसर मिलता है।

बाल्डविन (1945)[8] ने भी अध्ययन करने पर पाया कि उन घरों के बच्चे जिनका वातावरण उत्साही तथा लोकतंत्रात्मक था, वे बच्चे अधिक क्रियाशील, सामाजिक कार्यो में भाग लेने वाले थे, विशेष रूप से उनकी मौलिकता उच्च थी, वे योजना बनाने वाले तथा उनमें बौद्धिक उत्साह व कल्पना शक्ति पाई गई। जबकि वे बच्चे जो कठोर नियंत्रण वाले परिवारों से संबंधित थे, उनका व्यवहार करने का ढंग तो उत्तम था परन्तु उनमें मौलिकता, सृजनात्मक उत्तेजना का अभाव पाया गया।

जिन बच्चों के प्रति माता-पिता का दृष्टिकोण लगाव वाला तथा स्वीकारात्मक होताहै, वे बच्चे अधिक चिन्तनशील व मौलिक चिन्तन वाले होते हैं, क्योंकि उन्हें नये अनुभव करने के लिए माता-पिता का प्रोत्साहन व स्वतन्त्र वातावरण मिलता है। जबकि वे बच्चे जिनके माता-पिता अपने बच्चों पर अधिक नियंत्रण रखते हैं तथा उन पर प्रभाव डालते हैं, वे बच्चे कम सृजनशील होते हैं, व उनमें मौलिकता का अभाव होता है क्योंकि अधिक नियंत्रण वाले परिवारों में बच्चे, विचारों की अभिव्यक्ति नहीं कर पाते हैं तथा न ही उन्हें अपने विचारों को प्रकट करने की स्वतन्त्रता होती है। अतः उनके व्यक्तित्व का विकास कुण्ठित हो जाता है, वे परावलम्बी हो जाते हैं, चिन्तन क्षमता का ह्रास हो जाता है।

''परिवार वास्तविक शिल्पकार होता है, वह व्यक्तित्व की मौलिक योजना का निर्माण करता है।''

"The family remains the real architect it lays down the basic plan of the personality."[9]

रेमण्ड के अनुसार- ''दो बालक, क्यों न एक ही विद्यालय में पढ़ते हों, एक ही समान शिक्षकों से प्रभावित होते हों, एक-सा ही अध्ययन करते हों, फिर भी वे अपने सामान्य ज्ञान,

कृतियों, भाषण व्यवहार एवं नैतिकता में अपने घरों के कारण जहां से वे आते हैं, पूर्णतया भिन्न होते हैं।''[10]

बालक के व्यक्तित्व उनकी आकांक्षा, बुद्धि समायोजन, नैतिक मूल्यों आदि का निर्धारण परिवार द्वारा ही होता है। मनुष्य के व्यक्तित्व विकास में पारिवारिक जीवन के महत्व को किसी भी धन से कम नहीं समझा जा सकता है। बालक कुछ विशेषताएं और योग्यताएं तो वंशानुक्रम से ही लेकर आता है, किन्तु ये विशेषताएं भी पारिवारिक तथ्यों से संबंधित होती है।

वंश सम्बन्धी विशेषताएं भी परिवार द्वारा निर्धारित होती हैं। दूसरी ओर उसकी मनोवैज्ञानिक, शिक्षात्मक, संवेगात्मक तथा और भी सभी प्रकार की आवश्यकताएं परिवार के पर्यावरण पर निर्भर होती है। यदि परिवार का योगदान किसी भी रूप में कम हो जाता है, तो व्यक्ति के व्यक्तितव का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

परिवार समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है। उसका समाज से पृथक कोई स्थान नहीं होता। पारिवारिक विशेषतायें समाज से ही निर्धारित होती हैं। व्यक्ति तथा समाज में तालमेल की कड़ी परिवार को माना जा सकता है। इस दृष्टि से समाज के लिए परिवार का महत्व बहुत बढ़ जाता है। क्योंकि समाज मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य, परिवार तथा व्यक्तियों पर ही आधारित होता है।

देश की वर्तमान जनसंख्या वृद्धि की समस्या तथा लघु परिवार की मांग एवं प्रयुक्त नारों 'दो या तीन बच्चे होते हैं घर में अच्छे', 'छोटा परिवार सुखी परिवार', 'खुशहाली का राज छोटा परिवार' आदि ने शोधकर्त्री के मस्तिष्क में आज की वर्तमान, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में बालक के सर्वागीण विकास पर परिवार के आकार का क्या प्रभाव पड़ता है, जिज्ञासा उत्पन्न हुई। यद्यपि वास्तवकिता यह है कि आज परिवार के आकार द्वारा ही परिवार की आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, शैक्षिक आदि स्थितियों का निर्धारण होता है जिसका प्रभाव बालक के अन्य सदस्यों के बीच रहकर अनुकरण, सहानुभूति द्वारा उचित अनुचित, अच्छे बुरे, सत्य-असत्य, त्याग-परोपकार, प्रेमश्रद्धा, विनम्रता आदि चारित्रिक गुणों को सीख लेता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं आकार, बालक के विकास को प्रभावित करने वाले शक्तिशाली तत्व हैं।

परिवार ही वह स्थल है जहां व्यक्ति के व्यक्तित्व की उस किरणों का प्रस्फुटन होता है, यह वह आधारशिला है, जिस पर सामाजिक जीवन का विशाल भवन अवलम्बित हो अपनी कीर्ति-पताका से धरा को दैदीप्यमान करने का सौभाग्य अर्जित करता है।

परिवार द्वारा ही व्यक्तित्व निर्माणक तत्वों का आरम्भ और विकास होता है, जो सामान्यतः परिवार के आकार तथा माता-पिता के परस्पर सम्बन्धों, सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है कि वह बालक को तदनुसार उसके विकास में किस प्रकार तथा कितनी मात्रा में सहायता प्रदान करता है।

यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि बालक के व्यक्तिगत मूल्य, सृजनात्मक एवं शैक्षिक प्रगति पर परिवार के आकार एवं माता-पिता के परस्पर सम्बन्धों का प्रभाव पड़ता है। जब परिवार में बच्चों की संख्या अधिक होती है तब एक नवजात शिशु में भाषा तथा मानसिक योग्यताओं का विकास अन्य बालकों की उपस्थिति के कारण अपेक्षाकृत शीघ्र सम्पन्न होता है, परन्तु जब ऐसे परिवार में सुविधाओं का अभाव होता है तब बालक पर इस प्रकार के पारिवारिक वातावरण का ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है लघु परिवार में बच्चों की शिक्षा, रहन-सहन का स्तर, बालक का विकास आदि बृहद् परिवर की तुलना में अधिक अच्छा होगा, इसका कारण यह है कि लघु परिवारों में बच्चों का पालन पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अभिभावक-बालक, सम्बन्ध सामान्यतः मधुर रहते हैं तथा बच्चों को अधिक सुविधाएं मिलने की सम्भावना होती हैं। इन परिवारों में बहुधा प्रजातान्त्रिक वातावरण होता है तथा उचित प्रकार से बच्चों के व्यक्तित्व का विकास होता है। जबकि बृहद् परिवारों में सभी बच्चों को समान तथा अधिक सुविधाएं मिलने की सम्भावना नहीं होती, उनकी आवश्यकताएं पूर्ण नहीं हो पातीं जिससे बच्चे नैराश्य व कुण्ठा का अनुभव करते हैं तथा भली भांति समायोजित नहीं हो पाते जिसके फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व का उचित विकास सम्भव नहीं हो पाता और उनके शैक्षिक प्रगति में भी पिछड़ जाने की सम्भावना रहती है।

विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या ने आदर्श और वांछित परिवार के आकार के प्रति ध्यान आकर्षित किया तथा इसे एक प्रभावकारी एवं परतन्त्र चर स्वीकार किया, जिसके परिणामस्वरूप वीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में परिवार के आकार एवं जन्मक्रम के प्रति अनुसंधान रूचि जाग्रत हुई तथा इनका बालक के विकास पर प्रभाव देखा गया।

हाकर, वर्चिनल एण्ड गार्डनर (1958) ने यह अध्ययन किया कि बृहद परिवारों की तुलना में लघु परिवार के बच्चों के माता-पिता एवं भाई बहिनों के साथ परस्पर मधुर सम्बन्ध पाए जाते हैं।[11]

डाउबन एण्ड एडलसन (1966) ने यह ज्ञात किया कि लघु परिवारों की तुलना में बृहद परिवारों के किशोर बालकों में परस्पर घनिष्ठता का अभाव होता है और अपने माता-पिता के साथ कम समय व्यतीत करते हैं।[12]

ब्लड (1972) के प्राप्त परिणामों से यह ज्ञात होता है कि बृहद परिवार में माता-पिता एवं बालकों के परस्पर सम्बन्धों में दुर्बलता, प्रेम-स्नेह में कमी तथा आर्थिक एवं भौतिक साधनों का अभाव होता है।[13]

डिकेमायर डी.सी. का विचार है कि छोटे पविारों में बच्चों को अधिक लाड़ प्यार मिलने के साथ ही उनकी देखभाल भी अच्छी होती है। इस अवस्था में उन में सद्‌गुणों के विकसित होने की तथा सामान्य सामाजिक विकास होने की सम्भावना अधिक होती है। बड़े परिवार में बच्चों का लाड़ प्यार और देखभाल सामान्यतः अधिक नहीं हो पाती है, परन्तु उन्हें अन्य बच्चों के व्यवहार के अनुकरण के अवसर अधिक प्राप्त हो जाते हैं। फलस्वरूप उनका सामाजिक विकास शीघ्र तो होता है परन्तु उन बच्चों के अनुरूप होता है जिसके व्यवहार का वे अनुकरण करते हैं।[14]

परिवार का महत्व बताते हुए **गोल्डस्टीन** ने कहा है- परिवार वह झूला है जिसमें भविष्य का जन्म होता है तथा वह शिशु गृह है जिसमें नए गणतन्त्र का निर्माण होता है। परम्परा के द्वारा परिवार का सम्बन्ध भूतकाल से होता है किन्तु सामाजिक उत्तरदायित्वों एवं सामाजिक विश्वास के द्वारा परिवार भविष्य से भी

सम्बन्धित है। जो भी व्यक्ति इस संसार में पदार्पण करता है वह परिवार से आवश्यक रूप से सम्बन्धित होता है।[15]

सार्जरी बावस एण्ड बेलवर्ग (1975) ने यह ज्ञात किया, सामान्यतः लघु परिवार में माता-पिता द्वारा आवश्यकता उपलब्धि सक्रियता एवं बौद्धिकता पर बढ़ा तथा पिता के प्रभुत्व से सम्बन्धित है, उनके प्राप्त परिणामों से यह भी ज्ञात होता है कि जैसे-जैसे परिवार का आकार बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे अन्तः क्रिया में कमी आती है। बृहद् परिवार एवं उसका उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर है तो अन्तःक्रिया अधिक उत्तम होती है जबकि इसके विपरीत लघु परिवार में निम्न स्तर हो पर अन्तःक्रिया में कमी आ जाती है।

हाल्टमैन एण्ड मूरे (1965) के प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है कि विभिन्न आकार के परिवारों द्वारा बालक के व्यक्तित्व संगठन एवं व्यवहार के पक्षों में भिन्नता की आशा की जाती है।

हरलाक (1978) ने बताया कि छोटे परिवारों में अभिभावक अपने बालकों के साथ अधिक समय देते हैं, बच्चों को समान और अधिक सुविधायें मिलने की सम्भावना होती है, अतः इस बात की भी अधिक सम्भावना होती है कि अभिभावक बालक सम्बन्ध मधुर रहे, छोटे परिवारों में बहुधा दो या तीन बच्चे होते हैं। इन परिवारों में बहुधा प्रजातांत्रिक वातावरण होता है, अनुशासन भी इन परिवारों में अधिक होता है।

हरलाक (1978) का विचार है-

"Even though children from small and medium sized homes are often piegued with sibling rivailries and jealousies, parental over protectiveness, and suspicious of parental favouritism they generally make better adjustment to life and are happier than children from large families."[16]

उक्त अध्ययनों द्वारा ज्ञात होता है कि परिवार के आकार का बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। किशोरावस्था प्रत्येक दृष्टि से परिवर्तन का काल होता

है, अतः उनको स्वयं के व्यक्तित्व सम्बन्धी निहित गुणों की जानकारी देना, निर्देशन की दृष्टि से अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण है जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके।

माता-पिता से सम्बन्ध बालकों के व्यक्तिगत मूल्यों के निर्धारण में सहायक होते हैं। क्योंकि मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति के मूल्य उसकी प्रेरणा से स्रोत माने जाते हैं। किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत मूल्यों के द्वारा ही हम उसके व्यवहार को जान सकते हैं। किसी तथ्य या घटना के सम्बन्ध में माता-पिता अपना किस प्रकार का दृष्टिकोण रखते हैं, इसका प्रभाव भी बालक के सोचने विचारने के ढंग एवं मूल्यों पर पड़ता है। यद्यपि माता-पिता के मूल्य उनके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर से भी प्रभावित होते हैं, लेकिन भारतीय परिस्थिति में तो मूल्य विहीन परिवार के सामाजिक आर्थिक स्तर का कोई महत्व नहीं है।

एन.ई.रो. तथा कुन्डन के शोधों से यह स्पष्ट है कि परिवार के मनोवैज्ञानिक वातावरण का छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।

मानव जीवन में मूल्यों का विशिष्ट महत्व है जो उसके व्यक्तित्व, उपलब्धि, रूचि, अभिवृत्ति आदि को प्रभावित करते हैं एवं उन्हीं के अनुरूप वह अपने व्यवहार को प्रस्तुत करता है।

मूल्यों का विकास सामाजिक पृष्ठभूमि में सामाजिक विकास के प्रभाव से होता है। अतः जिस प्रकार के मूल्य एवं दृष्टिकोण प्रस्तुत किए जायेंगे उसका प्रभाव सृजनात्मकता, उपलब्धि, सामाजिक व्यवहार आदि पर भी पड़ेगा। विभिन्न योग्यताओं वाले व्यक्तियों के मूल्य एवं मूल्य क्रम मान्यता भी विभिन्न होती हैं जिसके आधार पर अलग-अलग कार्य क्षेत्र का चयन करते हैं। यदि मूल्य जीवन दर्शन के अविभाज्य अंग हैं तो मूल्यों के विभेदीकरण के आधार पर व्यक्तिगत विभिन्नता में विद्यमान होती हैं।

दुर्खीम ने अपनी पुस्तक **'समाजशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र'** के अन्तर्गत मूल्य निर्धारण तथा सत्यता निर्धारण के अन्तर्गत लिखा है कि 'नैतिक मूल्य ही नहीं बल्कि समूह द्वारा प्रदान किए गए प्रतिमानों, आदर्शो या वस्तुओं की प्राथमिकता भी सामाजिक

मूल्य का रूप ले लेती हैं। कुछ व्यक्तिगत मूल्य भी होते हैं जिनका जन्म, अनुभव के विकास के साथ ही साथ होता है। क्योंकि अनुभव के ही आधार पर व्यक्ति कुछ सामान्य सिद्धान्तों का निर्माण करता है, जो धीरे-धीरे जीवनदर्शन का रूप ले लेते हैं, तथा इन्हें भी मूल्यों की संज्ञा देते हैं। सामाजिक मूल्य, समाज के माध्यम से स्थापित प्राथमिकताओं के संस्तरण की अभिव्यक्ति है जिसमें व्यक्तिगत पसन्द व नापसन्द का कोई योगदान नहीं है।

मूल्य मानव व्यवहार के प्रेरणा के स्रोत माने जाते हैं, उन्हीं के आधार पर व्यक्ति अपने उद्देश्यों का निर्धारण करता है। अतः यह जीवन दर्शन के अविभाज्य अंग हैं। विभिन्न व्यक्तियों के व्यवहार में भिन्नता का कारण मूल्यों का चयन करना होता है। उसके चयन करने के आधारों का निर्धारण उसके मूल्यों द्वारा होता है। मानव के मूल्यों का निर्धारण उसके सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर होता है।

मूल्यों का मानव के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। यह मनुष्य के जीवन के सब कार्यों को प्रभावित करते हैं। **बाहम (Bahm)** ने मूल्यों की उपयोगिता बताते हुए कहा है–

"Experience is provided with values. Not only do all pleasures and pains, enjoyments and miseries, appreciations and dislikes, involves values but also all evaluation or judgements of values, entail values. Most standards for judging are value standards........life in all its phases, then, is suffused with value. We can not understand life until we understand value."[16]

बूनर और गुडमैन ने भी मूल्यों को व्यवहार का एक आवश्यक कारक माना है अर्थात् मनुष्य के व्यवहार पर उसके मूल्यों का बहुत प्रभाव पड़ता है। वे कहते हैं–

"The value system of the individual is also a potent factor in determining his perception of a situation. It influences the setting of goals and the selective response of the person to the situation."[17]

मूल्यों का जीवन में जो कार्य है, उसी के आधार पर उसकी उपयोगिता का अनुमान लगाया जा सकता है, **स्मिथ, स्टेनले और शोर (Smith, Stanley and Shores)** ने मूल्यों के जीवन में पांच कार्य बताए हैं, उन्होंने कहा है–

"Value system supplies the individual with a sense of purpose and direction, gives the troup a common orientation and supplies the basis of individual action and of unified collective action, serves as the basis for judging the behaviour of individuals, enables the individuals to know what expect of others, as well as, how to conduct himself, and focuses the sense of right and wrong, fair and four, desirable and undersireable, moral and immoral."[18]

मनुष्य के जीवन में मूल्यों का क्या कार्य है, उसके बारे में **रश (Ruch)[19], बैल (Bell)[20], लिन्डजे (Lindzey)[21], ब्रूबेकर (Brubacker)[22], ब्राउडी (Broudy)[23], फेनिक्स (Phenix)[24], लेहनर (Lehner)[25]** और , **कुबे (Kube)[26]** ने भी यह विचार प्रस्तुत किए हैं।

मूल्य जीवन भर एक से नहीं रहते हैं परन्तु समय व परिस्थिति के अनुसार यह बदलते रहते हैं। मूल्यों में यह परिवर्तन कई कारणों से होता है। जैसे कि **थाम्पसन (Thompson)** ने कहा है-

"Thompson has attributed, this change in values to culture. He says "Change in culture, most especially the rapid change of the recent past, throws values in conflict ultimately this conflict is reconciled and brings change in the value system."[27]

मूल्यों के परिवर्तन के बारे में **विलर्स (Willers)** ने कहा है-

"While in the past a man growing up in a society could expect that its public value system would remain largely unchanged, in his life time, no such assumption is warranted today, except perhabs in the most isolated of pre-technological communities."[28]

शिबे (Schiebe) ने मूल्यों में परिवर्तन का कारण व्यक्तिगत और इकोलोजिकल दोनों को बताया, उन्होंने कहा है-

"Ecological variations are not the only source of complications in the generalizability of values, personal (internal) variations over time is another.... Values are contextual occurrences in that they depend upon a variety of internal conditions external stimulus configuratures and response options."[29]

रोजर्स (Rogers) ने कहा है-

(Quoted by Hall and Lindzey)

"It is very important for whole some adjustment to maintain a continuous examiantion of values."[30]

उपर्युक्त परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि मूल्य परिवर्तित होते रहते हैं। मूल्यों में यह परिवर्तन बहुत धीरे-धीरे होता है और समय लेता है। भारत और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में तो मूल्य बहुत समय तक परिवर्तित नहीं होते हैं।

दूसरा विश्वास मूल्यों के बारे में यह है कि ये मनुष्य और उसके वातावरण के साथ अन्तःक्रिया के फलस्वरूप बनते हैं।

सेलर और अलेक्जेंडर ने विचार प्रस्तुत किये हैं-

"Sayler and Alexander put it as the family, the social group, the peer group associates, persons of prestige to the individual a model figure, the teacher as factors in past experiences all contribute to the formation of value system."[31]

"Geiger says, Values are out comes of human choices among competing human interests."[32]

परन्तु कुछ विचारकों का कहना है कि मूल्यों के निर्माण में समाज और संस्कृति दोनों ही का प्रभाव पड़ता है। जैसा कि-

Broudy says, "Value norms are setup by the prevailing culture."[33]

Bell pts it slightly differently He says "The people who perform the same activities or who occupy the same prestige level in a stratification system evolve a distinctive setup of value orientation."

हमारे देश में शिक्षकों, जो कि शिक्षा की धुरी है, की अवहेलना की जा रही है। शिक्षा के गुणात्मक स्तर का सुधार अनेकानेक तत्वों से प्रभावित होता है। लेकिन उसमें शिक्षक का योग्यता व चरित्र ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। वास्तव में शिक्षक ही राष्ट्र के भाग्य निर्माता हैं। शिक्षक के विचारों, आविष्कारों एवं खोजों पर ही राष्ट्रीय प्रगति एवं कल्याण निर्भर है।

आज शिक्षा की धारणा बदल रही है। विद्यालय का कार्य केवल ज्ञान के संगठित भण्डार के बने बनाए मूल्यों का स्थानान्तरण करना ही नहीं है, बल्कि छात्र को इस योग्य बनाना है कि वे स्वयं अपने मूल्यों का निर्माण कर सकें। अपनी समस्याओं के नवीन, असाधारण एवं मौलिक हल खोज सकें। अपंनी जन्मजात प्रतिमाओं का विकास कर सकें। अर्थात् बालकों की रचनात्मक प्रतिमाओं का विकास आज शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य है।

एक सृजनशील अध्यापक अज्ञान के अंधकूप में प्रवेश कर अपने आपको ज्ञान रूपी रश्मियों से आलोकित करने के लिए प्रबल जिज्ञासु होता है। वह स्वतन्त्र व मौलिक चिन्तन का अभ्यासी होता है। उसके हृदय में कल्पनारूपी सागर सदैव हिलोरे लेता है। ऐसे अध्यापक में ही बच्चों के सृजनात्मकता रुपी पौधे को पल्लवित व पुष्पित करने की उत्कण्ठा होती है। शिक्षक को राष्ट्रीय पुनर्निमाण में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

आज विद्यालयों में प्रतिभावों के विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है, उनका कहना है कि छात्रों में प्रतिभा का अभाव है। लेकिन यह मत गलत है, प्रतिभाशाली छात्र प्रत्येक देश के प्रत्येक स्कूल में, प्रत्येक स्तर पर पाये जाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि देश के प्रत्येक कोने से उनका चयन किया जाय।

प्रश्न उठता है कि प्रतिभा सम्पन्न कौन है?

इस विषय को आधारभूत मान्यता थी कि जो छात्र परीक्षाओं में अधिकतम अंक प्राप्त करते हैं, वही छात्र प्रतिभा सम्पन्न हैं। उन्हीं को उच्च शिक्षा, उच्च नौकरी व विभिन्न राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए चयन किया जाता है लेकिन 1904 में कुछ बुद्धि परीक्षणों का विकास हुआ जिसके आधार पर यह कहा जाने लगा कि जो छात्र अधिक बुद्धि सम्पन्न हैं, वहीं प्रतिभाशाली हैं। **टरमन, बैन्टले, हालिंग बर्थ** ने कहा जिसकी बुद्धि लब्धि 110 से लेकर 160 के बीच में है, वही छात्र प्रतिभा सम्पन्न है।

इसके अतिरिक्त 1950 के पश्चात् **गिल्फर्ड** ने भी कहा कि परम्परागत बुद्धि परीक्षणों के द्वारा केवल ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, समस्या एवं एक बिन्दु पर केन्द्रित

विचारधारा के भी केवल एक चौथाई भाग का मापन होता है, जबकि हमारी बहुत सी विभिन्न बिन्दु पर केन्द्रित विचारधाराओं एवं सृजनात्मक प्रतिभाओं का मापन इन परीक्षणों के द्वारा नहीं हो पाता है। इसीलिए आज प्रतिभाशाली छात्रों की परिभाषा में बुद्धि के साथ-साथ सृजनात्मक प्रतिभा एक नया शब्द जोड़ दिया गया है।

आज उसी बालक को प्रतिभाशाली कहा जाता है। जिसमें उच्च बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ सृजनात्मक योग्यता होती है जो कि विज्ञान, कला, संगीत, नाटक आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हैं। इसीलिए आज प्रतिभाशाली छात्रों का चयन करते समय बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ सृजनात्मक योग्यता पर भी ध्यान दिया जाता है। कुछ छात्र परीक्षा में कम अंक प्राप्त करते हैं। लेकिन वे विभिन्न प्रकार के खेलों, कलाओं तथा संगीत, विज्ञान आदि में विशेष योग्यताओं का प्रदर्शन करते हैं। ऐसे छात्रों पर विद्यालयों में कोई ध्यान नहीं दिया जाता, केवल उनकी विद्यालय उपलब्धि ही प्रत्येक प्रकार की उन्नति का आधार मानी जाती है तथा सृजनात्मक योग्यता एवं विद्यालय उपलब्धि में कोई विशेष सहसम्बन्ध है? क्या उच्च उपलब्धि वाले छात्र भी उच्च सृजनात्मक, प्रतिभा सम्पन्न होते हैं? यह प्रश्न उठता है।

आज स्कूलों और महाविद्यालयों पर बहुत बड़ा दोष लगाया जाता है,उनके द्वारा सृजनात्मक चिन्तन का हनन किया जा रहा है। पुस्तकीय ज्ञान दिया जाता है, शिक्षक चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी परम्परावादी, रूढ़िवादी व सिद्धान्तवादी ही रहें क्योंकि वे छात्रों द्वारा समस्याओं के असाधारण हल को पसन्द नहीं करते हैं। छात्रों को स्वयं अपने आप सोचे के नये व मौलिक विचार प्रस्तुत करने के अवसर प्रदान नहीं किए जाते हैं, वे उन्हें पिटे पिटाये मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करते हैं। यदि कुछ छात्र नवीन ढंग से सोचते हैं, नवीन रूप से समस्या का समाधान करते हैं, अपनी पुस्तकों के विचारों की आलोचना करते हैं, शिक्षक के तार्किक प्रश्न पूछते हैं तो शिक्षक के द्वारा उनकी आलोचना की जाती हैं। दण्ड दिया जाता है। अतः बच्चे सिद्धान्तवादी विचार करने के लिए बाध्य हो जाते हैं, वाद-विवाद प्रतियोगिता निबन्ध, लेख आदि प्रतियोगिताओं में भी केवल भाषा को ही प्राथमिकता दी जाती है जिससे सृजनात्मक शक्तियां पूर्णतः दमित हो रही हैं। अतः आज हम विचारधारा में परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

हमारे विद्यालयों में स्मरण शक्ति के विकास पर ही अधिक जोर दिया जाता है। परीक्षा पद्धति भी स्मरण करने की योग्यता की ही परीक्षा करती है। उसमें के चिन्तन, तर्क, सृजनात्मकता के लिए कोई स्थान नहीं है, इसलिए सृजनात्मकता धीरे-धीरे लोप होती जा रही है।

आज हमारे देश में अनगिनत समस्याएं हैं। इनका समाधान करने के लिए ही हमें ऐसे बुद्धिमान व मौलिक चिन्तकों की आवश्यकता है जो हमारे देश की अनगिनत समस्याओं के समाधान के लिए उपयोगी, नवीन व महत्वपूर्ण हल प्रस्तुत करे। ये प्रशिक्षण किसके द्वारा दिया जाए? सृजनात्मक प्रतिभा को कौन विकसित करेगा? स्पष्ट है यह कर्तव्य विद्यालयों का है। इसलिए आज ऐसी शिक्षण-विधियों की आवश्यकता है जो कि विद्यार्थी को अपने विषय में सोचने के लिए उत्तेजित करेगी। उन्हें शिक्षक व किताबों पर ही आश्रित न रहकर स्वयं समस्या समाधान के लिए प्रेरित करेगी।

प्रत्येक बच्चे में जितनी भी योग्यतायें हैं, उसके विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाएं, क्योंकि हमारे देश के संविधान में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं, रूचियों व सामर्थ्य के पूर्ण विकास का अधिकार है।[34]

भारतीय संविधान ने शैक्षिक अवसरों की समानता पर जोर दिया है जिसका अर्थ एक समान शैक्षिक व्यवस्था से नहीं है बल्कि इसका अर्थ है प्रत्येक बच्चे को जितनी भी उनमें योग्यताएं हैं, उनके विकास के पूर्ण अवसर प्रदान करनां।

अतः शिक्षा के प्रत्येक स्तर में बच्चों को उनकी जीवन की पूर्णता व गहराई का ज्ञान कराना अति आवश्यक है, जिससे उनकी प्रतिभाएं विनिष्ट न हो जाएं।

आज का युग वैज्ञानिक उन्नति का युग है, यह उन्नति मनुष्यों के शताब्दियों के सतत् प्रयत्न का परिणाम है। वैज्ञानिकों के क्रियाशील एवं विश्लेषणात्मक चिन्तन मस्तिष्क ने अनेक प्रकार के आविष्कार किए हैं। कार्य करने की नवीन-नवीन विधियां बताई हैं जिसमें आज अमेरिका एवं रूस ने मनुष्यों को (अपोलो एवं ल्यूना) चांद पर पहुंचा कर आश्चर्य चकित कर दिया है। वैज्ञानिक अनुसंधानों ने आज ऐसे यातायात

के साधनों का निर्माण किया है जिससे आज दुनिया बहुत छोटी हो गई है। औद्योगिक मशीनों के आविष्कार से उत्पादन की मात्रा एवं उसके गुणों में काफ्री बृद्धि हुई है। यह सब सृजनात्मक योग्यता का ही परिणाम है। कला के क्षेत्र में भी अनेक कवियों व लेखकों की रचनाएं पढ़ने को मिलती हैं, तो हमें मन्त्र मुग्ध कर देती हैं।

आज का युग जैट युग है, अतः इस युग में जितनी सामाजिक, आर्थिक, विज्ञान, कला, संगीत के क्षेत्र में उन्नति हुई है, वह मनुष्य की सृजनात्मक योग्यता के समुचित विकास व खोज पर निर्भर है। अमेरिकन ऐसोसियेशन आफ गिफ्टेड चिल्ड्रेन ने कहा है कि आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या है सृजनात्मक प्रतिभा का अभाव।

आज प्रजातन्त्र की पुकार है कि हम में से प्रत्येक अपना पूर्ण व उच्चतम विकास करें। प्रजातन्त्र की सुरक्षा के लिए सक्रिय रूप से योगदान दें। इस प्रजातन्त्र की सुरक्षा, वैज्ञानिक, आर्थिक, औद्योगिक हर प्रकार की उन्नति की दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति में छिपी हुई प्रतिभाओं के विकास की परम आवश्यकता है, ताकि हम विश्व के अन्य देशों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें तथा सभ्यता की दौड़ में पीछे न रहें।

"Education should help every individual to be the master and creator of his cultural rogress."[35]

अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा विकास आयोग का कथन है कि शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सांस्कृतिक उन्नति का सृजनकर्ता एवं विशेषज्ञ बनने में सहायता करनी चाहिए। अत्यन्त उपयुक्त हैं।

आयोग ने शिक्षा द्वारा सृजनात्मकता एवं मौलिकता के विकास परं बल देते हुए कहा है।

"The process of transmitting culture should not over whelm the learner with readymade models so that one can mak use of his own gifts and aptitude and personal ."[36]

उक्त कथन में आयोग ने शिक्षा द्वारा शिक्षार्थी के जन्मजात उपहारों, अभियोग्यताओं तथा व्यक्तिगत प्रतिभाओं के विकास पर भी जोर दिया है।

विद्यालय में ऐसे दृश्य प्रायः दिखाई देते हैं जहां प्रतिभाशाली और सृजनात्मक छात्रों को शिक्षक दिशाहीन तथा पथभ्रष्ट कर देते हैं, शिक्षक प्रतिभाशाली छात्रों को समस्याओं का हल करने के बजाय उन्हें आक्रोश तथा हिंसा का निशाना बना देते हैं, और छात्र असन्तुष्ट होकर अपना क्रोध अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षा संस्थाओं एवं राष्ट्रीय सम्पत्ति पर उतारते हैं। इस प्रकार अपनी सृजनात्मक योग्यता को अनुशासन तोड़ने में एवं सामाजिक विद्रोह में व्यय कर देते हैं।

क्या कारण है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर, जगदीशचन्द्र बोस, सी.बी. रमण एवं हरगोविन्द खुराना जैसे लोग जब विदेशों में मान्यता प्राप्त कर लेते हैं, तब हम भी उनको मान्यता देने लगते हैं। लेकिन ऐसा कोई प्रयत्न नहीं किया जाता जिससे हम बहुत से बोस, टैगोर व खुरानाओं को जन्म दे सकें। न जाने कितने बोस व खुराना अज्ञात जीवन जी रहे होंगे, जैसा कि **Gray Elegy** ने कहा है–

"Full many a goin of present ray serene.
The dark unfathomed caves of ocanbear.
Full many a flower born to blush unseen.
And waste its sweetness in the desert air."[37]

हम तेल के कुओं और खनिजों की खानों को ढूंढ़ने में तो अरबों धनराशि व्यय कर रहे हैं। परन्तु देश की जीवित सम्पदा सृजनात्मक प्रतिभा सम्पन्न बालकों की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं, यही कारण है कि प्रतिभाशाली, बुद्धिशील एवं सृजनात्मक छात्र इस रूढ़िवादी शिक्षा पद्धति से असन्तुष्ट होकर निर्देशन के अभाव में कुसमायोजन के दलदल में धंसते जा रहे हैं। जैसा कि **Henry Evring** ने कहा है–

"Originally in ventiveness and imagination are no longer conceived as intelle ctual luxuries of a gifted few. The misconception that creative thinking is a special property of the 'gifted' can have unfortunate consequences in schooling. It can lead to dull confirmity and passivity in learning. Creative thinking flourishes when teachers realize that all children have the capacity for it, indeed creave to do it."[38]

आज के इस वैज्ञानिक युग में विश्व का प्रत्येक राष्ट्र उन्नति की प्रतियोगिता में दौड़ रहा है। और दूसरे राष्ट्रों से आगे निकल जाने का प्रयास कर रहा है। भारत भी इस दौड़ में पीछे नहीं है। आणविक अनुसंधान का क्षेत्र हो या तकनीकी अनुसंधान का, भारी मशीनरी उद्योग हो या विद्युतीय उद्योग हो, भारत ने विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है।

एक प्रजातांत्रिक देश का भविष्य योग्य नागरिकों, नेताओं एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियों पर ही निर्भर करता है। अतः अपने गौरव प्रजातंत्र की रक्षा के लिए, भौतिक सम्पन्नता के लिए व्यक्ति को पूर्णता प्रदान करने के लिए सृजनात्मक चिन्तन के अध्ययन की महती आवश्यकता है।

व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास व व्यक्तिगत का प्रमुख गुण सृजनशीलता का विकास जहां एक ओर माता-पिता व बच्चों के पारिवारिक सम्बन्धों पर निर्भर है, वहीं उस गुण के विकास पर परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। परिवार की सामाजिक स्थिति से तात्पर्य है बच्चों के माता-पिता व भाई-बहिनों की शिक्षा देश व समाज के प्रति सेवायें, उधार व जमा धनराशि, समाज में माता-पिता का स्थान तथा भौतिक साधनों व सुविधाओं से है। उच्च सामाजिक स्थिति वाले परिवारों में बच्चों को सभी शैक्षिक सुविधायें प्राप्त होती हैं, बच्चों की रूचियों व रचनात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करने के लिए, माता-पिता व्यय करने से हिचकते नहीं हैं। उनका सांस्कृतिक वातावरण भी उच्च होता है। अतः स्वभावतः ऐसे बच्चों की प्रतिभायें समय व अवसर पाकर प्रस्फुटित हो जाती हैं, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के सदस्य निरन्तर जीविकोपार्जन की चिन्ता से ही, चिन्तित रहते हैं आय-व्यय के साधन संकुचित होने पर माता-पिता भी अपने बच्चों की इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। अतः बच्चे के व्यक्तित्व का विकास व रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास अवरूद्ध हो जाता है। ऐसे बच्चों को भी यदि विद्यालय में व परिवार में विकास के सुअवसर प्रदान किए जाएं तथा प्रारम्भ से ही उनकी प्रतिभाओं को पहचाना जाए तो निःसन्देह हम अनेकों कलाकार, वैज्ञानिक व कुछ करने में समर्थ प्रतिभा सम्पन्न छात्रों को उचित प्रशिक्षण दे सकेंगे। जैसा कि जे.पी. नायक ने कहा है-

एक ओर हमारे पास ऐसे कार्यक्रम हैं जिन्हें क्रियान्वित करने के लिए व्यक्ति नहीं मिलते, दूसरी ओर हमें आज भी हजारों की संख्या में ऐसे उत्साही व वास्तव में कुछ करने को उत्सुक अजेय विद्यार्थी मिलेंगे, जो उचित अवसरों तथा समर्थन के अभाव में अपनी प्रतिभाओं को कुंठित होता देखकर असन्तुष्ट व अतृप्त दिखाई देते हैं।[39]

वास्तव में सृजनात्मकता व्यक्ति का अत्यन्त महत्वपूर्ण गुण है। इस गुण के निरन्तर विकास पर ही देश का सर्वतोन्मुखी विकास निर्भर है।

Elisca Vivas ने कहा है–

"Society can not be easily and radically changed by the human will according to plan rather it is the creativity with which the member of a society are enxowed that accounts for the internal dynamismof the society."[40]

किसी भी देश की उन्नति प्रमुख दो स्रोतों पर निर्भर करती है, वे शक्तिशाली साधन है–

1. प्राकृतिक साधन।
2. मानवीय साधन।

मानवीय साधन से तात्पर्य उन रचनाशील व कल्पनाशील व्यक्तियों से है जो नित नई खोजें करते रहते हैं तथा प्राकृतिक साधनों के उत्तम उपयोग की ओर प्रेरित रहते हैं। इस प्रकार मानवीय साधन के बिना प्राकृतिक साधन व्यर्थ ही प्रमाणित होंगे। अतः यह आवश्यक है कि मानवीय साधनों को अधिक सक्षम बनाया जाए तथा उनकी रचनात्मक शक्ति को विकसित करने के लिए अधिक सुविधायें प्रदान की जाएं, यद्यपि हमारे देश में प्राकृतिक साधन की कोई कमी नहीं है, परन्तु हम फिर भी आर्थिक रूप से कमजोर हैं तथा दूसरे देशों में ऋणी हैं, इसका कारण है कि हम देश के प्रतिभा सम्पन्न बच्चों को प्रारम्भ से ही पहचान कर उचित प्रशिक्षण देने में असमर्थ हैं।

वर्तमान युग प्रतियोगिता का युग है, इस युग में ऐसे प्रतियोगात्मक मस्तिष्कों अर्थात् सृजनशील व्यक्तियों की आवश्यकता है जो कि वर्तमान ज्ञान और तकनीकी

उन्नति पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकें। यह कार्य तभी हो सकता है जबकि सृजनशील व्यक्तियों को प्रोत्साहित किया जाए।

Torrance के शब्दों में-

"It takes little imagination to recognize that the future of our civilization over very survival depends upon the quality of creative imagination of our next generation."[41]

टोरेन्स का प्रस्तुत कथन कि हमारी सभ्यता का भविष्य तथा अस्तित्व आगामी पीढ़ी की सृजनात्मक कल्पना पर ही निर्भर करता है, अत्यन्त उचित है कि यदि मानव के द्वारा किए गए आविष्कारों, वैज्ञानिक उन्नति को निकाल दिया जाए तो इस विश्व का स्वरूप कितना भिन्न हो जायेगा। जितने भी वैज्ञानिक आविष्कार है, औद्योगिक व आर्थिक उन्नति है, सभी मनुष्य की आन्तरिक सृजनात्मक क्षमता का ही बाह्य प्रकटीकरण है।

हमारे प्रजातांत्रिक देश का नारा है कि प्रत्येक बच्चे के विकास के लिए उसे हर संभव उचित तथा समान अवसर प्रदान किये जाएं।

हैनरीवान ने स्पष्ट करते हुए लिखा है- 'लोकतन्त्र में शिक्षा का उचित आदर्श रचनात्मक आदर्श है, ये नए प्रकार के ऐसे मनुष्यों को निर्माण करने का प्रयास करता हे जो समस्त मानव जाति के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो। किन्तु आज जब हम अपनी विद्यालयी शिक्षा पद्धति पर व पारिवारिक पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि इस महत्वपूर्ण योग्यता के विकास के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया जा रहा है।

सृजनात्मकता को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है-

"Creativity is usually thought of as partaining to the Arts. Actually, originality or creativity, can occur in any kind of activity. Those who show originality and ability to intigrate the elements of a situation into a harmonious whole-whether as a parent, a docotor or a football player are leading creative lives."[42]

सृजनात्मक में विद्यालयी उपलब्धि की सम्भावनायं सदैव ढूंढ़ना निराशाजनक भी हो सकता है। सामान्यतः एक सृजनशील मस्तिष्क को विद्यालयी पाठ्यक्रम की संरचित पूर्व नियोजित, तथा अभिमुख केन्द्रित परिस्थितियों में अधिक रूचि नहीं होने की ही आशंकाएं रह सकती हैं।[43]

यह तथ्य वास्तव में आज के अध्यापकों को यह चुनौती प्रदान करता है कि वे पाठ्यचर्या को रूढ़िवादिता एवं एकरूपता की नीरसता से मुक्त करके उसे सृजनात्मकता के बहुमुखी रसों से प्लावित करें, सृजनात्मकता को विविध रंगों से अभिभूषित करें, शिक्षा के निर्जीव ढांचे में सृजनात्मकता के प्राण फूंक दें तभी वे प्रत्येक विद्यार्थी में, किसी न किसी अंश में निहित सृजनात्मकता को विकास के अवसर प्रदान कर सकेंगे, तभी प्रत्येक छात्र को वैयक्तिक रूप से तुष्टिपूर्ण तथा सामाजिक रूप से प्रभावक जीवन के लिए तैयार कर सकेंगे।

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए यह कहा जा सकता है कि सृजनात्मकता व्यक्ति के व्यक्तित्व का उच्चतम विकास है तथा देश की समाज की, शिक्षा की व व्यक्तिगत उन्नति व नवीनतम समस्याओं के नवीन हल प्राप्त करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

पारिवारिक लगाव का प्रभाव बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है। कुछ माता-पिता बालकों को आवश्यकता से अधिक सुरक्षा प्रदान करते हैं उनको स्वतन्त्र होकर कार्य नहीं करने देते। उनसे उनकी योग्यता से अधिक आशा करने लगते हैं। ऐसे वातावरण में रहने वाले बालकों का विकास अच्छा नहीं होता। वंह संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व होते हैं, उनमें स्वतंत्र चिन्तन, निर्णय लेने की योग्यता तथा आत्मविश्वास का नितान्त अभाव होता है। इस कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न स्तर की होती है।

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक शब्दावली में शैक्षिक उपलब्धि विद्यालय या विद्यालय के बाहर व्यक्तियों के अनेक घटकों की अन्तःक्रिया का परिणाम होती है। इसके अतिरिक्त परिवेश भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विशेष रूप से घर का परिवेश जो बालिकाओं के व्यक्तित्व को ढालने का प्रथम आधार होता है। इस प्रकार शैक्षिक

उपलब्धि में बहुत से कारक प्रभाव डालते हैं जिनमें व्यक्तिगत मूल्य, पारिवारिक लगाव, सृजनात्मकता आदि आते हैं।

भारतवर्ष जैसे विकासशील देश में जहां शिक्षा के शैक्षिक अवसरों की समानता पर सरकार अत्यधिक जोर दे रही है वहां अधिकांश जनता निर्धन व आवश्यकता ग्रस्त है। जहां सामान्य रूप से सामाजिक-आर्थिक स्तर गिरा हुआ है, किसी भी कक्षा का स्वरूप एक प्रश्न सा बनकर सामने आता है। कुछ अंग्रेजी माध्यम के या कुछ अन्य अच्छी संस्थाओं को छोड़कर अधिकतर संस्थाओं में बालक काफी गरीब परिवारों से आते हैं। धनाभाव के कारण इन बालकों को उचित शैक्षिक सुविधाएं नहीं मिल पातीं तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न हो जाती है। अशिक्षित माता-पिता और समयाभाव, बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर काफी प्रभाव डालते हैं। ऐसे परिवारों में शैक्षिक वातावरण का अभाव रहता है। जिन परिवारों में माता-पिता शिक्षित होते हैं, वहां सामान्यतः बालकों के लिए सभी शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध होती हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः उच्च होती है।

उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि परिवार के आकार का बालक के व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। किशोरावस्था प्रत्येक दृष्टि से परिवर्तन का काल होता है अतः उनको स्वयं के व्यक्तित्व सम्बन्धी निहित गुणों की जानकारी देना निर्देशन की दृष्टि से अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण है जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। अतः शोधकर्त्री ने इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत समस्या का चयन किया।

समस्या का कथन :

जनपद फिरोजाबाद के लघु एवं वृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या :

सामाजिक-आर्थिक शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है, समय-समय पर इसकी विभिन्न परिभाषायें दी गई हैं।

सामाजिक आर्थिक स्तर :

सामाजिक-आर्थिक स्तर को विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न रूपों में परिभाषित किया गया है।

कैप्टिन के अनुसार :

सामाजिक-आर्थिक स्थिति, वह स्थिति है जिसमें एक परिवार का सदस्य सांस्कृतिक अधिकारों में प्रचलित औसत स्तर तथा समुदाय की सामूहिक प्रतिक्रियाओं में भाग लेने के सन्दर्भ में प्राप्त करता है, वहीं उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति है।[44]

वैल्यमैन के अनुसार :

सामाजिक-आर्थिक स्थिति बालक के वातावरण का एक माप बताया गया है जिसका प्रभाव अन्य कारकों की अपेक्षा बालक के व्यक्तित्व पर विस्तृत रूप से पड़ता है। मुख्यतः यह स्तर पिता का व्यवहार, आय, एवं परिवार के सांस्कृतिक स्तर को व्यक्त करता है।[45]

कुप्पू स्वामी के अनुसार :

सामाजिक-आर्थिक स्तर तीन तथ्यों को प्राथमिकता प्रदान करता है, माता-पिता का व्यवसाय, माता-पिता की आय, माता-पिता की शिक्षा आदि। इन्हीं तीन तथ्यों के आधार पर परिवार का स्तर उच्च एवं निम्न रहता है।[46]

एस जलोटा, आर.एम. पाण्डे, डी कपूर एवं आर.एन. सिंह के अनुसार :

सामाजिक-आर्थिक स्तर को निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर बताया गया है-

1. पिता या संरक्षक का व्यवसाय।
2. पिता या संरक्षक और भाई बहिनों की शिक्षा।
3. परिवार की आय, घर का आकार, गृह उपकरण।
4. अखबार, मैगजीन पर किया गया खर्च।
5. महत्वाकांक्षा स्तर का आत्म प्रत्यय।[47]

लेविन्गर के मतानुसार :

एक बच्चे का उसके घर या सामाजिक-आर्थिक स्थिति से परे (वैज्ञानिक रूप से) अधिक क्रमानुसार अध्ययन नहीं किया जा सकता, जैसा कि एक जानवर या पौधे का उसके स्वभाव से (रहन-सहन) अलग अध्ययन। वास्तव में एक बच्चे का सम्बन्ध उसके वातावरण के साथ बहुत जटिल होता है।[48]

परिवार :

परिवार वह स्थल है जहां समाज की मनोवृत्यिों, आदर्श व्यवहार का निर्माण होता है। इस विचार से बालक के विकास (व्यक्तित्व सम्बन्धी) एवं सामाजिक विकास में (बालक के समायोजन) गृह या परिवार का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान माना है।

परिवार एक सामाजिक वातावरण है जिसमें बालक माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों से सामाजिक व्यवहार अर्थात् सामाजिक नियमों आदर्शों एवं मूल्यों तथा उनकी अभिव्यक्ति के तरीकों को सीखता है। बालक नागरिकता का सर्वश्रेष्ठ पाठ अपनी मां के चुम्बन एवं पिता के संरक्षण के मध्य ही सीखता है।

बालक की अभिवृत्ति तथा दायित्वों को विकसित करने में परिवार के आकार का विशेष महत्व है। परिवार जटिल अन्तःक्रियाओं का संयोग है, जितना बड़ा परिवार होगा उतने ही जटिल आन्तरिक सम्बन्ध भी होते हैं।

लघु परिवार :

लघु परिवार से तात्पर्य उस परिवार से है, जिसमें तीन या तीन से कम बच्चे हैं।[49] जब व्यक्ति इच्छित बच्चों की संख्या प्राप्त कर ले तो उसे अपने परिवार को सीमित कर लेना चाहिए, यह संख्या तीन से अधिक न हो।[50]

लघु परिवार में माता-पिता के अपने बच्चों से घनिष्ठ सम्बन्ध होते हैं, बालक के विकास में लघु परिवार का महत्व है तथा बालक अनुशासित होते हैं तथा समस्यात्मक परिस्थितियों में पुरस्कार के द्वारा बालक को वांछित कार्य सिखाए जा सकते हैं।

बृहद् परिवार :

बृहद् परिवार से तात्पर्य तीन से अधिक बच्चों से युक्त परिवार से है। बृहद् परिवार में व्यक्ति की अपेक्षा समूह के हितों का ध्यान रखा जाता है, प्रत्येक बालक को बृहद् परिवार के कुछ सामाजिक-आर्थिक लाभ होते हैं, ये बालक संवेगात्मक रूप से स्थिर होते हैं, किन्तु विद्यालयी कार्य में पिछड़ जाते हैं। बृहद् परिवार में बालक को सामाजिक-सुरक्षा मिलती है।[51]

मैकाइवर तथा पेज :

परिवार एक ऐसा समूह है जो पर्याप्त रूप से लैंगिक सम्बन्ध पर आधारित होता है तथा जो इतना स्थायी होता है कि इसके द्वारा बालकों के जन्म तथा पालन पोषण की व्यवस्था हो जाती है।[52]

क्लेयर के अनुसार :

परिवार से हम सम्बन्धों की वह व्यवस्था समझते हैं जो माता-पिता और उनकी संतानों के बीच में पायी जाती है।[53]

वर्जेस और लांक :

परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रक्त अथवा गोद लेने के सम्बन्धों से संगठित होते हैं, एक छोटी सी गृहस्थी का निर्माण करते हैं, और पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन के रूप में एक दूसरे से अन्तःक्रियायें करते हैं तथा एक सामान्य संस्कृति का निर्माण और देख-रेख करते हैं।[54]

किंग्सले डेविस :

परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जिनके एक दूसरे के प्रति सम्बन्ध सगोत्रता पर आधारित होते हैं, और जो इस प्रकार एक दूसरे के रक्त सम्बन्धी होते हैं।[55]

पारिवारिक लगाव :

पारिवारिक सम्बन्धों से हमारा तात्पर्य परिवार के सदस्यों की आपस में अन्तःक्रिया से है। जैसे माता-पिता का आपस में व बच्चों के साथ सम्बन्ध।

'बर्शेस एण्ड लाक' ने परिवार की व्यवस्था करते हुए कहा है-

'परिवार व्यक्तियों के उस समूह का नाम है जिस में यह विवाह, रूधिर या दतक सम्बन्धों से होकर भिन्न-भिन्न नहीं अपितु एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं। इस गृहस्थी में वह एक दूसरे पर पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री तथा भाई-बहन के रूप में प्रभाव डालते हैं। वे सब एक गृहस्थी में एक सामान्य संस्कृति को जन्म देते हैं और उसको बनाए रखते हैं।'[56]

क्लेयर ने भी परिवार की व्याख्या करते हुए बताया है कि-

'परिवार से हम सम्बन्धों की वह व्यवस्था समझते हैं जो माता-पिता व उनकी सन्तानों के मध्य पाई जाती है। माता-पिता के अपने बच्चों के साथ सम्बन्ध उनके व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। जिन परिवारों के माता-पिता अपने बच्चों के लिए चिन्तित रहते हैं तथा अति नियंत्रण रखते हैं। ऐसे परिवारों के बच्चे सांवेगिक दृष्टि से अपने को असुरक्षित समझते हैं तथा समाज में असमायोजित हो जाते हैं।'

परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में पारिवारिक सम्बन्धों से हमारा तात्पर्य है, माता-पिता अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। क्योंकि माता-पिता के व्यवहार से ही बच्चों के बहुत से गुण जैसे आत्म-प्रत्यय, आक्रामकता, विद्यालय उपलब्धि, सृजनात्मकता आदि गुणों का विकास होता है।

'बी.सी. बेकर' ने 1964 में अनेकों अध्ययन किये और यह निष्कर्ष निकाला कि माता-पिता के व्यवहार पर ही बच्चे के व्यक्तित्व का विकास सम्भव है। बेकर ने अपने अध्ययन के आधार पर माता-पिता के बच्चों के साथ सम्बन्धों की द्विमुखी क्रियाएं बताई हैं-

1. प्रेमपूर्ण या विरोधपूर्ण।

2. अनुरोधपूर्ण या निषेधात्मक।

'आर.आर. सीयर'[57] ने स्वीकारोक्ति व नकारात्मक शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि स्वीकारोक्ति से तात्पर्य है, वे मातायें जो कि अपने बच्चों को बिना किसी आरक्षण के स्वतन्त्र रूप से स्नेह देती हैं तथा उनका प्रत्येक कार्य अपने बच्चों के लिए होता है।

इसके विपरीत नकारात्मक से तात्पर्य है, वे माता-पिता जो अपने बच्चों को नगण्य अंश में स्नेह देते हैं। प्रत्यक्ष रूप से कभी भी अपने बच्चों के सामने प्रेम प्रदर्शित नहीं करते हैं तथा बच्चों के विचारों व संवेगों को अस्वीकृत कर देते हैं।

यह भी विचारणीय है कि परिवार में माता-पिता व अन्य सदस्यों का व्यवहार, बच्चों की आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं के सन्दर्भ में किस रूप में स्वीकार किया जाता है।

'ब्रेकन' ने इसे निम्न रूप में व्यक्त किया है-

1. प्रथम प्रकार से वे माता-पिता है, जो बच्चों की आयु के अनुसार निश्चित अनुपात में स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं, तथा परिवार के सदस्य स्वीकार करते हैं उनके साथ विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, बच्चों की प्रत्येक रूचिको प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार के परिवार में बालकों को अपनी समस्त क्षमताओं, जैसे- रूचि, नैतिकता, अभिवृत्ति मूल्यों आदि को विकसित करने का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है।

2. दूसरे प्रकार के माता-पिता वे हैं जो अपने बच्चों के सम्बन्ध में सभी प्रकार के निर्णय स्वयं लिया करते हैं, आयु के अनुपात में उन्हें बहुत छोटा समझते हैं तथा पग-पग पर बच्चों को उनकी अंगुली पकड़ कर चलाना ही अपना कर्तव्य समझते हैं।

3. तीसरे प्रकार के माता-पिता वे हैं जो अपने बच्चों की प्रगति तथा उनके रहन-सहन के तरीकों से, कोई सरोकार नहीं रखते हैं। अतः ऐसे बालक अपराधी प्रवृत्ति के हो जाते हैं। उनके शैक्षिक व नैतिक मूल्यों का पतन हो जाता है।

व्यक्तिगत मूल्य :

प्रत्येक मानव को जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते हैं, जो समय की गति के साथ-साथ बढ़ते जाते हैं। इन्हीं अनुभवों से कुछ सामान्य सिद्धान्त जन्म लेते हैं जो मानव के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। ऐसे सामान्य सिद्धान्तों को जो समस्त जीवन को एक दर्शन के रूप में परिवर्तित कर देते हैं तथा समस्त जीवन जीने की एक विशिष्ट कला को जन्म देते हैं तथा उनके पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, मूल्य के नाम से जाना जाता है। व्यक्ति के मूल्य इस बात का दर्पण होते हैं कि वे अपनी सीमित शक्ति व समय में क्या करना चाहते हैं। जीवन के पथ प्रदर्शक के रूप में मूल्य अनुभवों के साथ-साथ अधिक परिपक्व होते जाते हैं।[58]

सामान्य रूप से मूल्य शब्द की रूचियां, प्रेरणा एवं अभिवृत्ति व्यक्त होती है जिसका कारण प्राप्त होने वाली वस्तु अथवा वांछनीयता में निहित होता है। किसी व्यक्ति की प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष विशिष्ट अथवा वांछनीय वस्तुओं के समूह के उन गुणों का प्रत्यक्ष जो व्यवहार के प्राप्त लक्षणों एवं ढंगों के चयन को प्रभावित करता है, मूल्य कहलाता है।

मूल्य शब्द अंग्रेजी के 'Value' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'वेलियर' से हुई है जिसका अर्थ है, योग्यता, महत्व। जिसके द्वारा कोई वस्तु लाभदायक या सम्मान योग्य बनती है, उपयोगिता, उद्यमता, कीमत आदि।

मनुष्य के द्वारा स्वीकृत अनुभव ही मूल्य का रूप धारण कर लेते हैं।

सामान्य रूप से मूल्य शब्द से व्यक्ति की रूचियां, प्रेरणां एवं अभिवृत्ति व्यक्त होती है जिसका कारण प्राप्त होने वाली वस्तु अथवा वांछनीय में निहित होता है। किसी व्यक्ति की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष विशिष्ट अथवा वांछनीय वस्तुओं के समूह के उन गुणों का प्रत्यक्ष जो व्यवहार के प्राप्त लक्षणों एवं ढंगों के चयन को प्रभावित करता है, मूल्य कहलाता है।

ब्राइटमैन के अनुसार १९५० :

मूल्य से हमारा आशय किसी पसन्द पुरस्कार, वांछित पहुंच या आनंद से है किसी क्रिया या वांछित वस्तु का वास्तविक अनुभवों पर आनन्द प्राप्त करना ही मूल्य समझा जाता है। किसी भी अमुक परिस्थिति या विशिष्ट समय में जिनके द्वारा आनन्दानुभूति होती है या यथार्थ में उस वस्तु को पसन्द करते हैं, उसकी इच्छा करते हैं या स्वीकार करते हैं, उसे मूल्य कहते हैं।

एवर्ट के अनुसार :

मूल्य एक भावना है जो क्रियाओं से निर्मित होती है।[59]

ड्रेवर जेम्स के अनुसार :

मूल्यों को किसी स्तर या इकाई के सम्बन्ध में संख्यात्मक मापक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

यंग किम्बल के अनुसार :

मूल्य हमारे उद्देश्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। और अभिवृत्तियों की ओर निर्देशित करते हैं। अर्थात् मूल्य वांछित व्यवहार है जिनकी उपयुक्तता है। मूल्य से यह प्रदर्शित होता है कि मानव क्या प्राप्त करना चाहता है।[60]

आलपोर्ट के मतानुसार :

मूल्य वह क्रिया है जो किसी उद्दीपन से उद्दीप्त होती है।[61]

Sherry and Verma :

"Now, values are considered to be different from attitude and belief. The constitute a motivational dimansion and generies. Although no two social psychologists is concur in their definitions of values. Most of them believe that value is a concept of the desirable ends, goals, ideals of modes of Action which make human behaviour selective" i.e. values are the determinants of human behaviour."[62]

Clyde Kluckhon (1952) :

"A value is a conception explicit or implicit, distinctive of an individual or characteristics of a group of the desirable which influences the selection from available mode, means and ends of Action."

According to this definition value has relationship between the subject and object, it is the source of motivation that influences behaviour, it is personal as well as social and it is expressed as well as implied.

Flinks :

"Values are the normative standards by which human beings are influenced in their choice among the alternative courses of Action which they perceive."

Narold Fallding (1965) define value as follows :

"A value, then is a Generalized end that guides behaviour towards uniformity in the variety of situations with the object of repeating a particular self sufficient satisfaction."

Wrench defines :

"Values as a positive or negative sentiment towards something which is broad enough to serve as a criteria for evaluating attitudes and courses of action in a wide varities of area."

प्रस्तुत परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मूल्य यह इच्छित प्रत्यय है जिस में व्यक्ति रूचि लेता है। जब व्यक्ति अपने सम्मुख दो या दो से अधिक समान रूप से आकर्षक साधनों एवं व्यवसायों में से किसी एक का चयन करना चाहता है तो उस समय उसकी विभिन्न मूल्यों की धारणा ही उसके मानसिक द्वन्द को समाप्त कर देती है।

सृजनात्मकता :

सृजनात्मकता मानव की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। किसी भी राष्ट्र का उत्थान उस राष्ट्र के नागरिकों की सृजनात्मक शक्ति पर आधारित होता है। इसलिए सृजनात्मकता विकासशील देश की अमूल्य निधि एवं सामाजिक आर्थिक तथा व्यक्तिगत उन्नति का अमोध शस्त्र है।

टायलर का कथन है- 'एक सृजनशील तथा अन्वेषक व्यक्ति कम खर्चीले उपकरणों से कम समय में जिस कार्य को करेगा वहां कम योग्यता वाला व्यक्ति उसमें अधिक समय एवं उपकरणों का व्यय करेगा।'[63]

हमारे देश में शिक्षकों, जो कि शिक्षा की धुरी हैं, की अवहेलना की जा रही है। शिक्षा के गुणातमक स्तर का सुधार अनेकानेक तत्वों से प्रभावित होता है, लेकिन उसमें शिक्षक की योग्यता व चरित्र ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। वास्तव में शिक्षक ही राष्ट्र का भाग्य निर्माता है, शिक्षक के विचारों, आविष्कारों एवं खोजों पर ही राष्ट्रीय प्रगति व कल्याण निर्भर है।

आज शिक्षा की धारा बदल रही है। विद्यालय का कार्य केवल ज्ञान के संगठन भण्डार व बने बनाए मूल्यों का स्थानान्तरण करना ही नहीं है बल्कि छात्र को इस योग्य बनाना है कि वे स्वयं अपने मूल्यों का निर्माण कर सकें, अपनी समस्याओं के नवीन, असाधारण व मौलिक हल खोज सकें, अपनी जन्मजात प्रतिभाओं का विकास कर सकें अर्थात् बच्चों की रचनात्मक प्रतिभाओं का विकास आज शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य है।

एक सृजनशील अध्यापक अज्ञान के अंधकूप में प्रवेश कर अपने आप को ज्ञान रूपी रश्मियों से आलोकित करने के लिए प्रबल जिज्ञासु होता है। वह स्वतन्त्र व मौलिक चिन्तन का अभ्यासी होता है। उसके हृदय में कल्पना रूपी सागर सदैव हिलोरे लेता हैं। ऐसे अध्यापक में ही बच्चों के सृजनातमक रूपी पौधे को पल्लवित व पुष्पित करने की उत्कंठा होती है। अतः शिक्षक को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

वी.पी. शर्मा के अनुसार- 'मौलिकता, आविष्कारिता, कल्पना कुछ प्रतिभाशाली बच्चों को ही बौद्धिक निधि नहीं है। सृजनात्मक चिन्तन प्रतिभाशाली बच्चों का ही एक विशिष्ट गुण है। इस मान्यता से शिक्षण में निष्क्रियता, परम्परावादिता व रूढ़िवादिता का प्रवेश होगा। वास्तव में सृजनात्मक चिन्तन का विकास तभी होता है, जब शिक्षक यह समझता है कि सभी बच्चों में सृजनात्मक चिन्तन की क्षमता है।[64]

आज का युग परमाणु युग है। अतः इस युग में जितनी सामाजिक आर्थिक, विज्ञान, कला एवं संगीत के क्षेत्र में उन्नति हुई है वह मनुष्य की सृजनात्मक योयता के समुचित विकास व खोज पर निर्भर है।

अमेरिकन एसोशियेशन आफ गिफ्टेड चिल्ड्रेन के अनुसार– आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या सृजनात्मक चिन्तन का अभाव है।

सृजनात्मकता के विकास के सम्बन्ध में कुछ अध्ययन टोरेन्स ने गाइडिंग क्रिएटिव टेलेन्टस में दिए हैं।

एक बालक जिसे उसकी सृजनात्मक शक्ति के विकास का अवसर नहीं दिया जाता है। इससे उस बालक में आत्मविश्वास का पूर्ण अभाव हो गया। अतः वह निर्णय लेने के लिए पराश्रित हो गया। स्पष्ट है कि उस बालक की सृजनात्मक शक्ति अवसर के अभाव में समाप्त हो चुकी थी, फलस्वरूप व्यक्तित्व का विघटन हो गया।[65]

एम.के. रैना ने इस सन्दर्भ में यह बताया कि सृजनशील बालक की यह प्रकृति है कि वह प्रश्न पूछकर, अनुमान, प्रयोग एवं खोजों द्वारा सृजनात्मक रूप से सीखता है। ऐसे बालकों में जिज्ञासु प्रवृत्ति पाई जाती है, यदि उनकी इस प्रवृत्ति पर तथा प्रयोगात्मक क्रियाओं पर रोक लगा दी जायेगी तो परिणामस्वरूप ऐसे लाखों विद्यार्थियों का यह प्रकृति प्रदत्त गुण नष्ट हो जायेगा। कुछ समय बाद यह बालक सीखने के प्रति अरूचि दिखायेंगे तथा सीखने का प्रतिरोध करेंगे।[66]

अतः यह स्पष्ट है कि राष्ट्र एवं व्यक्ति दोनों दृष्टि से विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्तियों का विकास होना आवश्यक है।

व्याख्या :

सृजनात्मक चिन्तन की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है, सभी मनो वैज्ञानिकों ने सृजनात्मक विचारधारा के सम्बन्ध में अलग-अलग विचार दिए हैं।

रायटन ने सृजनात्मकता को 3 आधारों पर परिभाषित किया है।

'सृजनात्मकता के नवीन विचारों को सत्ता में लाने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। सृजनात्मकता एक ऐसी रचना है जो कि नवीन तथा महत्वपूर्ण होती है।'[67]

दूसरे शब्दों में सृजनात्मकता एक संज्ञावाचक शब्द है जिसमें व्यक्ति नवीन प्रत्ययों को प्रदान करता है (जो कि उत्पादन है)

बैरन के अनुसार :

"उच्च मौलिक विचार वह विचार है जो केवल उसी व्यक्ति के लिए नवीन होता है।"[68]

मैडनिक के अनुसार :

"सृजनात्मक चिन्तन में साहचर्य के तत्वों का मिश्रण रहता है। जो विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संयोगशील होते हैं या किसी अन्य रूप में लाभदायक होते हैं। नवीन संयोग के विचार जितने अधिक होंगे सृजनात्मकता की सम्भावना उतनी ही अधिक होगी।"[69]

शिक्षा विश्वकोष में सृजनात्मकता को 3 रूपों में परिभाषित किया है।"[70]

(१) उत्पत्ति के रूप में :

सृजनात्मक वह व्यक्त परिणाम है,जो नवीन तथा उपयोगी है- मैकमिनन (1962)

(२) प्रक्रिया के रूप में :

सृजनात्मक एक आधारभूत प्रक्रिया है जो विभिन्न दिशाओं में उपयोगी होती है।- गिसैलिन (1952)

(३) अनुभव के रूप में :

यह मस्तिष्क में उत्पन्न एक विषय कारक व्यक्तिगत अनुभव है।- मासलो (1963)

शिक्षा विश्वकोष में ही न्यूवैक एवं अन्य (1962) की भी. परिभाषा दी गई है।

उसके अनुसार चिन्तन को तभी सृजनात्मक कह सकते हैं जबकि–

1. The product has novelty of value, either for the thinker or the culture.
2. The thinking is on conventional.
3. It is highly motivated and persistant or of great intensity.
4. The problem was initially vague and undefined so the part of the task was to formulate the problem itself.

टोरेन्स के विचार :

"सृजनात्मक क्रियाएं वह क्रियाएं हैं जिनका व्यक्ति एवं संस्कृति दोनों ही दृष्टिकोण से नवीन तथा उपयोगी होना आवश्यक है।"[71]

टेलर (१९६४) के अनुसार :

"वह क्रिया सृजनात्मक है जिसका परिणाम एक ऐसे नवीन कार्य के रूप में हो जो समय विशेष पर एक समूह विशेष को संतोषप्रद उपयोगी और रमणीय के रूप में ग्राह्य हो।"[72]

स्टोन्स के अनुसार :

"जब किसी ऐसे नवीन कार्य की उत्पत्ति होती है, जो किसी विशिष्ट समूह द्वारा उपयोगी या रक्षणीय है, उसको सन्तोष पूर्ण रूप में स्वीकार किया जाता है। लेकिन यह केवल पूर्ण वस्तुओं का परिमार्जन मात्र होता है। ये प्रतिरूप नवीन हो सकते हैं, लेकिन उनका उपयोगी होना आवश्यक नहीं है।"

कालटर्न के अनुसार :

"रचनात्मक विचारधारा वह है जो ज्ञान में वृद्धि करती है।"[73]

सैली के अनुसार :

"वे तथ्य जो रूप के रूप में भी सत्य होते हैं, उनका सामान्यीकरण किया जा सकता है। और खोज के समय जो कुछ ज्ञात होता है उसके सन्दर्भ में वह आश्चर्यजनक भी होता है।"[74]

गिल्फर्ड के अनुसार :

"सृजनात्मकता श्रेष्ठ विचार करने की योग्यता को कहते हैं जो कि कम होती है।"[75]

इसके अनुसार सृजनात्मक विचारधारा में चार मुख्य विशेषतायें हैं–

(१) प्रवाह :

प्रवाह का तात्पर्य पुनरावृत्ति रहित विचारधारा से है, अर्थात् वह विचार जो समस्या समाधान में केवल एक ही बार प्रयुक्त होता है।

(२) लचीलापन :

किसी व्यक्ति का लचीलापन उस के द्वारा व्यक्त किए गये विचारों में विभिन्नता एवं उसके सोचने के तरीकों से प्रदर्शित होता है।

(३) मौलिकता :

मौलिकता असामान्य उत्तरों से प्रदर्शित होती है।

(४) विस्तृत व्याख्या :

विस्तृत व्याख्या का अर्थ है– मौलिकता, विचारों एवं कुछ और व्यौरों का योग स्थापित करना।

उपरोक्त परिभाषाओं पर विचार करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि– (1) सृजनात्मक विचार नवीन, उपयोगी एवं मौलिक होने चाहिंये। (2) इसे समाज में मान्यता मिलनी चाहिए, सृजनात्मकता नये ढंग से सोचने, करने तथा बनाने की प्रक्रिया है। अतः यह स्पष्ट है कि सृजनात्मक विचारधारा वही होती है जिसको समाज स्वीकृति प्रदान करता है, तथा उन विचारों में लचीलापन, मौलिकता एवं प्रवाह होता है, और इसी आधार पर विद्यार्थियों की रचनात्मक योग्यता को ज्ञात किया जाता है।

शब्द की व्याख्या :

प्रत्येक बालक को इस उद्देश्य के साथ कोई भी विषय पढ़ाया जाता है कि उसके व्यवहार में कुछ निश्चित परिवर्तन हो। अतः कह सकते हैं कि किसी विषय

विशेष के पढ़ने से जो ज्ञान प्राप्त होता है वही उपलब्धि है। उपलब्धि के अन्तर्गत वे सभी बातें आती हैं जो किसी व्यक्ति विशेष ने किसी विषय का अध्ययन कर के ग्रहण की हो।

शैक्षिक योग्यता विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के उस स्तर का अध्यापकों द्वारा मूल्यांकन है जो विद्यार्थी शैक्षिक निर्देशों के समझने के प्रयत्न में और उसे पुनः अभिव्यक्त करने में, साथ ही उनके स्तर या आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्य के प्राप्त करने में, अभिव्यक्त होता है। और जिसका प्रमाण त्रैमासिक परीक्षा में उनके द्वारा किए गए कार्यों से मिलता है।

अनस्टासी (१९६१) टायलर (१९६८) :

अधिक विशिष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक योग्यता अपनी शैक्षिक योग्यता में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त अंकों का समग्र योग होता है।

सामान्य रूप से शैक्षिक उपलब्धि से उस निपुणता से अर्थ लगायां जाता है जो विद्यालयों या महाविद्यालयों के विषयों में किसी विद्यार्थी के द्वारा प्राप्त की जाती है। दूसरे शब्दों में विद्यालय स्तर पर शिक्षा प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थी की मानसिक क्षमता का यह यथार्थ स्वरूप है। वास्तव में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त प्रतिशत अंकों या श्रेणी द्वारा नापा जाता है।

साधारणतः उपलब्धि का अर्थ किसी निश्चित समय में व्यक्ति को जो ज्ञान दिया जाता है, उसमें से वह कितना ग्रहण करता है, से लिया जाता है, किन्तु वास्तव में उपलब्धि का बहुत विस्तृत अर्थ है। विभिन्न विद्वानों ने उपलब्धि की परिभाषा भिन्न-भिन्न दी है।

(१) सोधी :

उपलब्धि किसी कार्य को पूर्णकरना, उच्च ज्ञान प्राप्त करना, भौतिक वस्तुओं अथवा मानवीय विचारों की दक्षता से या संगठित रूप से प्राप्त करना, अपने कार्यो को शीघ्रता एवं आत्म निर्भरता से पूर्ण करना, उच्च स्तर प्राप्त करना, स्वयं को दूसरों

से बढ़कर बनाना, दूसरों से आगे बढ़ना, तथा अपनी सफलता प्रतिमा द्वारा आत्म सम्मान को बढ़ाना।[76]

(२) <u>एडकिन्स के अनुसार</u> :

उपलब्धि विभिन्न प्रतिक्रियाओं का सम्मिश्रण है।

(क) उपलब्धि विभिन्न प्रकार की उत्तेजनाओं का विस्तार है जिससे शिक्षार्थी संवेदनशील तथा उत्तरदायी बने।

(ख) नवीन प्रतिक्रियाओं का विस्तार है जो लोकप्रिय या विभेदीकृत उत्तेजक घटक की उपस्थिति नहीं है।

(ग) यह नवीन प्रतिक्रियाओं का विस्तार है जो कि अपूर्व उत्तेजक परिस्थिति में बनाई जाए, ज्ञान के क्षेत्र में व्यक्ति कितना प्रवीणहै, यह दक्षता ही उसकी उपलब्धि या निष्पति है।[77]

<u>रावत</u> :

उपलब्धि के अन्तर्गत वे सब बातें जाती हैं जो किसी व्यक्ति विशेष ने किसी विषय का अध्ययन करके ग्रहण की है।[78]

<u>एनेस्टैसी</u> :

सक्रियात्मक रूप से उपलब्धि की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है-

'शैक्षिक योग्यता विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के उच्च स्तर का अध्यापकों द्वारा किया गया वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थी शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयत्न में और उसे पुनः अभिव्यक्त करने में साथ ही उनके स्तर या आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्य की प्राप्ति करने से अभिव्यक्त होता है। और जिसका प्रमाण उसकी त्रैमासिक परीक्षा में उनके द्वारा किए गए कार्यो से मिलता है।[79]

<u>टायलर</u> :

अधिक व विशिष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक योग्यता अपनी शैक्षिक परीक्षा में छात्रों द्वारा प्राप्त अंक का समग्र योग होता है।[80]

फ्रीमैन :

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो कि एक विशेष विषय या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान या कौशल का मापन करता है।[81]

सुपर :

एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा कोई कार्य वह कितनी भली-भांति कर लेता है।[82]

इवैल :

उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो कि विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किए गए कुछ ज्ञान कुछ कुशलता या दक्षता का मापन करता है।

भार्गव एम.सी. :

''एक निश्चित अवधि के प्रशिक्षण तथा सीखने के उपरान्त व्यक्ति के ज्ञान एवं समझ का किसी विषय या विभिन्न विषयों में मापन से प्राप्त परिणाम ही उपलब्धि है। इसमें अध्ययन किया जाता है कि इन विषयों में व्यक्ति ने कितना हृदयंगम किया तथा कौन-कौन सी विशिष्ट योग्यताओं को विकसित किया है।[83]

उक्त परिभाषाओं को हृदयंगम करते हुए निष्पत्ति परीक्षणों से हमारा अभिप्रायः ऐसे परीक्षणों से है जिसमें कि एक निश्चित अवधि से प्रशिक्षण एवं सीखने के पश्चात् के ज्ञान एवं समक्ष का किसी एक विषय विशेष या विभिन्न विषयों में मापन किया जाता है।

प्रायः विद्यालय के समक्ष विषयों में ज्ञान का मापन करने हेतु उसका प्रयोग होता है क्योंकि इनका मुख्य उद्देश्य ज्ञान मापन के साथ-साथ शैक्षिक पूर्व कथन भी होता है।

सामान्यतः शैक्षिक उपलब्धि से ज्ञान तथा ज्ञानार्जन की उस सीमा से अर्थ लगाया जाता है जो कि विद्यालय या महाविद्यालयों विषयों में किसी विद्यार्थी द्वारा

प्राप्त की जाती है। प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्राओं द्वारा यू.पी. बोर्ड हाईस्कूल परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों से लिया गया है, क्योंकि हाईस्कूल के प्राप्तांक छात्रों की निष्पत्ति का उचित प्रतिनिधित्व करते हैं। इस मान्यता के आधार पर ही हाईस्कूल के प्राप्तांकों को ही उपलब्धि की कसौटी माना है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों से सह सम्बन्ध की सार्थकता ज्ञात करना।
3. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी सृजनात्मकता पर क्या प्रभाव पड़ता है?
4. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी सृजनात्मकता में सह सम्बन्ध की सार्थकता ज्ञात करना।
5. लघु एवं बृहद् परिवार की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है?
6. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध की सार्थकता ज्ञात करना।
7. लघु परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और बृहद् परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना।
8. लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का सृजनात्मकता से सह सम्बन्ध की सार्थकता ज्ञात करना।
9. लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध की सार्थकता ज्ञात करना।
10. लघु परिवारों की छात्राओं का सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध की सार्थकता ज्ञात करना।
11. बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का उनकी सृजनात्मकता से सहसम्बन्ध की सार्थकता ज्ञात करना।

12. बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध की सार्थकता ज्ञात करना।
13. बृहद् परिवारों की छात्राओं का सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध।

उपकल्पनायें :

1. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।
2. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों से सार्थक सह सम्बन्ध है।
3. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।
4. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी सृजनात्मकता में सार्थक सह सम्बन्ध है।
5. लघु एवं बृहद् परिवार की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।
6. लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सह सम्बन्ध है।
7. लघु परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और बृहद् परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।
8. लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का सृजनात्मकता से सार्थक सह सम्बन्ध है।
9. लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सह सम्बन्ध है।
10. लघु परिवारों की छात्राओं का सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह सम्बन्ध है।
11. बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का उनकी सृजनात्मकता से सार्थक सह सम्बन्ध है।

12. बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह सम्बन्ध है।
13. बृहद् परिवारों की छात्राओं का सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह सम्बन्ध है।

अध्ययन की परिसीमायें :

1. भौगोलिक क्षेत्र की दृष्टि से अध्ययनार्थ प्रदत्त केवल जनपद फिरोजाबाद (शहरी परिवेश) से ही लिए गये।
2. कक्षा की दृष्टि से एकादश कक्षा की छात्राओं को ही लिया गया।
3. शोध कार्य के लिए लगभग 300 छात्रायें लघु परिवार की और 300 छात्राएं बृहद् परिवार की ली गईं। जिनके पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखा गया।
4. लिंग की दृष्टि से केवल छात्राओं का ही न्यादर्श लिया गया।

******

REFERENCES

(1) डा. आहूजा राम : 'आधुनिक भारत की सामाजिक समस्याएं' मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ 199

(2) T.S. Mehts, et al. (Eqs), National Seminar on population Education, Delhi, N.C.E.R.T., 1970, p. 9.

(3) Unesco workshop on population and family education report of an Asian regional office, 1971, p.34.

(4) प्रो. जोशी, ओ.पी. 'इण्डियन सोशल इन्स्टीट्यूशन' जयपुर, नवम संस्करण, 1971, पृष्ठ 139 से 141 तक

(5) शिक्षा आयोग- 1964-66, पृष्ठ 1

(6) Bossard and Bolt quoted by – Elizabath hurlock in child development, page-650.

(7) Peck, R.E. and Havighurst, R.S. Psychology of character development, N.Y. Willy, 1962.

(8) Baldwin (1945) quoted by J.S. Mouby in child development.

(9) Souther land and wood words- Introducing Socioloy.

(10) गुप्ता, रामबाबू 'शिक्षा के सिद्धान्त' न्यू पब्लिशिंग हाउस कानपुर 1969, पृष्ठ-161

(11) इन्टरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया आफ साइक्ट्री साइकोलोजी साइकोएनालिसिज एण्ड न्यूरोलोजी, वोलमेन, वाल्यूम 4, पृष्ठ 463-465

(12) वही, पृष्ठ 463-465

(13) पूर्वाक्त, पृष्ठ 463-465

(14) वर्मा प्रीति- 'बाल मनोविज्ञान, बाल विकास', 1979, पृष्ठ 30

(15) कुमार आनन्द, भारतीय समाज एवं संस्थाएं, विमल प्रकाशन मन्दिन, आगरा, 1976, पृष्ठ 211

(16) हरलॉक एलिजाबेथ- चाइल्ड डेबलपमेण्ट।

(17) Bahm, Archie J, Philosophy, An Introduction, Asis publishing House, New Delhi, 1964, p.273.

(18) Bruner, Jerome, S. and Goodman Cacile C. "Value and Need as organising factor in perception."

- Journal of Abnormal and Social Psychology, page 33-34, January 1947.

(19) Smith, B.O. Stanloy, W.O. and Shores J.H. Fundamentals of curriculum development, Harcourt, Brace and World Inc. No. Y. 1957, page 61.

(20) Ruch- Floyd Psychology and life

D.B. Taraparevala Sons and Co. Pvt. Ltd. Bombay, 1970, page 406.

(21) Bell, Earl H. Social Foundations of Human behaviour, Harper and Row, N.Y. and Evanston, P.399.

(22) Lindzey, Gardner (Ed.) A handbook of Social Psychology, Harvard University Press, Vol. I, 1959.

(23) Brubacher, S.S. Modern Philosophies of Education, Kagakush Co., Ltd. Tokyo, III Edition, page 98.

(24) Broudy, H.S. Building ap philosophy of Education, Prentice Hall of India, Pvt. Ltd., New Delhi, 1965, p.135.

(25) Phenix pheilip H., Philosophy of education, Holt Rene hart and Winstion, N.Y. 1961, page 277.

(26) Thompson, Ralph H. "The Administrators Battleground, conflict Among values" Peabody Journal of Educ. Vol.47, No. 5, March 1970.

(27) Willer, Jack Courad "Value Bases for curriculum Decision" Peabody Journal of Education, Vol. 51, 1 October 1973.

(28) Schiebe, Karl, Ibid, p.47.

(29) Hall, C.S. and Lindzey, G. Ibid, page 483.

(30) Saylor, J.G. and Alexander W.M. Curriculum planning for modern schools. Holt, Binchart and Winztion, N.Y. 1966 page-214.

(31) Geiger, G. "Valus and social science", Journal of social issues 6:4 1950, page-9.

(32) Broudy, H.S. Ibid., page-136.

(33) S.N. Tripathi : Creativity and Education, N.C.E.R.T.

(34) The International Commission of Development of Education (1971,72) Journal of Education.

(35) पूर्वोक्त ।

(36) Gray Elegy : Country Church.

(37) Henry Eyring : "Scientific Creativity" Quoted by G.M. Blair, R.S. Jones and Ray H. Simpson, Educational Psychology, Page-261.

(38) J.P. Naik : Quoted by V.P. Sharma in anotomy of creativity.

(39) Elisca Vevas- Quoted by Sharma, V.P. in Anatomy of the creativity by Sharma V.P., page-1.

(40) Guiding Creative talent by E. Paul Torrance.

(41) Floyd, L. Ruch.

(42) टीचर टुडे, अप्रिल-जून, 1981

(43) कैप्टिन : ए स्टडी ऑफ इस्कौलिस्टिक अचीवमैंण्ट ऑफ पीपुल एण्ड रिलेशन टू सोशल स्टैटस, इकौनामिक कण्डीशन एण्ड एजूकेशनल एन्वार्यमेंट, लघु शोध प्रबन्ध 1968

(44) वैल्थमैन : नेशनल सोसायटी फौन दी एजीकेशन, नं. 1

(45) कुप्पूस्वामी : सामाजिक-आर्थिक स्तर पैमाने का मैनुअल, 1

(46) एस. जलोटा, आर.एन. पाण्डे, एस.डी. कपूर, आर.एन. सिंह के सामाजिक-आर्थिक स्तर के पैमान या मैनुअल।

(47) लेविन्गार जे.- 39 ईयर बुक आफ दी नेशनल सोसायटी फार दी स्टडी, आफ एजूकेशन, चैप्टर आन इन्टैलिजेन्स एण्ड रिलेटिड टू सोशियो इकानामिक स्टैटस 1950, पृष्ठ 53

(48) जेम्स एस.एन. बोसार्ड : पेरेण्ट-चाइल्ड 1956, पृष्ठ 82-100

(49) डा. डोडा एस.एस.- 'दि जनरल आफ फैमिली वेलफेयर' 1962-63, पृष्ठ-1 से 6

(50) भटनागर सुरेश, तहीम प्रमिला, 'बाल-विकास और पारिवारिक सम्बन्ध' लायक बुक डिपो, प्रथम संस्करण 1975, पृष्ठ 383-397

(51) मेकाइवर, आर.एम. एण्ड पेज सी. एच.- सोसायटी, पृष्ठ 238

(52) अग्रवाल, जी.के. 'समाजशास्त्र'।

(53) एर्जेस ई. डब्ल्यू एण्ड लाक एच.के.- 'द फैमिली फ्राम इन्स्टीट्यूशन टू कम्पेनियनशिप', पृष्ठ 8

(54) डेविस किंग्सले 'ह्यूमन सोसाइटी'।

(55) बर्जेस एण्ड लोक- दि फेमिली आफ इन्स्टीट्यूशन टू कैमबोलियन, पृष्ठ 8

(56) आर.आर. सीयर एट आल, बवोटेड बाय, जे.एस. भोले (1957)

(57) ब्रेकन- 'परसीव पेरेन्टल एटीट्यूट्डस एण्ड पेरेन्टल आइडेन्टीफिकेशन इन टू फील्ड ऑफ वोकेशनल चॉइस जनरल आफ काउंसलिंग, पृष्ठ 195

(58) भार्गव, एम.सी.- 'आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन', आगरा पंचम संस्करण 1982, पृष्ठ 575

(59) एवर्ट, डब्ल्यू, जी.- मोरल वेल्यूज 1968, पृष्ठ 143

(60) यंग किम्बल- ए हैण्ड बुक ऑफ सोशल साइक्लोजी, पृष्ठ 8

(61) आलपोर्ट जी.डब्ल्यू बोया- ई. सम वैल्यू डिफरेन्सेज एमंग एडल्ट्स एण्ड चिल्ड्रेन इन साउथ अफ्रीका (जनरल आफ स्पेशन साइक्लोजी 1964) वाल्यूम 63, पृष्ठ 241-248

(62) Sherry G.P. and Verma, R.P.- Manual for personal values questionnair Hindi version, National Psychological Corporation, Agra.

(63) टायलर सी. डब्ल्यू एण्ड बैरन एफ.- साइंटिफिक क्रिएटिविटी, 1963, न्यूयार्क।

(64) शर्मा, वी.पी.- एनाटामी आफ क्रिएटिविटी।

(65) टोरेनस- गाइडिंग क्रियेटिव टेलेन्ट।

(66) रैना एम.के. (1974) इंडियन साइकोलोजिकल रिव्यू, अर्द्धवार्षिक रिसर्च जरनल, वाल्यूम 4, नवम्बर 1977

(67) रायटन- निक जरनल वाल्यूम 9, नं. 2, नवम्बर 74, पृष्ठ 32-33

(68) क्लासमियर एच.के. एवं रिचर्ड ई.आर. द्वारा बैरन को लर्निंग एण्ड ह्यूमन एबीलिटीज के तृतीय एडीशन में, पृष्ठ 448 पर सन्दर्भित।

(69) टायलर सी.डब्ल्यू. तथा मैडनिक को त्रिपाठी एस.एन. द्वारा 1964 में क्रिएटिविटी एण्ड एजूकेशन में पृष्ठ 6 पर सन्दर्भित।

(70) एनसाइक्लोपीडिया आफ एजूकेशनल रिसर्च, चतुर्थ एडीशन, पृष्ठ 267, (एन.सी. ई.आर.टी.)

(71) टोरेन्स ई.पी.- गाइडिंग क्रिएटिव टेलेन्ट (1962)

(72) टेलर सी.डब्ल्यू. 1964 क्रिएटिविटी प्रोग्रेस एण्ड पोटोपोटेनिशयल, एम.सी. ग्रो. हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।

(73) कालटर्न- मनोविज्ञान व शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, पृष्ठ 417

(74) सैली– मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, पृष्ठ 418

(75) गिल्फोर्ड (1951)– लोअर फील्ड एवं ईटाल मोरिस ई.वी. द्वारा साइकोलौजिकल फाउण्डेशन्स आफ एजूकेशन में पृष्ठ 119 पर सन्दर्भित।

(76) सोधी टी.एस. आगरा विश्वविद्यालय हेतु किया गया शोध कार्य, धार्मिक एवं धर्म निरपेक्ष संस्थाओं के छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन, 1970, पृष्ठ 11द।

(77) एडकिन्ए– एनसाईक्लोपीडिया आफ एजूकेशनल रिसर्च, चतुर्थ संस्करण, उपलब्धि परीक्षण का अध्याय, मैकमिलन एण्ड कम्पनी, लन्दन।

(78) रावत डी.एन.– मेजरमेंट इवेलुएशन एण्ड स्टेटिसटिक्स इन एजूकेशन, न्यू देहली, 1970, पृष्ठ 89

(79) एनेसटैसी ऐनी– 'साइकोलोजीकल टेस्टिंग' न्यूयार्क मैकमिलियन, पंचम संस्करण, 1971, पृष्ठ 294

(80) टायलर एल.इ.– द साइकोलोजी आफ ह्यूमन डिफरैन्स, बोम्बे, 1968

(81) फ्रीमैन– एफ.एस.– 'थ्यौरी एण्ड प्रैक्टिस आफ साइकोलोजीकल टेस्टिंग' न्यू देहली, तृतीय संस्करण, 1971 पृष्ठ 490

(82) सुपर– स्प्रैसिंग वोकेशनल फिटनैस (1967)

(83) भार्गव– एम.सी.– 'आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन', आगरा, पंचम संस्करण, 1982, पृष्ठ 390

******

अध्याय-२

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अध्याय- द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं संकलन शोध कार्यक्रम का अत्यन्त ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण लक्ष्य है सम्बन्धित साहित्य के द्वारा ही हम प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा तुलनात्मक अध्ययन एवं सामान्यीकरण किया जा सकता है।

इसको स्पष्ट करते हुए गुड, बार तथा स्केटस कहते हैं-

''एक कुशल चिकित्सक के लिए आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही चिकित्सा सम्बन्धी एवं औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता है। उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य कर सके और कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।''

<u>वानडेलन के अनुसार</u>-

"After examining the strengths and weaknesses or many research reports, the researcher is less likely to produce a shallow and native work himself or to plunge into the procedure it falls that played his predecessors."[1]

<u>बोर्ग डब्ल्यू आर. के अनुसार</u>-

''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा उस नींव को सुदृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना अथवा यह पुनरावृति भी हो सकती है।''

प्रकाशित साहित्य के अपार भण्डार की कुंजी, अर्थपूर्ण समस्याऔर विश्लेषणीय परिकल्पना के स्रोत का द्वार खोल देती है तथा समस्या के परिभाषीकरण अध्ययन विधि के चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करती है।

हेल्पर[२] (१९५१)-

इन्होंने बच्चों के आत्म प्रत्यय के विकास पर पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि बच्चों के आत्म प्रत्यय पर पिता की अपेक्षाकृत माता का प्रभाव अधिक पड़ता है।

अहलूवालिया डी.के., भटनागर[३] (१९५२)-

आपने शैक्षिक असफलता में वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया।

निष्कर्ष-

उन्होंने पाया कि वे बच्चे अधिक असफल होते हैं, जो बड़े परिवारों के होते हैं।

विष्ठा बी.एस.[४]-

इन्होंने यह अध्ययन किया कि सामाजिक-आर्थिक दशाओं का शैक्षिक आकांक्षाओं तथा शैक्षिक योग्यता के साथ क्या सम्बन्ध है।

उद्देश्य-

1. किशोरावस्था के बालकों का शैक्षिक आकांक्षाओं का स्तर ज्ञात करना
2. शैक्षिक आकांक्षाओं का सामाजिक-आर्थिक दशाओं एवं शैक्षिक योग्यता के साथ सम्बन्ध का अध्ययन करना।

न्यादर्श-

प्रस्तुत अध्ययन हेतु 890 किशोरावस्था के बालकों का देहरादून के विभिन्न विद्यालयों से चयन किया गया। चयन किये गये बालकों में से कुछ बालक ग्रामीण तथा कुछ शहरी थे तथा कुछ बालक इस प्रकार के थे जो कि इंगलिश मीडियम के विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते थे।

उपलब्धियाँ-

1. जिन बालकों की औसत आयु कम थी उनकी शैक्षिक आकांक्षायें उच्च पायी गयीं।
2. परिवार की विशालता शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करती है।
3. परिवार में बालक का क्या स्थान है, इसका शैक्षिक आकांक्षाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
4. पिता की शिक्षा बच्चों की शैक्षिक आकांक्षाओं के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं।
5. शैक्षिक-आकांक्षाओं का स्तर पिता की आय से प्रभावित होता है जिनके पिता की आय उच्च थी, उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं के मूल्य तुलनात्मक दृष्टि से उच्च पाया गया।

<u>सिसिरैली[५] (१९५५)-</u>

उद्देश्य-

सृजनात्मकता का उपलब्धि के ऊपर प्रभाव ज्ञात करना।

निष्कर्ष-

सिसिरैली ने सृजनात्मकता एवं उपलब्धि के विषय में कुछ प्रमाण पाये और बताया कि सृजनात्मकता उपलब्धि के ऊपर बहुत कम प्रभाव डालती है।

<u>परमेश्वरम ई.जी.[६] (१९५६)-</u>

"छात्रों के समायोजन के सन्दर्भ में उनके माता-पिता तथा उनके मध्य पारिवारिक सम्बन्ध की समस्या का अध्ययन।"

उद्देश्य-

सर्वेक्षण का उद्देश्य विभिन्न समस्याओं में से छात्रों द्वारा दी गई वरीयता को जानना था।

उपकरण-

1. प्रश्नावली एवं स्वनिर्मित समस्या निर्धारक मापनी।
2. समायोजन मापनी।

न्यादर्श-

10वीं कक्षा और 12वीं कक्षा में अध्ययनरत मद्रास के 370 छात्रों को चयन किया गया।

निष्कर्ष-

(अ) प्रथम उपसमूह के छात्रों में से 19 प्रतिशत छात्रों ने अभिव्यक्त किया कि उनके माता-पिता उनके प्रति अधिक कठोर हैं तथा उनकी आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रखते।

(ब) द्वितीय समूह के 18 प्रतिशत छात्रों ने भी अनुभव किया कि उनके माता-पिता आवश्यकता से अधिक कठोर हैं।

स्प्रिंग, बैल्ट एवं अन्य[७]-

उद्‌देश्य-

सृजनात्मकता एवं बुद्धि का मापन करना।

निष्कर्ष-

सृजनात्मकता एवं बुद्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया

राय पी.एन.[८]-

इन्होंने उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले छात्रों के व्यक्तित्व से सम्बन्धित कुल चरों का अध्ययन किया, उन्होंने न्यादर्श के रूप में उच्च छात्रों को चुना और सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया।

माथुर कृष्ण[९]-

अलीगढ़ के हाईस्कूल के लड़के-लडत्रकियों के सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए एक अध्ययन किया गया तथा अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि जो विद्यार्थी अच्छे परिवार के थे वे अधिक बुद्धिमान थे, उनका समायोजन भी अच्छा था, अपेक्षाकृत उन बच्चों के जो निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे।

गुप्ता विशम्भर दयाल[१०] (१९६३)-

सामाजिक-आर्थिक स्थिति, परिवार का आकार एवं बौद्धिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। उपरोक्त अध्ययन करने के उद्देश्य निम्नलिखित थे।

उद्देश्य-

1. सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बौद्धिक स्तर से सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
2. सामाजिक-आर्थिक स्थिति का परिवार के आकार से सम्बन्ध ज्ञात करना।

उपलब्धियाँ-

1. सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा बौद्धिक स्तर के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
2. सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा परिवार के आकार के मध्य किसी प्रकार का सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

आर.पी. शर्मा-

आपने दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

न्यादर्श-

प्रस्तुत शोध के लिए दिल्ली के 98 अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को चुना गया।

उपकरण-

आलपोर्ट वर्णन मूल्य परीक्षण का प्रयोग किया गया

उपलब्धियाँ-

श्री शर्मा ने मध्यमान अंकों से अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के मूल्यों की प्रोफाइल तैयार की जो निम्न प्रकार से है-

मूल्य	*सैद्धान्तिक*	*आर्थिक*	*सौन्दर्यात्मक*	*सामाजिक*	*राज.*	*धार्मिक*
98 अध्यापक	26.5	24.85	22.78	27.62	24.22	24.39
56 अध्यापक	26.48	25.45	22.68	27.68	23.80	23.97
42 अध्यापिकाएं	25.71	24.05	22.90	27.60	24.70	24.95

श्री शर्मा ने निष्कर्ष निकाला कि अध्यापिकाओं के मूल्य अध्यापकों की अपेक्षा भिन्न हैं। मूल्यों की श्रेणी इस प्रकार है-

श्रेणी	1	2	3	4	5	6
अध्यापक	सामाजिक	सैद्धांतिक	आर्थिक	धार्मिक	राजनैतिक	सौन्दर्यात्मक
अध्यापिकाएं	सामाजिक	सैद्धांतिक	धार्मिक	राजनैतिक	आर्थिक	सौन्दर्यात्मक

उद्देश्य-

विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में अन्तर ज्ञात करना।

न्यादर्श-

उपर्युक्त अध्ययन मैसूर राज्य के हाईस्कूल विद्यालय के दसवीं कक्षा के 102 विद्यार्थियों पर किया गया न्यादर्श चयन में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवार के विद्यार्थियों को लिया गया।

निष्कर्ष-

श्रेष्ठ मध्यम स्तर के छात्रों ने मध्यम छात्रों की अपेक्षा अधिक अंक प्राप्त किए, निम्न स्तर के बालकों ने शैक्षिक निष्पत्ति में सबसे कम अंक प्राप्त किए, मध्यम श्रेणी के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि मध्यम ही रही।

सिंह शैल कुमार[11]-

उद्देश्य-

समूह रचना तथा सृजनात्मक क्रियाशीलता का अध्ययन।

प्रतिदर्श-

शहर के जूनियर हाईस्कूल के कक्षा 9 के 4 उच्च तथा 5 निम्न सृजनात्मक विद्यार्थियों का समूह।

निष्कर्ष-

अध्ययन के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाले परिणाम अपनी प्रारम्भिक अवस्था में होते हुए भी हमें सचेत करते हैं। शैक्षिक संरचना में आने वाला चतुर्थ परिवर्तन

छात्रों में सृजनात्मक शिक्षा, खोजों तथा प्रयोगों पर एक निश्चित बल देता है। गतीय एवं समूह संरचना सृजनात्मकता के कारक के रूप में विशेषकर कार्य अनुभव के पक्ष के प्रकरण में शैक्षिक संरचना में सुधार करेगा।

मैथय्या (१९६५)[१२]-

आपने शैक्षिक उपलब्धि के क्षेत्र में उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना की है। वह अपने अध्ययनों के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि बुद्धि, आकांक्षा स्तर, नैराश्य प्रतिक्रियाओं की दृष्टि से उच्च शैक्षिक उपलब्धि तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों में कोई अन्तर नहीं है, फिर भी अध्ययनों से यह बात स्पष्ट होती है कि इन दो समूहों की आवश्यकता उपलब्धि में अन्तर है।

ब्लैडसो-

इन्होंने 46 स्नातक अध्यापकों के मूल्यों का एक अध्ययन किया।

न्यादर्श-

न्यादर्श में 16 प्रशासक, 10 प्राथमिक तथा 20 माध्यमिक अध्यापकों को लिया गया, जिनमें 22 अध्यापक तथा 24 अध्यापिकाएं थीं।

उपकरण-

'वास्टन गलेसर्स' का 'क्रिटिकल चेकिंग' अपरेजल तथा आलपोर्ट, मूल्य परीक्षण दिया गया।

उपलब्धियाँ-

अध्ययन के आधार पर सौन्दर्यात्मक मूल्य पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में महत्वपूर्ण अन्तर पाया जाता है। अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के मूल्यों के अध्ययन में 7.03 का अन्तर था जो कि .01 स्तर पर महत्वपूर्ण था। प्रशासन तथा माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक मूल्य पर अन्तर था जो कि .05 स्तर पर महत्वपूर्ण है।

घर, चन्द्रकला (१९६५)-

इन्होंने किशोर लड़कों के कार्य मूल्यों का अध्ययन किया। इनके न्यादर्श में 11वीं और 9वीं कक्षा के विज्ञान और वाणिज्य संकाय के लड़के थे जो दिल्ली के एक स्कूल में पढ़ते थे। लड़कों का आयु विस्तार 13 से 17 साल था। इन्होंने कार्य मूल्य परिसूची का प्रयोग किया, जो 16 मूल्यों का मापन करतीं थीं।

परिणाम-

लड़कों में विभिन्न कार्य मूल्यों में से सामाजिक उच्चता और प्रसिद्धि के मूल्य अधिक पाये गये। अवकाश के समय में नेतृत्व तथा शक्ति के मूल्य कम थे। अन्य मूल्य बीच की श्रेणी में थे।

मखीजा, गोपालकृष्ण-

आपने नगर के माध्यमिक अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन किया।

न्यादर्श-

शोध के लिए आगरा तथा दिल्ली के माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं को चुना गया।

उद्देश्य-

1. अध्यापक तथा अध्यापिकाओं के मूल्यों का अध्ययन।
2. अध्यापक तथा अध्यापिकाओं के मूल्यों की तुलना।

उपलब्धियाँ-

1. नगर के माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों ने सामाजिक मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त किए।
2. अध्यापकों के मूल्यों को श्रेणीबद्ध किया गया जो निम्न प्रकार से हैं-

1. सामाजिक मूल्य	6. सौन्दर्यात्मक मूल्य
2. सैद्धान्तिक मूल्य	7. पारिवारिक मूल्य
3. स्वास्थ्य मूल्य	8. आर्थिक मूल्य
4. धार्मिक मूल्य	9. सुखवादी मूल्य
5. प्रजातांत्रिक मूल्य	10. शांतिवादी मूल्य।

3. इसके अतिरिक्त अध्यापकों की अपेक्षा सौन्दर्यात्मक मूल्य एवं सैद्धान्तिक मूल्य अध्यापिकाओं के उच्च थे, तथा धार्मिक शांतिवादी व पारिवारिक मूल्य में अध्यापकों के अंक अधिक थे।
4. शिक्षण स्थान के आधार पर दिल्ली के अध्यापकों ने शांतिवादी एवं प्रजातांत्रिक मूल्य पर आगरा के अध्यापकों से अधिक अंक प्राप्त किए।
5. जाति के आधार पर ब्राह्मण अध्यापकों ने क्षत्रियों की अपेक्षा अधिक अंक प्राप्त किए। वैश्य अध्यापकों ने सुखवादी एवं शान्तिवादी मूल्य को अन्तिम श्रेणी प्रदान की, जबकि ब्राह्मणों ने प्रथम। क्षत्रिय अध्यापकों में प्रजातांत्रिक मूल्य ब्राह्मणों की अपेक्षा उच्च रहा।

<u>एन्डरसन (१९६६)</u>[१३]-

<u>अध्ययन समस्या</u>-

चुने हुए महाविद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

<u>न्यादर्श</u>-

शोध के लिए आयु, शैक्षिक योग्यता एवं शिक्षण विषयों के आधार पर 19 माध्यमिक तथा 19 महाविद्यालयों के अध्यापकों को चुना गया।

<u>प्रणाली</u>-

उपरोक्त न्यादर्श पर आलपोर्ट तथा वर्मन मूल्य प्रशिक्षण के आधार पर दोनों समूहों में अन्तर ज्ञात किया गया।

<u>उपलब्धियाँ</u>-

प्राप्त तथ्यों के आधार पर महाविद्यालय के अध्यापकों ने सौन्दर्यात्मक मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त किए। महाविद्यालयों तथा माध्यमिक विद्यालयों के युवक अध्यापकों ने समान अंक प्राप्त किए। लेकिन दोनों समूहों के वृद्ध अध्यापकों ने अपने युवक साथियों की अपेक्षा अधिक अंक प्राप्त किए।

छः मूल्यों में से महाविद्यालयों ने पांच मूल्यों का मानक विचलन, माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों से अधिक रहे (आलपोर्ट वर्णन मूल्य परीक्षण में छः मूल्यों को रखा गया है यद्यपि सांख्यिकी के आधार पर यह विभिन्नता महत्वपूर्ण नहीं हैं।

लैथर्ड-

इन्होंने वैश्लर बुद्धि परीक्षण की सहायता से उच्च स्तरीय एवं निम्न स्तरीय सामाजिक-आर्थिक दशाओं वाले परिवारों के बच्चों की परीक्षा की और देखा कि उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तरीय परिवारों के बच्चों की औसत बुद्धिलब्धि 115 थी, जबकि निम्न स्तरीय परिवारों के बच्चों की औसत बुद्धि केवल 103 थी।

कोहली कुलवन्त-

इन्होंने कार्य करने वाली तथा कार्य न करने वाली महिलाओं की अभिवृत्ति एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

न्यादर्श-

अध्ययन में केवल 100 महिलाएं ली गई जिनमें 20 से 40 वर्ष की आयु की 50 कार्यरत एवं 50 कार्य विरत महिलाओं को चुना गया।

उपकरण-

चयनित न्यादर्श पर अभिवृत्ति मापनी एवं मूल्य मापन का प्रयोग व्यक्तिगत रूप से किया गया।

उपलब्धियाँ-

1. कार्यरत महिलाएं, कार्य विरत महिलाओं की अपेक्षा व्यवहार में अधिक प्रजातांत्रिक होती हैं। न्यादर्श में प्रत्येक व्यवसाय में लगे हुए व्यक्तियों की संख्या बहुत कम थी। इसी कारण मूल्यों के अन्दर की सार्थकता के विषय में भी कोई कल्पना नहीं की जा सकती है।

2. कार्य विरत एवं कार्यरत दोनों तरह की महिलाओं की गृहस्थ अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला चाहे कार्यरत हो या कार्य विरत, गृहस्थ कार्यों के प्रति रचनात्मक अभिवृत्ति रखती है।

कोल[१४]-

कोल ने विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा उच्च एवं निम्न बौद्धिक स्तर पर किशोरों की सम्बन्ध आवश्यकता व तिरस्कार की आवश्यकता के मध्य अन्तर ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया।

न्यादर्श-

600 हाईस्कूल के विद्यार्थी, 300 लड़के व 300 लड़कियों का बुद्धि के प्रतिशत अंक व सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर अध्ययन किया।

उपलब्धियाँ-

1. सामाजिक आर्थिक स्तर के उच्च व निम्न दोनों स्तरों पर सम्बन्ध आवश्यकता के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर था।
2. सम्बन्ध, आवश्यकता व तिरस्कार की आवश्यकता का सेक्स व बुद्धि पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया।
3. तिरस्कार की आवश्यकता पर सामाजिक आर्थिक स्तर का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया।

डैम्बला ओ.पी.[१५]-

इन्होंने एक अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य, सम्बन्ध पर किया तथा अपने अध्ययन के आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थी निम्न सामाजिक स्तर के थे, वह तुलनात्मक रूप से अधिक समायोजित थे,उस समूह के विद्यार्थियों के जो उच्च सामाजिक स्तर के थे।

एण्डरेस[१६]-

हाईस्कूल के अध्यापकों एवं प्रधानाध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन किया।

न्यादर्श-

अध्ययन 8 हाईस्कूलों के 564 अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों पर किंया गया।

उपकरण-

प्रधानाचार्यो एवं अध्यापकों पर आलपोर्ट परीक्षण प्रसारित किया गया।

***उपलब्धियाँ*-**

8 विषयों का शिक्षण करने वाले अध्यापकों एवं प्रधानाध्यापकों के आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक एवं राजनैतिक मूल्यों में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया। सामाजिक विषय के अध्यापकों ने राजनैतिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों पर अधिक अंक प्राप्त किए।

माथुर प्रतिभा-

इन्होंने व्यावसायिक विद्यार्थियों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

***उद्देश्य*-**

1. इंजीनियरिंग, मेडिकल, कानून एवं विद्यार्थी शिक्षकों के मूल्यों के ढांचों का अध्ययन करना।
2. इंजीनियरिंग, मेडिकल, कानून एवं विद्यार्थी शिक्षकों के मूल्यों के ढांचों की तुलना।

***उपकरण*-**

शोध में व्यावसायिक छात्रों के मूल्यों को मापने के लिए डा. जी.पी. शैरी एवं प्रोफेसर वर्मा की व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

***उपलब्धियाँ*-**

अभियन्ताओं ने सैद्धान्तिक मूल्य को प्रथम स्थान दिया। क्योंकि वह ज्ञान की खोज में अधिक इच्छुक रहते हैं। इनका विश्वास ज्ञान ही सत्य है। इनका विश्वास है कि उद्योगपतियों एवं नेताओं की अपेक्षा वैज्ञानिक देश की उन्नति में अधिक लाभप्रद हैं। अभियन्ताओं ने धार्मिक मूल्य को द्वितीय तथा सुखवादी मूल्य को तृतीय स्थान दिया।

खंगूर आर.सी.[१७]-

इन्होंने सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक विषयों में प्राप्त निष्पत्ति, पाठ्यगत सहगामी क्रियाओं के मध्य सहसम्बन्ध हेतु अध्ययन किया।

उद्देश्य-

1. सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं छात्रों के विभिन्न विषयों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा स्कूल के 5 विषयों, जैसे- हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विषयों में प्राप्त निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध को ज्ञात करना।
3. सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा दोनों की मुख्य पाठ्यगत सहगामी क्रियाओं, जैसे- शारीरिक, बौद्धिक, अवकाश समय में की जाने वाली क्रियाओं के मध्य सम्बन्ध को ज्ञात करना।
4. छात्रों की सम्पूर्ण शैक्षिक निष्पत्ति का सम्पूर्ण पाठ्यगत सहगामी क्रियाओं के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

न्यादर्श-

सम्पूर्ण न्यादर्श में कक्षा 9 से 130 लड़के थे, यह वे लड़के थे जिन्होंने कक्षा 8 वीं भी वहीं से पास की थी। ये बालक आगरा के विभिन्न 5 विद्यालयों से लिए गये थे। इन छात्रों की उम्र 11 वर्ष 7 महीने से 14 वर्ष 5 महीने के मध्य थी।

उपकरण एवं विधि-

1. विद्यालय से उपलब्ध रिकार्ड।
2. प्रयाग मेहता द्वारा निर्मित सामूहिक बुद्धि परीक्षण।
3. कुप्पू स्वामी द्वारा निर्मित सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी।
4. अध्यापकों द्वारा निर्मित रेटिंग स्केल।

उपलब्धियाँ-

1. सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक निष्पत्ति में महत्वपूर्ण सहसम्बन्ध होता है।
2. सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा छात्रों की सम्पूर्ण शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध होता है। पिता की शिक्षा, व्यवसाय, आय तथा छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सहसम्बन्ध पाया गया जो कि .01 स्तर पर महत्वपूर्ण पाया गया।

3. छात्रों की विभिन्न विषयों की निष्पत्ति, जैसे- अंग्रेजी, विज्ञान, गणित एवं सामाजिक विषय का सह-सम्बन्ध पिता की शिक्षा के साथ महत्वपूर्ण पाया गया। इसी प्रकार उपलब्धियों में यह भी देखा गया कि मातृभाषा में प्राप्त निष्पत्ति पिता की शिक्षा से प्रभावित होती है।

अग्रवाल रेखा-

इन्होंने उच्च एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त बालकों की उपलब्धि, समायोजन एवं मूल्यों का अध्ययन किया।

न्यादर्श-

न्यादर्श में महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय की एम.ए., बी.ए. की 15 उच्च उपलब्धि प्राप्त एवं 15 निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रायें चयन की गई। इनकी उच्च और निम्न उपलब्धि उनकी विश्वविद्यालय और बोर्ड में प्राप्त अंकों के आधार पर ज्ञात कीं।

उद्देश्य-

1. उच्च तथा निम्न उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों की बुद्धि में अन्तर ज्ञात करना।
2. उच्च एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों के समायोजन में अन्तर ज्ञात करना।
3. उच्च एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्राओं के मूल्यों में अन्तर ज्ञात करना।
4. उच्च तथा निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्राओं की बुद्धि समायोजन एवं मूल्यों के आपस में सम्बन्धों को ज्ञात करना।

परिणाम-

बुद्धि-

निम्न उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च उपलब्धि वाली छात्राओं की बुद्धिलब्धि अधिक है।

समायोजन-

सम्पूर्ण परिसूची को देखते हुए उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्राओं का समायोजन निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। परिसूची 4 विभागों में वितरित है।

पारिवारिक समायोजन-

निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्राओं की अपेक्षा उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्रायें घर के समायोजन में अधिक अच्छी हैं।

सामाजिक समायोजन-

सामाजिक समायोजन, सामाजिक परिस्थितियों में उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्राओं की अपेक्षा निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रायें अधिक अच्छी हैं।

विद्यालय समायोजन-

इसमें उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्रायें सदैव ही अच्छी समायोजित रहती हैं।

स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायोजन-

स्वास्थ्य और संवेगात्मक समायोजन में उच्च और निम्न दोनों उपलब्धि वाली छात्रायें समान रूप से समायोजित हैं।

मूल्य-

निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रायें सामाजिक, ज्ञानात्मक, पारिवारिक एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों में उच्च हैं, एवं उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्रायें सुखवादी और आर्थिक मूल्य में उच्च हैं। दोनों समूह की छात्राएं सौन्दर्यात्मक, शक्ति स्वास्थ्य आदि मूल्यों को समान महत्व देती हैं।

वैश्ले कैम्प-

इन्होंने अपने अध्ययन ''वातावरण तथा अन्य विशेषताएं प्राथमिक विद्यालय में शैक्षिक निष्पत्ति को निश्चित करती है'' में निष्कर्ष निकाला कि पारिवारिक वातावरण तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

लेवेका-

सामाजिक-आर्थिक स्तर व जातीयता का विभिन्न प्रकार से चिन्तन की योग्यता पर प्रभाव का अध्ययन।

न्यादर्श-

विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के श्वेत व काले बच्चों का चयन किया गया।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष निकाला गया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों की विभिन्न प्रकार से सोचने की योग्यता सार्थक रूप से उच्च होती है, अपेक्षाकृत निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से।

पी.सी. खरे[१८] (१९६८)-

उद्देश्य-

अध्ययन के उद्देश्य विभिन्न व्यवसायों में मूल्य संरचना के अन्तर को ज्ञात करना था तथा यह भी देखना कि क्या वह मूल्य संरचना विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर व्यवसाय सफलता की पूर्वानुमान में सहायक हो सकते हैं।

न्यादर्श-

इसमें चिकित्सा, अभियन्ता एवं अध्यापन व्यवसाय के 150 सदस्यों का न्यादर्श हेतु चयन किया गया जो कि व्यक्तित्व के विभिन्न प्रभुता सम्पन्न रूचियों में मूल्यों का मापन करते हैं।

निष्कर्ष-

अभियन्ताओं, चिकित्सकों, प्रधानाचार्यो का सैद्धान्तिक मूल्य उच्च पाया गया जहां कि वकीलों का राजनीतिक मूल्य एवं आर्थिक मूल्य उच्च पाया गया। वकीलों ने सैद्धान्तिक मूल्यों को कम महत्व दिया। चिकित्सकों, प्रधानाचार्यो एवं अभियन्ताओं ने आर्थिक मूल्य को राजनैतिक मूल्य से दूसरा स्थान प्रदान किया। वकील एवं प्रधानाचार्यो का राजनैतिक मूल्य अत्यन्त ही उच्च पाया गया जबकि चिकित्सकों के लिए यह मूल्य गौण था, सौन्दर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्य को सभी समूहों द्वारा महत्वपूर्ण नहीं समझा गया, केवल प्रधानाध्यापक ही आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों को समानता प्रदान करते हुए पाये गये।

पाल एस.के. (१९६९)-

इन्होंने इन्जीनियरी कानून, मेडिकल और शिक्षण व्यवसाय के लिए तैयारी करने वाले छात्रों के व्यक्तिगत गुणों की खोज सम्बन्धी अध्ययन किया व्यक्तिगत गुणों का एक पक्ष मूल्य व्यवस्था न्यादर्श के लिए प्रत्येक व्यवसाय के 50 छात्रों को चुना गया

जो कि इलाहाबाद में अध्ययन कर रहे थे। चारों व्यवसायों के छात्रों के मूल्यों का श्रेणी क्रम इस प्रकार है-

श्रेणी	1	2	3	4	5	6
अभियन्ता	आर्थिक	सैद्धान्तिक	राजनैतिक	सामाजिक	सौन्दर्यात्मक	धार्मिक
कानून	राजनैतिक	आर्थिक	सैद्धान्तिक	सामाजिक	धार्मिक	सौन्दर्यात्मक
आयुर्विज्ञान	सैद्धान्तिक	सामाजिक	आर्थिक	राजनैतिक	धार्मिक	सौन्दर्यात्मक
छात्र-शिक्षा	राजनैतिक	सैद्धान्तिक	आर्थिक	सौन्दर्यात्मक	सामाजिक	धार्मिक

मित्तल बी.के.[१९] (१९६९)-

आपने एक अध्ययन किया जिसका उद्देश्य था हाईस्कूल छात्रों की उपलब्धि एवं सामायोजन का अध्ययन करना। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन में समानान्तर सम्बन्ध हैं अर्थात् उपलब्धि जितनी अच्छी होगी, समायोजन उतना ही उच्च होगा।

जामूर-

इन्होंने भारतीय परिस्थितियों में अनुसंधान कार्य किया, उसका उद्देश्य था व्यक्तित्व चरों एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना। यह जानने का प्रयास किया कि व्यक्तित्व कारक स्वतन्त्र रूप से शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष-

1. छात्रों के व्यक्तित्व समायोजन पर शैक्षिक उपलब्धि निर्भर करती है।
2. शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने में व्यक्तित्व समायोजन के विभिन्न पक्ष, पारिवारिक, संवेगात्मक, स्वास्थ्य, सामाजिक, गृह आदि प्रमुख पार्ट अदा करते हैं।
3. व्यक्तित्व समायोजन के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की उपलब्धि पर स्वतंत्र रूप से प्रभाव पड़ता है।

सिंह केदार[२०]-

आपने उच्च एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त शहरी व ग्रामीण बालकों के समायोजन का अध्ययन किया व निष्कर्ष निकाला-

(क) शहरी उच्च उपलब्धि प्राप्त एवं ग्रामीण उच्च उपलब्धि प्राप्त बालकों के समायोजन में अन्तर नहीं है।

(ख) शहरी निम्न उपलब्धि प्राप्त एवं ग्रामीण उच्च उपलब्धि प्राप्त बालकों के समायोजन में अन्तर नहीं है।

(ग) उच्च उपलब्धि प्राप्त शहरी छात्राओं एवं शहरी निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्राओं का समायोजन सामान्य था।

(घ) उच्च उपलब्धि प्राप्त शहरी लड़कियों एवं लड़कों के समायोजन में भी कोई अन्तर नहीं था।

(ड) निम्न उपलब्धि प्राप्त शहरी व ग्रामीण स्कूल समायोजन में ग्रामीण छात्र अधिक अच्छे थे।

मुक्कर दत्त ईश्वर[२१]**-**

इन्होंने हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के छात्रों में बालकों की बुद्धि, सामाजिक-आर्थिक स्तर, मूल्यों और शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन विचार।

***उद्देश्य*-**

इस अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि उन बालकों के मध्य जो हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उनमें परस्पर बौद्धिक स्तर मूल्यों एवं शैक्षिक आकांक्षाओं की दृष्टि से क्या भेद है।

***न्यादर्श*-**

100 बालक कक्षा नवम् तथा दशम् श्रेणी के अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के लिए गए। इन बालकों की औसत आयु 14 से 16 वर्ष के मध्य थी।

***उपकरण एवं विधि*-**

1. एक प्रश्नावली अनुसंधानकर्त्री द्वारा हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में शैक्षिक आकांक्षाओं के मापन हेतु बनायी गयी।
2. बुद्धि मापन परीक्षण का प्रयोग किया (रेविन्स मैट्रिसस)
3. डा. कुप्पूस्वामी द्वारा निर्मित सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी।

4. आलपोर्ट एवं बर्नन द्वारा निर्मित परीक्षण मूल्यों के मापन हेतु किया गया।

उपलब्धियाँ-

1. अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के छात्रों का बौद्धिक स्तर हिन्दी माध्यम विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा उत्तम होता है।
2. अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के छात्रों का सामाजिक-आर्थिक स्तर, हिन्दी माध्यम विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा उत्तम होता है।
3. दोनों प्रकार के छात्रों में राजनैतिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों के प्रति एक समान महत्व पाया गया किन्तु सौन्दर्यात्मक मूल्य दोनों प्रकार के छात्रों में निम्न प्रकार का पाया गया।
4. दोनों प्रकार के छात्रों को विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा बहुत कम निर्देशन प्राप्त हुआ।
5. अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के छात्रों की आकांक्षाएं, हिन्दी माध्यम विद्यालय के छात्रों से उच्च पायी गयीं।

परमेश सी.आर.[२२] (१९७०)-

उद्देश्य-

सृजनात्मक छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करना।

न्यादर्श-

हाईस्कूल के 107 छात्र 153 लड़के एवं 54 लड़कियां न्यादर्श के लिए चुने गये।

निष्कर्ष-

उच्च, सामान्य और निम्न सृजनात्मक छात्रों के आर्थिक मूल्य भिन्न थे लेकिन सौन्दर्यात्मक और सैद्धान्तिक मूल्यों में भिन्नता नहीं थी। उच्च सृजनात्मक निम्न आर्थिक मूल्य के थे अपेक्षाकृत निम्न और सामान्य सृजनात्मक के।

सिंगारी प्रेम[२३] (१९७३)-

उद्देश्य-

को-एजूकेशनल एवं नान को-एजूकेशनल संस्थाओं की छात्राओं की अभिवृत्ति एवं मूल्यों का अध्ययन करना।

न्यादर्श-

100 को-एजूकेशनल तथा 100 नान को-एजूकेशनल छात्राओं को न्यादर्श के लिए चुना गया।

निष्कर्ष-

1. को-एजूकेशनल तथा नान को-एजूकेशनल छात्राओं की स्वतंत्रता एवं मेलजोल की अभिवृत्तियों में अन्तर पाया गया।
2. को-एजूकेशनल छात्राओं में उच्च आर्थिक, सामाजिक मूल्य तथा निम्न पारिवारिक, धार्मिक और शान्ति मूल्य पाये गए।
3. नान को-एजूकेशनल की छात्राओं में उच्च शक्ति, ज्ञान, सामाजिक और निम्न धार्मिक, स्वास्थ्य और पारिवारिक मूल्य पाए गए।

गुप्ता आमा[२४]-

इन्होंने उच्च निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की बुद्धि और व्यक्तित्व पर अध्ययन किया।

उपलब्धियाँ-

उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बालकों की बुद्धिलब्धि में अन्तर पाया जाता है, तथा व्यक्तित्व में भी भिन्नता पाई जाती है। तुलनातमक रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालकों की बुद्धिलब्धि का मध्यमान निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बालकों से अधिक है।

चित्रा श्रीवास्तव[२५]-

उद्देश्य-

ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मूल्यों का अन्तर करना।

न्यादर्श-

अध्ययन हेतु 180 शहरी छात्र तथा 180 ग्रामीण छात्रों का चयन किया गया।

उपकरण-

उपर्युक्त न्यादर्शपर शैरी एवं वर्मा की व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली प्रशासित की गई।

निष्कर्ष-

1. ग्रामीण छात्रों में पारस्परिक धार्मिक एवं शक्ति मूल्य, शहरी छात्रों की अपेक्षा उच्च थे।
2. शहरी छात्रों में आर्थिक, सौन्दर्यात्मक एवं सुखवादी मूल्य ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा उच्च थे।
3. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की मूल्य प्रणाली में भिन्नता है।
4. प्रजातांत्रिक मूल्य को उच्च तथा औसत उपलब्धि प्राप्त छात्रों ने समान महत्व दिया जबकि निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों ने कम महत्व दिया।
5. उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्रों ने ज्ञानात्मक मूल्य को निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों से उच्च एवं औसत की अपेक्षा महत्वपूर्ण माना है। सुखवादी मूल्य को निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों ने अन्य की अपेक्षा उच्च स्थान दिया है, पारिवारिक मूल्य को उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्रों ने निम्न एवं औसत की अपेक्षा उच्च स्थान दिया।

<u>विपिन कुमारी[२६]</u>-

उद्देश्य-

उच्च एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श-

कक्षा 10 के माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए चुना गया।

निष्कर्ष-

उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्रों ने सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, धार्मिक, पारिवारिक औसत, उपलब्धि प्राप्त छात्रों ने आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक तथा निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों ने आर्थिक, पारिवारिक सामाजिक एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों को क्रमशः प्रथम,

द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान दिया। सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, शक्ति एवं स्वास्थ्य मूल्यों पर निम्न, उच्च तथा औसत उपलब्धि प्राप्त छात्रों ने लगभग अधिक अंक प्राप्त किए। महाविद्यालय तथा माध्यमिक विद्यालय के युवक अध्यापकों ने समान अंक प्रदान किए।

रेखा सक्सेना (१९७५)[२७]-

उद्देश्य-

1. परिगणित एवं अपरिगणित जातियों के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत परिगणित एवं अपरिगणित जातियों के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन।

न्यादर्श-

न्यादर्श हेतु नवीं दसवीं ग्यारहवीं तथा बारहवीं के 220 विद्यार्थियों का 110 परिगणित तथा 110 अपरिगणित जाति के, का चयन किया गया।

निष्कर्ष-

1. परिगणित एवं अपरिगणित जाति के विद्यार्थियों ने शक्ति मूल्य को बहुत कम महत्व दिया है।
2. प्रजातांत्रिक मूल्य, सामाजिक सौन्दर्यात्मक व स्वास्थ्य मूल्यों को दोनों ही जाति के विद्यार्थियों ने उच्च स्थान दिया है।
3. प्रजातांत्रिक मूल्यों को अपरिगणित जातियों की अपेक्षा परिगणित जाति के विद्यार्थियों ने उच्च स्थान दिया है।

प्रकाश पी.[२८] (१९७५)-

इन्होंने निष्पत्ति आवश्यकता व बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया।

प्रतिदर्श-

रेवारी के नवम् कक्षा के 98 विज्ञान के छात्रों को न्यादर्श के रूप में लिया गया जिनका सामाजिक आर्थिक स्तर लगभग एक सा था।

उपकरण-

1. डा. ए.के. दत्ता व डा. के.जी. रस्तोगी के निष्पत्ति आवश्यकता परीक्षण।
2. जलोटा का मानसिक योग्यता परीक्षण।
3. छात्रों के वार्षिक परीक्षा के अंक।

उपलब्धियाँ-

1. विभिन्न बौद्धिक स्तर के बालकों की निष्पत्ति आवश्यकता में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया।
2. उच्च बुद्धि वाले व निम्न सामान्य छात्रों की निष्पत्ति आवश्यकता सामान्य छात्रों की अपेक्षा सार्थक व उच्च पाई गई।

गुप्ता विनोद[२९]-

उद्देश्य-

सृजनात्मक चिन्तन के साथ समायोजन एवं आर्थिक स्तरों के सम्बन्ध का अध्ययन।

न्यादर्श-

एकादश कक्षा के 216 छात्र।

निष्कर्ष-

सृजनात्मक चिन्तन व समायोजन में धनात्मक सहसम्बन्ध है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। अतः उच्च सृजनात्मक छात्रों का समायोजन उच्च होता है तथा निम्न सृजनात्मक छात्रों का समायोजन निम्न होता है। परिणामों का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात हुआ कि आर्थिक स्तर उच्च होने पर सृजनात्मक चिन्तन भी उच्च होता है।

जैन सुधा देवी[३०]-

उद्देश्य-

उपलब्धि आयु तथा लिंग के संदर्भ में सृजनात्मक चिन्तन का अध्ययन।

प्रतिदर्श-

आगरा शहर के 100 बालक वे 100 बालिकाएं।

निष्कर्ष-

बालक एवं बालिकाओं के सृजनात्मक चिन्तन व उपलब्धि में धनात्मक किन्तु निम्न सहसम्बन्ध है। बालकों का .05 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध तथा बालिकाओं का असार्थक है।

एस.एस. श्रीवास्तव[३१]-

उद्देश्य-

जन्मक्रम व भाई बहनों की संख्या का सृजनात्मकता से सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

न्यादर्श-

543 वाराणसी शहर के प्रमुख छात्र।

निष्कर्ष-

यह एक निश्चित वास्तविकता है कि बच्चों की संख्या कम होने पर भारतीय माता–पिता अधिक सुरक्षा देते हैं। अधिक नियन्त्रण, सम्पर्क तथा आलोचना करते हैं तथा लालन–पालन का तरीका भी परम्परागत तथा कठोर होता है, जैसे–जैसे बहन भाईयों की संख्या बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे नियन्त्रण तथा अन्य सभी बातें कम होती जाती हैं और बच्चे अधिक स्वतन्त्र होते जाते हैं। ऐसी स्थिति में सृजनात्मकता के भी विकसित होने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं। वस्तुतः प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया कि सृजनात्मकता के विकास के लिए पारिवारिक वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

सन्तोष[३२] (१९७६)-

समायोजन एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के संदर्भ में छात्रों के पारिवारिक सम्बन्ध का अध्ययन।

उद्देश्य-

1. छात्रों के समायोजन का अध्ययन करना।
2. छात्रों के परिवार के सामाजिक, आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।

3. छात्रों के माता-पिता के मध्य स्थापित सम्बन्ध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष-

1. सामाजिक आर्थिक स्तर के विभिन्न वर्ग समूह के उच्च, औसत एवं निम्न स्तर की छात्रायें माताओं के एकाग्र एवं अस्वीकारात्मक दृष्टिकोण से भिन्नता रखती है।
2. सामाजिक-आर्थिक स्तर छात्रों के समायोजन को प्रभावित करता है।
3. माता-पिता का उपेक्षित व्यवहार एवं माता का एकाग्र दृष्टिकोण छात्रों के असमायोजन के लिए उत्तरदायी पाया गया।
4. किशोर वर्ग के छात्र माता की अपेक्षा पिता के स्वीकारात्मक, अस्वीकारात्मक एवं एकाग्र दृष्टिकोण अधिक अभिव्यक्त करते हैं।

भाटिया लिली[३३] (१९७६)-

समस्या-

छात्रों की व्यावसायिक रूचियों, सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा पारिवारिक सम्बन्ध के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

उद्देश्य-

1. छात्रों की व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन करना।
2. छात्रों के पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं व्यावसायिक रूचियों का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष-

1. समाजिक-आर्थिक स्तर के विभिन्न वर्ग समूहों के छात्र माता-पिता के एकाग्र एवं अस्वीकारात्मक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति से परस्पर विभिन्नता रखते हैं।
2. छात्र अधिकतर माता-पिता द्वारा स्वीकृत रहते हैं।

एण्डरसन[३४] (१९७६)-

उद्देश्य-

महाविद्यालयों एवं माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

***न्यादर्श*-**

शोध के लिए आयु, शैक्षिक योग्यताओं एवं शिक्षण विधियों के आधार पर 19 माध्यमिक तथा 19 महाविद्यालयों के अध्यापकों को चुना गया।

***उपलब्धियाँ*-**

प्राप्त मूल्यों के आधार पर महाविद्यालयों के अध्यापकों ने सौन्दर्यात्मक मूल्यों पर अधिक अंक प्राप्त किए। महाविद्यालय तथा माध्यमिक विद्यालय के युवक अध्यापकों ने समान अंक प्राप्त किए।

गुप्ता कृष्ण[३५] (१९७६)-

***उद्देश्य*-**

जूनियर हाईस्कूल के लड़कों की सृजनात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

***निष्कर्ष*-**

1. सृजनात्मकता वर्तमान शैक्षिक उपलब्धि से बहुत कम सम्बन्धित है।
2. उच्च और निम्न सृजनात्मक लड़कों की बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. प्रतिभाशाली एवं मूढ़ लड़कों की सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्तोष-

सामाजिक आर्थिक स्तर के संदर्भ में छात्रों के पारिवारिक सम्बन्ध का अध्ययन किया।

***उद्देश्य*-**

1. छात्रों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
2. छात्राओं के परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।

***न्यादर्श*-**

ग्यारहवीं तथा बारहवीं कक्षा के छात्रों का न्यादर्श का चयन किया गया।

उपकल्पना-

1. छात्रों के समायोजन एवं उनके पारिवारिक सम्बन्धों के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।
2. छात्रों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं समायोजन के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।
3. छात्रों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं पारिवारिक सम्बन्धों के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

वर्मा लोकेश कुमार[३६]-

उद्देश्य-

विनोदी प्रकृति के विद्यार्थी सृजनात्मक हैं या असृजानात्मक।

न्यादर्श-

जम्मू नगर के हाईस्कूल के 170 बालक व बालिकायें।

निष्कर्ष-

1. सामान्यतः सृजनात्मक छात्र अधिक विनोदी थे।
2. सृजनात्मक छात्र, छात्राओं की अपेक्षा विशेषकर अधिक विनोदी थे।
3. कला की अपेक्षा विज्ञान के सृजनात्मक विद्यार्थी अधिक विनोदी थे।

रावत व अग्रवाल[३७]-

उद्देश्य-

सृजनात्मकता क्षमता का बुद्धि, आयु, लिंग, समुदाय व आर्थिक समूह के संदर्भ में अध्ययन।

न्यादर्श-

प्रस्तुत अध्ययन में 12-16 आयु वर्ग के 8वीं व 9वीं कक्षा के आगरा शहर के 300 लड़के व लड़कियों का अध्ययन किया।

उपर्युक्त न्यादर्श को भी कुछ अलग-अलग रूपों में सीमित कर दिया गया। जैसे- व्यावसायिक व अव्यावसायिक समुदाय, आगरा शहर के विभिन्न आयु वर्ग के माता-पिता का समूह।

निष्कर्ष-

1. जिन छात्रों ने बुद्धिलब्धि में उच्च प्राप्तांक प्राप्त किए थे उसके सृजनात्मक क्षमता में उच्च प्राप्तांक नहीं थे। अतः यह विचार अस्वीकृत योग्य है कि सृजनात्मकता एक अलग बौद्धिक तरीका है।
2. 13 वर्ष आयु वर्ग के लड़कों की उपलब्धि लड़कियों की अपेक्षा अधिक थी। परन्तु 13 वर्ष की आयु के पश्चात् इसके विपरीत परिणांम दृष्टिगोचर होते हैं। 16 वर्ष की आयु में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की अपेक्षा बेहतर थे।
3. सम्पूर्ण न्यादर्श में से लड़कों की सृजनात्मक क्षमता के प्राप्तांक, लड़कियों की अपेक्षा बेहतर थे।
4. लड़कों की सृजनात्मक क्षमता के प्राप्तांकों पर जाति ने कोई प्रभाव नहीं डाला। जबकि लड़कियों की सृजनात्मकता के प्राप्तांकों पर जाति का प्रभाव दिखाई पड़ा।
5. दोनों ही लिंगों में सृजनात्मक क्षमता के प्राप्तांकों पर व्यवसाय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
6. उच्च आय वर्ग को छोड़कर आय स्तर सृजनात्मक क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं डालते हैं।

श्रीवास्तव[३८]-

उद्देश्य-

सृजनात्मकता जन्म क्रम तथा बालकों में समानता की संख्या के सम्बन्ध में।

प्रतिदर्श-

वाराणसी के कक्षा नवम् व दशम् के 543 छात्र जिन पर गिल्फर्ड की ई.आई. पी.टी. प्रयोग की गई। छात्रों की मध्यमान आयु 16 से 18 वर्ष थी।

निष्कर्ष-

यह निश्चित किया गया कि अच्छे जीवन के लिए दो या तीन बालक ही अच्छे होते हैं तभी रहने के स्तर में परिवर्तन तथा बालकों की ओर ध्यान दिया जा सकता है। छोटे परिवार में ही सृजनात्मकता प्रधान वातावरण बालकों को दिया जा सकता है।

<u>कुमार गिरिजेश[३९]-</u>

***उद्‌देश्य*-**

सृजनात्मक चिन्तन का व्यक्तित्व, वेल्यू ओरिएन्टेशन तथा निष्पत्ति प्रेरणा के सम्बन्ध में अध्ययन।

***प्रतिदर्श*-**

मुजफ्फरनगर के नवम् कक्षा के विज्ञान के विद्यार्थी।

***निष्कर्ष*-**

उच्च सृजनात्मक विद्यार्थी निम्न सृजनात्मक विद्यार्थियों से अधिक निष्पत्ति प्रेरित थे।

<u>एस. बद्रीनाथ एवं एस.वी. सत्य नारायन[४०]-</u>

***उद्‌देश्य*-**

हाईस्कूल के छात्रों के सृजनात्मक चिन्तन से सम्बन्धित चरों का तुलनात्मक अध्ययन।

***न्यादर्श*-**

बंगलौर के केन्द्रीय विद्यालयों के हाईस्कूल के 114 छात्रों का चयन किया गया।

***विधि*-**

हाईस्कूल के छात्रों पर बाकर मेंहदी का सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक व अशाब्दिक परीक्षण प्रशासित किया गया तथा उनके व्यक्तित्व के सहायक तत्व, जैसे-आयु, निष्पत्ति, बुद्धिलब्धि, जन्मक्रम तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

***निष्कर्ष*-**

1. सृजनात्मक चिन्तन पर लिंगानुसार सार्थक अन्तर पाया गया, अर्थात् लड़कों की सृजनात्मकता लड़कियों की अपेक्षा उच्च थी।

2. सृजनात्मक चिन्तन पर बुद्धिलब्धि का प्रभाव पड़ता है। उच्च बुद्धिलब्धि वालों की सृजनात्मकता उच्च तथा निम्न बुद्धिलब्धि वालों की सृजनात्मकता निम्न थी।
3. जबकि अन्य चरों का जैसे– आयु, शैक्षिक निष्पत्ति, सामाजिक आर्थिक स्तर व जन्मक्रम धर्म, मातृभाषा का सृजनात्मकता से कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

मलिन[४१] (१९७८)-

आपके द्वारा व्यक्तित्व आवश्यकताओं का शैक्षिक स्तर से सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया।

न्यादर्श-

अजमेर शहर के व्यक्तिगत व सरकारी हाईस्कूल की विज्ञान शाखा की दसवीं कक्षा की 90 छात्राओं को लिया गया।

उपकरण-

1. एडबर्ड्स पर्सनल प्रिफरैन्स शिड्यूल का हिन्दी अनुवाद।
2. शैक्षिक स्तर हेतु छात्राओं द्वारा वार्षिक परीक्षा में प्राप्त किए गए प्राप्तांकों का योग लिया गया जो कि बोर्ड आफ सेकेण्डरी एग्जामिनेशन, राजस्थान, अजमेर से सम्बन्धित थे।

उपलब्धियाँ-

15 आवश्यकताओं में से 7 आवश्यकताओं का शैक्षिक स्तर से सार्थक सम्बन्ध पाया गया जो कि .01 व .05 स्तर के आधार पर व्यक्त किया गया है। इन सात सहसम्बन्ध में चार नकारात्मक है और तीन धनात्मक है।

शर्मा सावित्री[४२]-

इन्होंने छात्राओं के विभिन्न प्रकार के मूल्यों के विकास के सन्दर्भ में सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन किया।

उद्देश्य-

महाविद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं के मूल्यों का पता लगाना और उनके मूल्यों तथा माता पिता के सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

न्यादर्श-

एम.एम. कालेज, पटना की बी.ए. प्रथम वर्ष कला वर्ग की 300 छात्राओं का चयन किया गया। उनका आयु विस्तार 15-20 वर्ष था। लगभग सभी सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राओं का चयन किया।

उपकरण-

उपरोक्त न्यादर्श पर शर्मा सामाजिक-आर्थिक मापन प्रकाशित किया गया। मूल्य परीक्षण के लिए आर.पी. वर्मा द्वारा कृत व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

उपलब्धियाँ-

निम्न श्रेणी की छात्राओं की तुलना में उच्च श्रेणी की छात्राओं ने राजनैतिक मूल्यों को उच्च स्थान दिया। अन्य मूल्यों के संदर्भ में सामाजिक वर्ग व मूल्यों में कोई सार्थक सम्बन्ध प्राप्त नहीं हुआ। फिर भी उच्च सामाजिंक आर्थिक वर्ग की छात्राओं ने सामाजिक राजनैतिक व सैद्धान्तिक मूल्यों को उच्च स्थान दिया। किन्तु निम्न सामाजिक आर्थिक वर्ग की छात्राओं ने सैद्धान्तिक मूल्यों को उच्च स्थान दिया। इसी प्रकार मध्यम वर्ग की छात्राओं ने सैद्धान्तिक व सामाजिक मूल्यों को उच्च स्थान दिया। विभिन्न सामाजिक वर्ग की छात्राओं में केवल राजनैतिक मूल्यों को छोड़कर अन्य विभिन्न मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इनके आर्थिक, सौन्दर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्यों में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

गुप्ता अरूण एवं सुरेश[४३]-

इन्होंने लैंगिक भिन्नता, सामाजिक आर्थिक स्तर, परिवार के आकार व परिवार के प्रकार का बौद्धिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया।

उद्देश्य-

1. किशोरावस्था पर लैंगिक भिन्नता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

2. उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के परिवार के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर ज्ञात करना।
3. एकल एवं सम्मिलित परिवार का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
4. लघु एवं बृहद् परिवार के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श-

उपरोक्त अध्ययन बिना किसी क्रम के 13 से 17 वर्ष के 704 किशोरों पर किया गया।

उपलब्धियाँ-

1. एकल एवं सम्मिलित परिवार के किशोरों की बौद्धिक उपलब्धि में. विशेष अन्तर दृष्टिगोचर नहीं हुआ।
2. परिवार का आकार छोटा या बड़ा होने पर भी उनके किशोरों की बौद्धिक उपलब्धि में उल्लेखनीय अन्तर नहीं पाया गया।
3. किशोर वय में लैंगिक भिन्नता का प्रभाव अवश्य पड़ता है। लड़कियों की उपलब्धि लड़कों की अपेक्षा अधिक पाई गई।
4. उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों से आने वाले किशोरों की उपलब्धि मध्य एवं निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के परिवारों के किशोरों की अपेक्षा अधिक रही।

जे. विष्वा थस जयसिंह[४४]-

आपने अपराधी व्यवहार पर परिवार के आकार, जन्मक्रम एवं व्यवसाय के अभाव का अध्ययन किया।

उद्देश्य-

1. परिवार के आकार व जन्मक्रम के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
2. परिवार के आकार व रोजगार के मध्य सम्बन्ध।
3. रोजगार की प्रकृति व जन्मक्रम के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

उपलब्धियाँ -

(१) परिवार का आकार एवं जन्मक्रम-

1. तीन व्यक्तियों के परिवार में से सबसे छोटे व्यक्ति के अपराधी होने की अधिक सम्भावना है।
2. चार या पांच व्यक्तियों के परिवार में दूसरे बच्चे (सैकण्ड वन) के अपराधी होने की अधिक सम्भावना है।
3. जैसे-जैसे परिवार का आकार बड़ा होता है, वैसे ही सबसे बड़े व सबसे छोटे बच्चे में अपराधी प्रवृत्ति होने की अधिक सम्भावना होती है।

(२) परिवार का आकार एवं व्यवसाय की प्रकृति-

उत्तरदाता दो प्रमुख प्रकार के व्यवसाय के कृषि एवं अकुशल कार्यकर्ता थे, परिवार का आकार बढ़ने के साथ-साथ अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि होती जाती है। विशेष रूप से सबसे छोटे बच्चे के साथ।

(३) व्यवसाय की प्रकृति एवं जन्मक्रम -

1. अकुशल कार्यकर्ताओं के बड़े परिवारों में, सबसे छोटा व्यक्ति अपराधी प्रवृत्ति के लिए अधिक सिद्ध हुआ।
2. कृषकों के छोटे परिवारों में, दूसरा व्यक्ति अपराधी प्रवृत्ति का अधिक सिद्ध हुआ।

गेलाफर[५५] (१९०४)-

आपने निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न प्रकार की चिन्तन योग्यता में उच्च प्राप्तांक प्राप्त करने वाले लड़के व लड़कियां अधिकतर ऐसे परिवारों के थे जो कि माता पिता केन्द्रित थे। वे लड़के जिनके पिता उनके क्रिया कलापों पर अधिक नियंत्रण रखते थे, उनकी विभिन्न दिशाओं में सोचने की क्षमता तथा अभिव्यक्ति क्षमता इन छात्रों की अपेक्षा अधिक थी जिनके माता-पिता अपने लड़कों पर कम नियन्त्रण रखते थे।

दूसरी ओर जिन लड़कियों की मातायें अधिक स्वतंत्रता देती थीं, उन लड़कियों की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति क्षमता उन लड़कियों की अपेक्षाकृत अधिक थीं जिनकी मातायें कम स्वतन्त्रता देती थीं।

<u>सिरिलबर्ट (१९२५) तथा स्प्रोन्गर (१९३८)</u>-

इन्होंने अपने अध्ययनों से निष्कर्ष निकाला कि जो छात्र एवं छात्राएं निम्न सामाजिक स्तर से आते हैं, वे प्रायः असमायोजित पाए जाते हैं और उन्होंने यह भी देखा कि व्यक्ति का सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन आर्थिक स्तर से भी प्रमाणित होता है अर्थात् निम्न छात्रों का आर्थिक सामाजिक स्तर ठीक होता है। उनका संवेगात्मक सामाजिक तथा शैक्षिक समायोजन भी ठीक होता है।

<u>स्टेगनर एवं पेसिन[४६] (१९३५)</u>-

इन्होंने व्यक्ति का सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन के मापन हेतु एक परीक्षण प्रशासित किया और पाया कि जो बच्चे निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्ध रखते हैं, वे प्रायः समायोजन में प्रतिकूल पाए जाते हैं। अपेक्षाकृत उन बच्चों के जो उच्च सामाजिक स्तर से सम्बन्ध रखते हैं।

<u>स्किमिट[४७] (१९५२)</u>-

आपने लड़कों के शैक्षिक पिछड़ेपन में माता पिता की तानाशाही के प्रभाव का अध्ययन इन्वेस्टीगेशन व्यू रोल प्ले आफ पेरेन्ट्स डोमीनेंस इन फैमिली के अन्तर्गत किया, निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये–

1. लड़कों में शैक्षिक पिछड़ापन पिता द्वारा नियंत्रित परिवारों में पाया जाता है।
2. माता–पिता द्वारा बच्चे को बहुत अधिक नियंत्रण में रखने वाले परिवारों के बच्चे विद्यालयों में सामाजिक समायोजन भली भांति नहीं कर पाते हैं।

<u>कैम्पवैल[४८] (१९५२)</u>-

आपने ब्रिटिश सेकेन्डरी स्कूल के बच्चों पर अध्ययन किया तथा पाया कि पारिवारिक पृष्ठभूमि इन बच्चों की प्रगति में एक निश्चित प्रभाव डालती है। आपका विषय था– 'सेकेन्डरी स्कूल के बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन'।

<u>उद्देश्य</u>-

1. बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. बच्चों पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष में पाया गया कि पारिवारिक पृष्ठभूमि इन बच्चों की प्रगति में एक निश्चित प्रभाव डालती है।

वर्ग सिल्वर, राबर्ट एलीन[४९]-

बच्चों द्वारा अपने माता-पिता के व्यवहार का उनके सृजनात्मक से सहसम्बन्ध का अध्ययन।

उद्देश्य-

1. बच्चों द्वारा माता-पिता के व्यवहार का अध्ययन करना।
2. बच्चों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

न्यादर्श-

सृजनात्मकता तथा माता-पिता की बच्चों के प्रति स्वीकारोक्ति तथा स्वतंत्रता युक्त अभिव्यक्ति के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए चतुर्थ कक्षा के मध्यम वर्गीय उच्च बुद्धि लब्धि सम्पन्न छात्रों का चयन किया गया।

उपकरण-

1. बच्चों की सृजनात्मकता मापने के लिए "टोरेक्स टेस्ट आफ क्रियेटिव थिंकिंग"।
2. बच्चों के प्रति माता पिता के व्यवहार मापने के लिए "क्रोनेल-पेटेन्ट विहेवियर डिस्क्रियशन परीक्षण"।

निष्कर्ष-

1. लड़कों के सृजनात्मक प्राप्तांक एवं माता-पिता के स्वीकारात्मक एवं स्वतन्त्र अभिवृत्ति के स्तर में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।
2. मातायें लड़कियों के प्रति अधिक स्वीकारोत्मक दृष्टिकोण अपनाती हैं, अपेक्षाकृत लड़कों के।
3. दोनों ही समूह की तुलना करने पर यह पाया गया कि उनके पिता अपने बच्चों को माता की अपेक्षा अधिक स्वतन्त्रता देते हैं। लेकिन उनका दृष्टिकोण कम स्वीकारात्मक होता है।

<u>विलिंकस[५०] (१९५२)</u>-

आपने पारिवारिक सम्बन्धों का व्यक्तित्व समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि जो माता-पिता बालकों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं तथा अनुशासन की तानाशाही विधि अपनाते हैं। बालकों पर कड़ा नियंत्रण रखते हैं। उनके बालक आक्रामक तथा भीरू स्वभाव के बन जाते हैं। वे अपने निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। यह समस्त कारक व्यक्ति के सामाजिक असमायोजन के लिए उत्तरदायी होते हैं।

<u>स्किमिट विलियम[५१]</u>-

छात्रों के पिछड़ेपन एवं माता-पिता की तानाशाही के प्रभाव का अध्ययन।

<u>उद्देश्य</u>-

1. छात्रों के शैक्षिक पिछड़ेपन के कारणों का अध्ययन करना।
2. छात्रों पर तानाशाही के प्रभाव का अध्ययन करना।

<u>निष्कर्ष</u>-

1. शैक्षिक पिछड़ापन पिता द्वारा नियंत्रित परिवारों में पाया गया।
2. माता-पिता द्वारा बच्चों में बहुत अधिक नियंत्रण रखने वाले परिवारों के बच्चे विद्यालय में सामाजिक समायोजन भली प्रकार नहीं कर पाये।

<u>ओहियो स्टडी में पाल्डकिन अल्फेड तथा दास</u>-

इन्होंने अध्ययन किया कि पारिवारिक प्रभावों का समझना विद्यालय के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

<u>निष्कर्ष</u>-

1. बौद्धिक विकास एवं विद्यालय के क्रियाकलापों में तत्परता बालक के साथ परिवार में होने वाले व्यवहार पर काफी मात्रा में निर्भर करती है।
2. वर्गक्रम मापदण्ड से स्पष्ट होता है कि जनतांत्रिक भावनाओं को अनुगमित करने वाले परिवारों के बच्चों में मौलिकता स्व निदर्शन एवं जिज्ञासा की प्रवृत्ति निश्चित रूप से अधिक पायी जाती है।

3. उन परिवारों के बच्चे जिनकी भावनाओं का पारिवारिक सदस्य आलोचना करते हैं एवं जिन्हें कठोर नियंत्रण में रखते हैं। ऐसे बच्चे शीघ्र प्रगति नहीं कर पाते।

बरगर एवं सुकर[५२] (१९५६)-

इन्होंने अपने एक अध्ययन इकानोमिक स्टेटस एण्ड पर्सनलिटी से निष्कर्ष निकाला कि छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं संवेगात्मक समायोजन में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

डेविडसन (१९६०)-

आपने अपने अध्ययन में आत्म सम्बोधन एवं शैक्षिक उपलब्धि तथा स्वीकृत व्यवहार के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया, उन्होंने दस से सोलह वर्ष तक के छात्रों को न्यादर्श के लिए चुना।

रीडन 1955 ने भी इसी प्रकार के सहसम्बन्ध प्राप्त किए।

विसवर्ग व स्प्रिजर[५३]-

आपने 9 वर्ष के 82 उच्च प्रतिभा सम्पन्न बच्चों के परिवारों का व्यापक अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि उच्च प्रतिभा सम्पन्न बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों पर कम नियंत्रण रखते हैं तथा उनको अपने विचार प्रकट करने की अधिक स्वतंत्रता देते हैं वे बच्चों के प्रति दमनात्मक प्रवृत्ति को नहीं अपनाते अर्थात् बच्चों के बाल चपलता युक्त व्यवहार को स्वीकार करते हैं। हर समय उनसे परिपक्व व्यवहार की आशा नहीं रखते हैं।

गेट जल्स जे. डब्ल्यू[५४] और जेक्सन पी. डब्ल्यू-

उद्देश्य-

उच्च सृजनात्मक व उच्च बुद्धि युक्त किशोरों के पारिवारिक कारणों का अध्ययन।

न्यादर्श-

1726 उच्च बुद्धिलब्धि युक्त किशोरों का समूह जो सामान्य से उच्च लब्धि युक्त न थे। 1728 उच्च सृजनात्मक क्षमता युक्त किशोरों का समूह जो कि समान रूप से उच्च सृजनात्मक क्षमता युक्त न थे।

निष्कर्ष-

दोनों ही समूहों की माताओं से साक्षात्कार करके यह निष्कर्ष निकाला गया कि उच्च बुद्धि लब्धि युक्त समूह के माता-पिताओं ने अपने बाह्यकाल की आर्थिक कठिनाइयों का अधिक पुनर्स्मरण किया, तथा वर्तमान समय में भी वह अपने आपको व्यक्तिगत रूप से असुरक्षित समझते थे। ये माता-पिता अपने बच्चों के व्यवहार पर अधिक नियंत्रण रखते हैं तथा वे अपने बच्चों को सीमित मात्रा में ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता देते हैं। इसके विपरीत उच्च सृजनात्मक क्षमता वाले समूहों के परिवारों में बच्चों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जोखिम उठाने की अधिक स्वतन्त्रता दी जाती है।

क्लार्क एण्ड सोमर (१९६१)-

आपने बालकों के असमायोजन पर माता-पिता (परिवार) के प्रभाव का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि बालक के असमायोजित व्यवहार की पूर्वगामी स्थिति घर में बड़ों के साथ असन्तोषजनक सम्बन्धों का होना है।

मेकनिन[५५] (१९६२)-

शेफर एवं एनेस्टेसी ने सृजनात्मक व्यक्तियों के माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धियों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि उनके माता-पिता अधिक साधन सम्पन्न होते हैं तथा उन्हें असाधारण सम्मान देते हैं। उनकी योग्यताओं में तथा वे जो कुछ कार्य करते हैं, उसमें पर्याप्त विश्वास प्रदर्शित करते हैं। वे उन्हें खोज करने की अधिक स्वतंत्रता देते हैं तथा नियंत्रण का स्तर भी कम होता है।

मेकनिन ने अपने न्यादर्श द्वारा सृजनात्मक कलाकारों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि उनको अपने माता-पिता द्वारा अत्यधिक सम्मान दिया जाता है। उनकी योग्यताओं में माता-पिता विश्वास प्रदर्शित करते हैं। माता-पिता के द्वारा उन्हें खोज करने की तथा स्वतंत्र निर्णय लेने की अधिक स्वतंत्रता दी जाती है। इसके अतिरिक्त सांवेगिक रूप से उन पर माता-पिता का नियंत्रण नहीं होता है।

रोजेन डी. एनड्रेड[५६] (१९५९), हेलेन ग्रीव[५७] (१९७३)-

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि एक बच्चे की सृजनात्मक आवश्यकता घर के सांवेगिक वातावरण तथा उनके माता-पिता द्वारा दी गई स्वतंत्रता के प्रशिक्षण से प्रभावित होती है।

मेडीनस[५७] (१९६५)-

आपने आत्म स्वीकृत और माता-पिता व बच्चों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करने के लिए 26 लड़कियों तथा 18 लड़कों पर अध्ययन किया तथा निम्न निष्कर्ष निकाला-

1. जिन बच्चों के साथ माता-पिता के स्वीकृति सम्बन्ध थे, जिनका अपने माता-पिता के साथ तादात्म्य था उन बच्चों में आत्म स्वीकृति अधिक थी।
2. अध्ययन के द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि सामान्य संमायोजन भी माता-पिता द्वारा स्वीकृति से सकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित होता है।
3. आत्म सम्मान की भावना का सम्बन्ध पिता की अपेक्षा बच्चे के प्रति माँ द्वारा प्रदर्शित अभिवृत्ति से अधिक होता है।
4. आत्म सम्मान और माता-पिता द्वारा स्वीकृति से सहसम्बन्ध लड़कों के प्राप्तांक में लड़कियों की अपेक्षाकृत अधिक होता है।

स्पाडलिंग[५८]-

एचिवमेन्ट, क्रिएटीविटी एण्ड सेल्फ कानसेप्ट कोरिलेशन आफ टीचर प्यूपिल ट्रांजेक्शन इन एलीमेन्ट्री स्कूल के अन्तर्गत कैलीफोर्निया के दस एलीमेन्ट्री स्कूल के चौथे से छठे ग्रेड तक के बच्चों के प्रदत्त एकत्रित किये। अपने अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि आत्म स्वबोध की उच्चता तथा अध्यापक के शान्त व स्नेहपूर्ण व्यवहार में सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है तथा जब शिक्षक का व्यवहार डांट, फटकार व तिरस्कारपूर्ण हो गया तो उस समूह के छात्रों के आत्म सम्बोधन की उच्चता में ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। इसके साथ ही उपलब्धि अध्यापक के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध व्यवहार से धनात्मक सहसम्बन्धित थीं।

ई. डाडनी तथा विन्टन एस. राडले[५९]-

इन्होंने जूनियर हाईस्कूल के बच्चों के बच्चों में दुश्चिन्ता बृद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में विद्यमान सहसम्बन्ध पर अध्ययन किया। दुश्चिन्ता जानने के लिए बालक प्रत्यक्ष दुश्चिन्ता मापनी, उपलब्धि मापने के लिए बीटा और स्टैनफोर्ड उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन द्वारा यह परिणाम प्राप्त हुआ कि शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण तथा दुश्चिन्ता बृद्धि के सभी सहसम्बन्ध धनात्मक तथा महत्वपूर्ण थे

तथा दुश्चिन्ता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अधिकांश सहसम्बन्ध ऋणात्मक थे। पर ये अधिक महत्वपूर्ण नहीं थे।

डोपिंग, कैथलीन तथा सेनाल्ड टेफल (१९७३)-

माता-पिता के सम्बन्ध तथा सृजनात्मकता का अध्ययन।

उद्देश्य-

12 वर्ष के उच्च सृजनात्मकता वाले बालकों के माता-पिता की कुछ विशेषताओं का अध्ययन करना।

न्यादर्श-

7वीं कक्षा के 364 बच्चे जो बुद्धिलब्धि, लिंग की दृष्टि से समान थे, उनके माता-पिता के व्यक्तित्व का भी मापन किया।

उपकरण-

1. सृजनात्मक परीक्षण।
2. व्यक्तित्व प्रश्नावली।
3. माता-पिता व्यवहार सूची।

निष्कर्ष-

1. उच्च सृजनात्मक क्षमता वाले माता-पिता स्वयं के लिए तथा अपने बच्चों के लिए उत्तेजनापूर्ण एवं जटिल वातावरण पसन्द करते हैं।
2. नियंत्रित समूह की अपेक्षा उच्च सृजनात्मक समूह के बच्चों की माँ का अपने बच्चों के लालन-पालन के प्रति स्वभाव की तथा समानता की अभिवृत्ति पायी गयी।
3. उच्च सृजनात्मक क्षमता वाले माता-पिता अपने बच्चों को अधिक स्वतन्त्रता देते हैं।

बैथर्ड-

इन्होंने वैश्लर बुद्धि परीक्षण की सहायता से उच्च स्तरीय एवं निम्न स्तरीय सामाजिक-आर्थिक दशाओं वाले परिवारों के बच्चों की परीक्षा की ओर देखा कि उच्च

एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तरीय परिवारों के बच्चों की औसत बुद्धिलब्धि 115 थी जबकि निम्न स्तरीय परिवारों के बच्चों की औसत बुद्धि केवल 103 थी।

रोबर्ट क्यूरी-

इन्होंने अपने किये गये शोध कार्य में बच्चों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के साथ पाये जाने वाले सम्बन्ध को देखा।

उद्देश्य-

छठी कक्षा के छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

न्यादर्श-

कक्षा 6 के 360 छात्रों का चयन किया।

उपकरण-

1. बुद्धि परीक्षा हेतु कैलिफोर्निया का मानसिक योग्यता परीक्षण।
2. सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ज्ञात करने हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया।

उपलब्धियाँ-

1. जब छात्र में औसत बुद्धि से अधिक बुद्धि होती है तब वह निश्चित रूप से घरेलू वातावरण के प्रभाव से वंचित हो जाता है।
2. सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बुद्धि पर प्रभाव नहीं पाया गया।

मैल्टजर[६०]-

इन्होंने अपने अध्ययनों में उपलब्धि के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि आर्थिक कमी व्यक्ति को संवेगात्मक अशिक्षित भावना की राह दिखांती है, उसने बताया कि सबसे निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चे कुछ अच्छे आर्थिक स्तर के बच्चों की तुलना में जीवन के सभी क्षेत्रों में हानिकारक रूप में पाये जाते हैं।

डेविस एवं हैविथर्स्ट[६१]-

इन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि निम्न स्तर के बच्चे अधिक झगड़ालू होते हैं, उन्होंने यह भी पाया कि मध्य स्तर का समूह

सामाजिक दबावों को कम करने तथा अपने सामाजिक विकास की शीघ्रता से करने के प्रयत्न को महत्व देते हैं जबकि निम्न स्तर का बच्चा शारीरिक रूप से अधिक झगड़ालू बनने के लिए उत्साहित किया जाता है जिसके परिणाम स्वरूप निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बच्चे अधिक आरक्षित, दुश्मनी एवं आत्मविश्वास की अनुपस्थिति दिखाते हैं और यह सभी तत्व उसकी स्थूल निष्पत्ति को रोकते हैं।

स्मिथ[६२]-

इन्होंने अपने अध्ययनों के आधार पर देखा कि सामाजिक आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, उनके कथनानुसार सामाजिक-आर्थिक स्तरों का प्रभाव समायोजन पर किशोर अपराधों के क्षेत्र में विशेषकर देखने योग्य होता है।

बर्ट सिटिल एवं एन.एन. स्प्रिंगर[६३]-

इन्होंने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि जो छात्र या छात्रायें निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से आते हैं वह प्रायः असमायोजित पाये जाते हैं और यह भी देखा गया है कि व्यक्ति की संवेगात्मक परिपक्वता, उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक निष्पत्ति भी ठीक होती है।

नौरमैन[६४] (१९६६)-

आपने बीजगणित में चिंता बुद्धि और उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया।

उद्देश्य-

बीजगणित में चिंता, बुद्धि और उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

न्यादर्श-

अध्ययन हेतु 23 छात्र व छात्राओं को चुना गया।

उपकरण-

1. मानसिक योग्यता परीक्षण।
2. बच्चों का मैनीफैस्ट चिन्ता परीक्षण।
3. विद्यार्थियों के मासिक परीक्षा के अंक।

उपलब्धियाँ-

1. छात्र व छात्राओं की चिंता व उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं पाया गया। इसके कारण मापन की विश्वसनीयता भी सन्तोषजनक नहीं पाई गई।
2. छात्रों में प्रेरणात्मक और उपलब्धि के बीच अल्प सहसम्बन्ध पाया गया परन्तु बुद्धि व उपलब्धि में नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
3. बीजगणित में छात्राएं चिन्तन बहुत कम करती पाई गई।

बूलोमाविस्ट जोन[६५] (१९६६)-

इन्होंने स्वीडन कोर बोरेटिंग एवीडेन्स में पाया कि छोटे परिवारों के बच्चों की अपेक्षाकृत बड़े परिवारों के बच्चे अधिकतर असफल होते हैं।

निष्कर्ष-

1. पारिवारिक वातावरण का बच्चे की सफलता पर बहुत प्रभाव पड़ता है।
2. झगड़ालू, विघटित परिवारों के बच्चे प्रगति कर सकने में असमर्थ रहते हैं।
3. माध्यमिक कक्षाओं में शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े बच्चे प्रायः उन परिवारों में पाये जाते हैं जिनमें बच्चों को बौद्धिक कार्य को करने हेतु उत्तेजना एवं प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है।

रेवेना हेलसन[६६]-

उद्देश्य-

माता-पिता के मूल्यों व भाई बहनों की विशेषताओं का सृजनात्मकता, उपलब्धि व रूचियों पर प्रभाव का अध्ययन।

न्यादर्श-

135 उच्च कक्षाओं के प्रयोज्य व 99 ऐसे प्रयोज्यों का चयन किया गया जो कि उपाधि प्राप्त कर चुके थे।

निष्कर्ष-

1. प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि सृजनात्मक प्रयोज्य तथा उनके भाई-बहनों का अर्न्तज्ञान दृष्टिकोण की जटिलता तथा अन्य सृजनात्मकता से सम्बन्धित ज्ञानात्मक गुण अपेक्षाकृत उच्च होते हैं।

2. सृजनात्मक प्रयोज्यों को यदि अन्य प्रयोज्यों की अपेक्षाकृत अधिक प्रभावपूर्ण स्वच्छता मिलती है तो प्रकृति तथा सामाजिक कार्यों में आत्मबल में अधिक प्राप्तांक प्राप्त करते हैं।

लिटिन एवं काटन[६७]-

उद्देश्य-

विभिन्न दिशा में चिन्तन करने की योग्यता, सामाजिक आर्थिक स्तर में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

निष्कर्ष-

विभिन्न दिशा में चिन्तन करने की योग्यता एवं सामाजिक आर्थिक स्तर में 248 सहसम्बन्ध पाया गया जिससे हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सृजनात्मक चिन्तन कुछ सीमा तक सामाजिक आर्थिक स्तर पर निर्भर करता है।

❋❋❋❋❋❋❋

REFERENCES

(1) वानडेलन, डी.बी. तथा माथर जे. डब्ल्यू. अन्डरस्टैडिंग एजूकेशनल रिसर्च एम.सी. ग्रो हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।

(2) Helper, M.M. "Learning theories and self concepts, Abnormal Socio, Psychology 1951-55, page 184".

(3) विष्ठा जी.एस., सामाजिक-आर्थिक दशाओं का शैक्षिक आकांक्षाओं तथा शैक्षिक योग्यताओं के साथ सम्बन्ध।

(4) सिसिरैली- 1955, जरनल आफ रिसर्च, एजूकेशन साइकोलोजी।

(5) परमेश्वरम् ई.जी. (1956)- जनरल आफ वोकेशनल एजूकेशन गाइडेन्स वाल्यूम 2, पृष्ठ 237-335

(6) स्प्रिंग बैल्ट एवं अन्य 1959- जरनल आफ साइकोलोजी।

(7) राय.पी.एन.- ए कम्परेटिव स्टडी आफ ए लो डिफरेन्शियल पर्सनेल्टी कोरिलेशन आफ लो एण्ड, हाई अचीवमेन्ट।

(8) माथुर कृष्ण- इंडियन साइकोलोजिकल बुलेटिन 36

(9) गुप्ता विशम्भर दयाल- एम.एड. परीक्षा के लिये किया गया शोध कार्य 1963

(10) सिंह शैल कुमार- पाइलिट रिपोर्ट बुद्ध पी.जी. कालेज, देवरिया।

(11) मैथय्या, बी.सी. (1965)- सम कोरिलेटस आफ एचीवमेन्ट मोटिव एमंग हाई एण्ड लो एचीवर्स इन दी स्कालिस्टक फील्ड आफ जरनल आफ साइकोलोजिकल रिसर्च 1965, पृष्ठ 189-91

(12) एण्डरसन- दि जरनल आफ एजूकेशन रिसर्च, वाल्यूम 2, अक्टूबर 1966, पृष्ठ 281

(13) कोल लोकेश- सामाजिक-आर्थिक स्तर व बुद्धि के उच्च निम्न स्तर पर किशोरों की तिरस्कार आवश्यकता व सम्बन्ध आवश्यकता में तुलना, जनरल आफ साइकोलोजिकल रिसर्च, मद्रास।

(14) डेम्बला ओ.पी.- आगरा विश्वविद्यालय को प्रस्तुत एक लधु शोध प्रबन्ध।

(15) एण्डरेस- दि जरनल आफ एजूकेशन रिसर्च, वाल्यूम 2, अक्टूबर 1966

(16) खंगूर आर.सी.- सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक विषयों में प्राप्त निष्पत्ति पाठ्यगत सहगामी क्रियाओं के मध्य सम्बन्ध हेतु अध्ययन। 1968 एम.एड. डिजरेटेशन, महिला प्रशिक्षण विद्यालय, आगरा।

(17) पी.सी. खरे- ओकोपेशनल डिफ्रेन्सेज इन लाइफ वेल्यूज, इण्डिया साइकोलोजिकल रिव्यू- 1968, वोल्यूम 8, नवम्बर 2, पृष्ठ 108

(18) वी.के. मित्तल (1969)- एडजैस्टमेन्ट एण्ड अचीवमेन्ट आफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स।

(19) केदार सिंह- ए स्टडी आफ एडजस्टमेन्ट आफ हाई एण्ड लो एचीवर्स 1970-71, आर.बी.एस. कालेज आफ एजूकेशन, आगरा।

(20) मुक्कर दत्त ईश्वर- हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के छात्रों में बालकों की बुद्धि, सामाजिक-आर्थिक स्तर मूल्यों और शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन।
अप्रकाशित, एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध आगरा विश्वविद्यालय, महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, आगरा 1970

(21) सी.आर. परमेश- साइकोलोजिकल स्टडीज, 1970, 15/21 पृष्ठ 108-112

(22) प्रेम खंगारी- एम.एड. डिजरटेश्न, फरवरी 1973, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

(23). गुप्ता आभा- उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के व्यक्तित्व और बुद्धि का अध्ययन 1973, एम.एड. डिजरटेशन, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

(24) चित्रा श्रीवास्तव- ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड. डिजरटेशन 1974, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

(25) श्रीवास्तव विपिन कुमार- उच्च एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना। एम.एड. डिजरटेशन, 1974, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

(26) रेखा सक्सेना- परिगणित एवं अपरिगणित जाति के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड. डिजरटेशन, आगरा यूनिवर्सिटी।

(27) प्रकाश पी.- ए रिसर्च जरनल आफ एजूकेशन एण्ड साइकोलोजी वाल्यूम 5, नं. 12, 1975, पृष्ठ 8

(28) गुप्ता विनोद 1975- डिजरटेशन एम.एड. आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

(29) जैन सुधादेवी 1975-76- डिजरटेशन एम.एड. आगरा यूनीवर्सिटी, आगरा।

(30) "Creativity as related to birth order and no. of sibblings," by S.S. Srivastava- Indian educational review.

(31) सन्तोष (1976)- एम.एड. डिजरटेश्न, आगरा यूनिवर्सिटी, आगरा।

(32) भाटिया लिली (1976)- एम.एड. डिजरटेशन, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

(33) एण्डरसन 1976- जरनल आफ एजूकेशनल रिसर्च, वाल्यूम नं. 2, अक्टूबर 1976

(34) गुप्ता कृष्ण 1976- एम.एड. डिजरटेशन, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

(35) वर्मा लोकेश कुमार- कुरूक्षेत्र यूनीवर्सिटी, राजस्थान बोर्ड जरनल आफ एजूकेशन, अक्टूबर-दिसम्बर 1977, वाल्यूम 8

(36) एम.एस. रावत व सरोज अग्रवाल- इंडियन साइकोलोजिलक़ल रिव्यू-1977, वाल्यूम 14, नं. 2, पृष्ठ 36-40

(37) श्रीवास्तव एस.एस.- फैकल्टी आफ एजूकेशन बी.एच.यू.- इंडियन साइकोलोजिकल रिव्यू 1977, वाल्यूम 14, नं. 2, पृष्ठ 1-4

(38) कुमार गिरिजेश- हिन्दू कालेज मुरादाबाद इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, वाल्यूम नं. 2, एप्रिल 1978

(39) एस. बद्रीनाथ, एस.बी. सत्यनारायन- सेन्ट्रल स्कूल, बंगलौर, शिक्षा विभाग (बंगलौर यूनीवर्सिटी), क्रिएटिविटी न्यूज लेटर, वाल्यूम 7, नं. 8, (1978)

(40) मलिक जे.एस.- दी राजस्थान बोर्ड जरनल आफ एजूकेशन, जनवरी-मार्च, 1978, पृष्ठ 43-45

(41) शर्मा सावित्री, छात्राओं के विभिन्न प्रकार के मूल्यों के संदर्भ में सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन, एशियन जरनल आफ साइकोलोजी एण्ड एजूकेशन, जनवरी 1978, वाल्यूम 3, नं. 1, पृष्ठ 21-29

(42) गुप्ता अरूण एवं सुरेश शर्मा- एकेडेमिक एचीवमेन्ट एज ए फंक्शन्स आफ सेक्स, सोशियो इकोनोमिक स्टेट्स, फैमिली साइज एण्ड फैमिली टाइप, 'दि राजस्थान बोर्ड जरनल आफ एजूकेशन, जुलाई-दिसम्बर 1982, वाल्यूम 18, नं. 3-4, पृष्ठ

(43) प्रो. जे. विष्वा थस जयसिंह– अपराधी प्रवृति पर परिवार के आकार, जन्मक्रम एवं व्यवसाय का प्रभाव, एशियन जरनल आफ साइकोलोजी एण्ड एजूकेशन 1983, वाल्यूम 11, नं. 1, पृष्ठ 19–24

(44) गेलाफर (1904)– प्रोडक्टिव थिंग ए रिव्यू आफ चाइल्ड डबलपमेण्ट रिसर्च।

(45) स्टेगनर आर. एण्ड पेसिन– इकोनोमिक स्टेट्स एण्ड पर्सनलिटी मैक ग्रो हिल बुक कं., न्यूयार्क।

(46) स्किमिट विलियम सी (1952)– इनवेस्टीगेशन व्यू डाल प्ले आफ पेरेन्ट्स डामीनेशन इन फैमिली, जे. मास्टर्स थीसिस इन्वर यूनीवर्सिटी 1952

(47) कैम्पवैल डब्ल्यू 1952– ब्रिटिश जनरल ऐजूकेशन साइकोलोजी, वाल्यूम 22, पृष्ठ 83–100

(48) वर्ग सिल्वर, राबर्ट ऐलीन, पी.एच.डी. थीसिस रिपोर्ट मैकमिलन यूनीवर्सिटी।

(49) Wilikans A. Quoted from Harlock. Elezabeth,
B. Adolescent development N.Y. Mc. Grow Hill, 1952.

(50) स्किमिट विलियम सी 1952– इनवेस्टीगेशन व्यू डाल प्ले आफ पेरेन्ट डीमेन्स इन फेमिलीज मास्टर थीसिस इन्वर यूनिवर्सिटी।

(51) वरगर एण्ड सुकर रिव्यू आफ एजूकेशनल रिसर्च (1971) वाल्यूम 41, चेप्टर आन स्कूल एचीवमेन्ट एण्ड डेलीवकेन्सी।

(52) विसवर्ग एण्ड स्प्रिंजर के.जे. (1961)– एन्वार्यमेन्टल फैक्टर्स इन क्रिएटिव फक्शन एचीव्स आफ जनरल साइकेट्री (पृष्ठ 564–74)

(53) गेट जल्स जे. डब्ल्यू और जेवसन पी. डब्ल्यू– अमेरिकन सोशियोलोजिकल रिव्यू 1961, पृष्ठ 351–357

(54) मैकनिन, डी.डब्ल्यू. (1962)– द नेचर एण्ड द नेचर आफ द क्रिएटिव टेलेन्ट।

(55) रोजेन डी. एनड्रेड (1954), हेलेन ग्रीव (1973)– जरनल आफ वाल्यूम (1974)

(56) जीन आर. मेडीनस– एडोलोसेन्ट्स सेल्फ एक्सेपटेन्स एण्ड परसैपशन आफ देअर पेरेन्ट्स। जरनल आफ काउन्सेलिंग।

(57) स्पाडलिंग आर एचीवमेंट, क्रिएटीविटी एण्ड सेल्फ कान्सेप्ट, कोरिलेटस आफ टीचर प्यूपिल, न्यूयार्क हाईकोर्ट, ब्रास एण्ड बर्ल्ड 1964, पृष्ठ 313

(58) डाडनी ई. तथा राडवे विन्टन एन- इ जनरल आफ एजूकेशन रिसर्च आई.एन. सी. आडम्बर एजूकेशनल सर्विस, दिसम्बर 1966

(59) मैल्टजर एम.- इकानोमिक सिक्यूरिटी एण्ड चिल्ड्रन्स एटीट्यूट्स टू पेरेन्ट्स।

(60) डेविथ एवं हैविथर्स्ट- एडोलिसेन्ट करेक्टर एण्ड पर्सनलिटी न्यूयार्क जौहस किलै एण्ड संस, सन् 1947, पृष्ठ 96

(61) स्मिथ एच.सी.- दि जनरल आफ एजूकेशनल साइकोलोजी, वाल्यूम 36, सन् 1945

(62) बर्टीसिटिल एवं एन.एन. स्प्रिंगर, यूनीवर्सिटी आफ लन्दन ई.सी. एण्ड स्प्रिंगर एन.एन. जर्नल आफ जरनल सोशल स्टेट्स आन दी इकोनामिक्स सैटेविल्टी आफ चाइल्ड।

(63) नोरमैन एम.सी.- दी जरनल आफ एजूकेशन रिसर्च टेम्पिल यूनीवर्सिटी वाल्यूम 70, नं. 2, अक्टूबर 1966, पृष्ठ 10-13

(64) बूलोमाविवस्ट जोन (1957)- सम स्पेशल फैक्टर्स इन स्कूल, फेमिलियर इन्टर नेशनल एजूकेशन रिसर्च 3, 1957

(65) रेवेना हेलसन, इन्स्टीट्यूट आफ परसनेल्टी एसेसमेन्ट एण्ड रिसर्च यूनीवर्सिटी आफ कैलीफोरनिया- बारकले जरनल आफ परसनेलिटी, वाल्यूम 36, नं. 1, पृष्ठ 591 (1968)

(66) लिटिल एवं काटन (1969) ब्रिटिश जरनल आफ एजूकेशनल साइकोलोजी, पृष्ठ 238-40

******

अध्याय-3

अध्ययन की योजना एवं प्रक्रिया

अध्याय- तृतीय

अध्ययन की योजना एवं प्रक्रिया

शोध कार्य उस जलपोत की भांति है जो अति दूर के गंतव्य स्थल की ओर जाने के लिए बन्दरगाह से चलता है। यदि आरम्भ से ही दिशा निर्धारण के सम्बन्ध में थोड़ी सी त्रुटि हो जाय तो भटक जाने की अधिक सम्भावना रहती है। चाहे वह जलपोत कितनी ही कुशलता से क्यों न बनाया गया हो और कप्तान कितना ही योग्य क्यों न हो।

अनुसन्धान सदैव एक समस्या से प्रारम्भ होता है तथा इसका उद्देश्य किसी नये तथ्य की खोज करना तथा वैज्ञानिक प्रविधि द्वारा समस्या से परिणामों को निकालना है। यद्यपि शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के लिए प्रदत्तों को एकत्र करने की अनेकों विधियां हैं किन्तु विधि का चुनाव समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है।

प्रत्येक अध्ययन का विशिष्ट उद्देश्य होता है फिर भी योजना एवं प्रक्रिया एक आवश्यक पद है, अनुसंधानकर्ता अपने अनुसंधान प्रारूप के अनुसार कार्य करता है। यह प्रारूप प्रदत्त को एकत्रित करने तथा उसका विश्लेषण करने के लए परिस्थितियों का एक क्रम है।

अध्ययन की योजना पर कार्य करने के क्रम में अध्ययन के उद्देश्यों तक पहुंचने के लिए निम्न विधि से कार्य किया गया है। इस शोध का विषय है-

'जनपद फिरोजाबाद के लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।'

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा उपर्युक्त समस्या के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित योजनाओं पर विचार किया गया है-

1. विधि
2. न्यादर्श का चयन
3. उपकरण का चयन
4. उपकरण का प्रशासन
5. प्रदत्तों का संकलन
6. प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यकीय विधियाँ।

विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। आदर्श मूलक शब्द में सामान्य अथवा विशिष्ट स्थितियों या व्यवहारों के निर्धारण का अर्थ निहित रहता है। इस प्रकार की विधि में मुख्य रूप से प्रत्ययों का मापन करने हेतु अपने चयन किए गए कारकों के अनुसार एक प्रतिनिधित्वकारी न्यादर्श का चयन किया जाता है तथा उससे सम्बन्धित विश्वसनीय एवं वैध परीक्षण का चयन कर परीक्षण को प्रशासित किया जाता है। परीक्षण मैन्युअल के आधार पर व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं की व्याख्या तथा विश्लेषण किया जाता है तथा उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों के आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण किया जाता है, मानक निकाले जाते हैं तथा प्रदत्तों की व्याख्या की जाती है एवं परिणाम व निष्कर्ष निकाले जाते हैं। प्रस्तुत विधि वर्तमान व्यवहारिक समस्याओं का निराकरण करती हैं।

न्यादर्श का चयन :

किसी भी शोध के लिए उपयुक्त आकार का प्रतिनिधित्वकारी न्यादर्श ही उपयुक्त समझा जाता है। क्योंकि सम्पूर्ण समष्टि का अध्ययन करना असम्भव होता है।

प्रतिदर्श एक समष्टि का वह अंश होता है जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है।

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद फिरोजाबाद के लघु एवं बृहद् परिवार की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि

पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए शोधकर्त्री ने फिरोजाबादं जनपद के विभिन्न क्षेत्रों के विद्यालयों में कक्षा एकादश की छात्राओं का चयन किया। छात्राओं का चयन उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर किया गया।

ज्ञानेन्द्र पी. श्रीवास्तव द्वारा रचित सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया। यह मापनी लगभग 1200 छात्राओं पर प्रशासित की गई जिसमें से उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राओं के प्रदत्तों को छोड़ दिया गयाऔर उनमें से लघु एवं बृहत परिवार की छात्राओं को छांट लिया गया तथा 900 छात्राएं जो मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर की थीं, उनमें से 600 लघु एवं बृहद् परिवार की छात्राओं को छांट लिया गया।

लघु एवं बृहद् परिवार की छात्राओं को अलग-अलग छांटने के लिए शोधकर्त्री ने प्रशासित परीक्षण में भाई बहनों की कुल संख्या इस वाक्य को लिख दिया।

शोधकर्त्री ने निम्नलिखित शिक्षा संस्थाओं से न्यादर्श हेतु छात्राओं का चयन किया।

संस्था का नाम	*कक्षा*	*छात्राओं की संख्या*	
		लघु परिवार	*बृहद् परिवार*
1. बी.डी.एम.एम. गर्ल्स इन्टर कालेज, शिको.	11	60	40
2. भगवती देवी पालीवाल गर्ल्स इ.का., शिको.	11	34	50
3. एम.जी. गर्ल्स इ.का., फिरोजाबाद	11	45	55
4. दाऊदयाल गर्ल्स इ.का., फिरोजाबाद	11	55	55
5. उ.रे. राजकीय गर्ल्स इण्टर कालेज, टूण्डला	11	50	50
6. जनता इ.का., जसराना	11	55	50
योग		300	300

उपकरण का चयन :

उपकरण अनुसंधान कार्य में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। यदि उपकरण का चयन बुद्धिमतापूर्वक किया जाता है तथा उपकरण पर्याप्त वैध तथा विश्वसनीय होते हैं, तो प्रदत्तों द्वारा निकाले गये निष्कर्षो एवं परिणामों का वैध एवं

विश्वसनीय होना स्वाभाविक ही है। अतः अध्ययन हेतु आवश्यक प्रदत्तों का संकलन करने के लिए एक अच्छे, वैध एवं विश्वसनीय उपकरण का होना नितान्त आवश्यक है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने अपने शोधकार्य में चार उपकरणों का प्रयोग किया है। प्रथम- सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी; द्वितीय- पारिवारिक सम्बन्धी सूची, तृतीय- व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली, चतुर्थ- सृजनात्मक योग्यता मापक परीक्षण का प्रयोग किया। शैक्षिक उपलब्धि का प्रदत्तों के लिए विद्यालयीय छात्राओं द्वारा उत्तर प्रदेश बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांकों को लिया है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी :

सामाजिक-आर्थिक स्तर मापन हेतु समय-समय पर अनेकों परीक्षणों का निर्माण हुआ है। शोधकर्त्री द्वारा अपने अध्ययन में ज्ञानेन्द्र पी. श्रीवास्तव द्वारा रचित, सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया है।

उपकरण का वर्णन : (परिशिष्ट संख्या -I)

इस सम्पूर्ण परीक्षण में 8 पद हैं, और प्रत्येक पद में 2 से लेकर 8 तक उप पद हैं, इस सूची का उद्देश्य परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर का निर्धारण करना है।

यह प्रश्नावली निम्नलिखित घटकों के सम्बन्ध में सूचनाएं एकत्रित करती है।

1. पिता की शिक्षा
2. पिता का व्यवसाय या पेशा
3. आर्थिक सूचांक- जैसे परिवार की मासिक आय।
4. सांस्कृतिक सूचांक- जैसे दैनिक समाचार, पत्र पत्रिकायें, पिता की किसी क्लब में सदस्यता, आदि।
5. मनोवैज्ञानिक सूचांक, जैसे- सामाजिक प्रतिष्ठा के विचार।

प्रशासन एवं प्रदत्त अभिलेखक :

उचित रूप से प्रशासित परीक्षण द्वारा ही वैध एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत सामाजिक आर्थिक स्तर परीक्षण का प्रशासन सामूहिक रूप से किया

गया, परीक्षण सामग्री व्यवस्थित की। प्रयोज्यों को आराम से बैठाया; तथा निम्न निर्देश दिए गये।

निर्देश :

शोधकर्त्री ने प्रस्तुत परीक्षण में छात्राओं को निम्न निर्देश दिए-

1. आप अपना नाम, आयु, यौन, दिनांक, स्कूल, कालेज, कक्षा, सेक्शन, रौल नम्बर तथा घर का पता अपनी उत्तर पुस्तिका में उचित स्थान पर लिखें।
2. इस मापनी में आपको आपके परिवार की परिस्थितियों से सम्बन्धित कुछ वाक्य दिए गए हैं। इन वाक्यों में उन्हीं बातों का उल्लेख है जो, आप के पिता के व्यवसाय से सम्बन्ध रखते हैं। इन वाक्यों का सम्बन्ध आपकी बुद्धि परीक्षा से नहीं है बल्कि कुछ तथ्यों की जांच से है।
3. परीक्षण में दिए हुए प्रत्येक प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़िए। इस प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न के कई सम्भावित उत्तर दिए गए हैं जिनमें से केवल एक उत्तर को चुनकर आप उसके सामने वाले चौकोर घेरे (□) में × (गुणा) का चिह्न लगा दें। यदि पिता न हों तो अपने अभिभावक या संरक्षक के सम्बन्ध में सूचना दें।
4. आपको कोई भी प्रश्न नहीं छोड़ना है। बल्कि सभी प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है।

समय :

यद्यपि इस प्रश्नावली को पूरा करने के लिए कोइ निश्चित समय सीमा नहीं है लेकिन इसे 30-35 मिनट में पूरा करना है।

अंकों की गणना :

शोधकर्त्री द्वारा प्रत्येक छात्रा की सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी की गणना इस मापनी के संदर्भिका में दिए गए निर्देशानुसार की गई, साथ ही इसके लिए फलांकन कुंजी को भी काम में लाया गया। इसमें 34 या उससे अधिक अंकों वाली छात्राओं को उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाली छात्रायें माना है। 16-33 तक के प्राप्तांकों की छात्राओं को मध्यम वर्गीय सामाजिक-आर्थिक स्तर वाली छात्राएं माना। 6-15

अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाली छात्राओं की श्रेणी में रखा है। इस प्रकार प्रत्येक पद की सभी पूर्तियों का कुल योग निकाल लिया।

विश्वसनीयता :

सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी बहुत अधिक विश्वसनीयता प्रदर्शित करती है। मापनी की आन्तरिक सामंजस्यता को निर्धारित करने के लिए और इस मापनी के अन्तिम रूप को परखने के लिए 100 विद्यार्थियों पर इसका परीक्षण किया गया। विभिन्न चरों के बीच में सहसम्बन्ध गुणांक का पता लगाने के पश्चात् यह सिद्ध हुआ कि मापनी बहुत अधिक सामंजस्यपूर्ण है।

इस प्रयोग को 100 विद्यार्थियों पर 4 सप्ताह के अन्तराल पर दो बार प्रशासित किया गया जिसका सह सम्बन्ध गुणांक .94 था।

वैधता :

इसकी वैधता की सत्यता को सिद्ध करने के लिए विभिन्न भारतीय और विदेशी अध्ययनों को प्रयोग में लाया गया। मापनी के प्रत्येक पद को विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा जांचा गया। इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि यह मापनी बहुत अधिक वैध है।

पारिवारिक सम्बन्धी सूची (परिशिष्ट संख्या -२)

उपकरण वर्णन :

प्रस्तुत पारिवारिक सम्बन्ध सूची बच्चों के माता पिता के सम्बन्ध का मापन करती है। प्रस्तुत मापनी भारतीय हिन्दी भाषी कालेज व विद्यालय के विद्यार्थियों के अभिप्राय से निर्मित की गई है।

इस सूची में 150 पद हैं। प्रत्येक पद के उत्तर में छात्राओं को सत्य या असत्य स्तम्भ में से एक पर सही निशान (√) लगाना है तथा दूसरे को रिक्त छोड़ना है। इसमें 52 स्वीकारोक्ति पद 47 एकाग्रता पद तथा 57 अस्वीकारोक्ति के पद हैं।

प्रस्तुत मापनी में पारिवारिक लगाव का तीन प्रकार से मापन होता है जिसका वर्णन निम्न प्रकार से है।

स्वीकारोक्ति :

स्वीकारोक्ति से तात्पर्य है, माता पिता द्वारा अपने बच्चों को परिवार का पूर्ण सदस्य मानना जो एक निश्चित मात्रा में स्वतन्त्रता चाहता है और उत्तरदायित्व ग्रहण करने के लिए क्षमता रखता है। ऐसे माता पिता जो अपने बच्चों के प्रति स्वीकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं वे अपने बच्चों को अधिक से अधिक अपनी योग्यता व क्षमताओं का विकास करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं

एकाग्रता :

एकाग्रता माता पिता की वह अभिवृत्ति है जो कि वे अपने बच्चों को दिशा व नियंत्रण के लिए अपने समय व शक्ति को उचित मात्रा में लगाते हैं एकाग्र माता पिता अपने बच्चों को उसकी आयु के अनुपात में छोटा समझते हैं तथा बच्चों के संदर्भ में सभी निर्णय स्वयं लेते हैं। वे अपने बच्चों को अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करते हैं तथा बच्चों से उनके क्षमताओं से अधिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उनसे अपेक्षा से अधिक आशा करते हैं।

अस्वीकारोक्ति :

अस्वीकारोक्ति से तात्पर्य है, माता पिता द्वारा अपने बच्चों की उपेक्षा करना। कुछ माता पिता अपने बच्चों की सदैव उपेक्षा करते हैं तथा बच्चों की क्रियाओं में रूचि नहीं लेते। वे अपने बच्चों के साथ बहुत कम समय व्यतीत करते हैं तथा बच्चों की शारीरिक आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने में भी असफल रहते हैं, एवं बच्चों को अपनापन नहीं दे पाते।

पारिवारिक सम्बन्ध सूची का उद्देश्य :

विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों का अपने माता-पिता से उपर्युक्त तीनों सम्बन्धों में से किस श्रेणी का सम्बन्ध है तथा किस प्रकार यह सम्बन्ध उनके जीवन मूल्यों, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

उपकरण का प्रशासन एवं प्रदत्त अभिलेखन :

किसी भी परीक्षण की विश्वसनीयता तथा वैधता परीक्षण के प्रशासन पर निर्भर करती है। यह मापनी व्यक्तिगत एवं समूह में समान सुगमतापूर्वक प्रशासित की जा सकती है। प्रस्तुत मापनी को शोधकर्त्री ने समूह में प्रशासित किया तथा सभी निर्देश स्पष्टतः उच्चारित किए गए जिसके अनुसार ही छात्राओं ने परीक्षण पूर्णरूपेण पूरा किया एवं शोधकर्त्री ने इसी मध्य निरीक्षण किया कि सभी छात्राओं ने प्रथम पृष्ठ ठीक से पूरा किया या नहीं। छात्राओं को निर्देश दिया गया है कि वे सभी प्रश्नों का उत्तर सही दें।

पाठ्य निर्देश :

शोधकर्त्री ने छात्राओं को निर्देश दिया कि प्रस्तुत सूची में निम्नलिखित कथन आप तथा आपके माता पिता के मध्य अतीत तथा वर्तमान में स्थापित सम्बन्ध प्रकट करते हैं। प्रत्येक कथन को पढ़िए एवं निश्चय कीजिये कि क्या यह कथन आपके सम्बन्ध का वास्तविक वर्णन करता है? यदि करता है तो आप प्रश्न विशेष के क्रमांक के सम्मुख 'सत्य' के स्तम्भ में सही (√) का चिह्न लगाइए। यदि यह कथन आप तथा आपके माता-पिता के मध्य पारिवारिक सम्बन्ध का वास्तविक वर्णन नहीं करता है तो आप क्रमांक के सम्मुख 'असत्य' के स्तम्भ में सही (√) का चिह्न लगायें।

यह ज्ञान परीक्षण नहीं है, अतः सभी उत्तर सही माने जायेंगे। इन सभी को गोपनीय रखा जायेगा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। किसी भी प्रश्न को रिक्त नहीं छोड़ना है। समय की कोई सीमा नहीं है किन्तु जो उत्तर आपको पहले विचार में उचित प्रतीत हो उसे ही अंकित कर दीजिए।

समय :

यद्यपि इस प्रश्नावली को पूरा करने की कोई निश्चित समय सीमा नहीं है फिर भी साधारणतया उत्तरदाता 40 से 50 मिनट में पूरा करते हैं।

अंकों की गणना :

प्रत्येक सही (√) चिह्नित उत्तर पर एक (1) अंक प्रदान किया जाता है। प्रत्येक पृष्ठ की अंकगणना आवरण पृष्ठ पर कुल योग सहित की गई। तीनों प्रकार में से जिस प्रकार के सम्बन्ध में विद्यार्थियों ने उच्च अंक प्राप्त किए, वही उसके एवं माता-पिता के सम्बन्ध का द्योतक है।

विश्वसनीयता :

पारिवारिक सम्बन्ध सूची की विश्वसनीयता इण्टरमीडिएट कक्षा के 100 विद्यार्थियों पर परीक्षण पुनर्परीक्षण द्वारा ज्ञात की गई। माता पिता स्वीकारोक्ति विश्वसनीयता .85 पाई गई जो, .01 स्तर पर सार्थक है।

वैधता :

इस परीक्षण की वस्तु वैधता को पद विश्लेषण प्रदत्त एवं तीनों कारकों में आपसी सहसम्बन्ध द्वारा किया गया।

व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली :

मूल्य मापन का अत्यधिक प्रचलित उपकरण आलपोर्ट बनर्न परीक्षण है जिसका भारत एवं विदेशों में व्यापक रूप से प्रयोग हुआ है। भारत में आलपोर्ट बनर्न परीक्षण विशेष रूप से डा. राय चौधरी, डा. श्रीवास्तव, एस.पी. कुलश्रेष्ठ, डा. बी.के. ओझा, डा. एस.के. पाल द्वारा अपनाया गया है।

आलपोर्ट परीक्षण हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध है परन्तु शोधकर्त्री ने उसका प्रयोग नहीं किया क्योंकि आलपोर्ट बनर्न ने अपने परीक्षण में केवल 6 मूल्यों का ही समावेश किया है- (1) सैद्धान्कि, (2) आर्थिक, (3) राजनैतिक, (4) सामाजिक, (5) धार्मिक, (6) सौन्दर्यात्मक।

यद्यपि समाज में इनके अतिरिक्त भी अन्य मूल्य हैं, जैसे- प्रजातान्त्रिक, पारिवारिक, स्वास्थ्य, सुखवादी, जिनके अभाव में व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना असंभव है।

अतः शोध के उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए शोधकर्त्री ने डा. जी.पी. शैरी एवं डा. आर.पी. वर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया क्योंकि यह

प्रश्नावली मानक उपकरण की दृष्टि से अधिक उपयुक्त हैं। जो विशेष उद्देश्य की पूर्ति करती है।

व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली (परिशिष्ट संख्या -3)

उपकरण का वर्णन :

यह मूल्य मापनी सभी आयु स्तर के लिए है। इसमें 40 पद हैं जो तीन श्रेणियों में विभक्त है। विद्यार्थियों को इन तीन पदों में से एक पद में (√) तथा एक पद में (×) लगाना है तथा एक पद रिक्त छोड़ना है। सभी पद व्यक्ति के मूल्यों का मापन करते हैं। यह मापक विभिन्न प्रकार के लगभग चार हजार विद्यार्थियों के न्यादर्श पर प्रशासित किया गया तथा इसकी विश्वसनीयता निर्धारित की गई।

प्रस्तुत मापनी में दस मूल्यों का मापन होता है जिनका वर्णन निम्न है–

(क) धार्मिक मूल्य :

धार्मिक व्यक्ति से तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो अपने धर्म में दृढ़ एवं प्रगाढ़ विश्वास रखता है, अपने समान धर्म वाले व्यक्तियों से मित्रता करना पसन्द करता है तथा दूसरों के नैतिक स्तर को बढ़ाने का प्रयत्न करता है एवं भौतिक सुखों के लिए धर्म का त्याग नहीं करता। उसकी दृष्टि से ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तथा सर्वज्ञ है।

(ख) सामाजिक मूल्य :

परिवार, मित्रता एवं विभिन्न समूहों के सदस्य बनने में जिस सन्तोष की प्राप्ति होती है उसे सामाजिक मूल्य कहते हैं। सामाजिक व्यक्ति प्रेम, सहयोग, सहानुभूति एवं बलिदान की भावना से परिपूरित अपने समाज की प्रगति का महत्वाकांक्षी होता है।

(ग) प्रजातांत्रिक मूल्य :

प्रजातांत्रिक प्रवृत्ति का व्यक्ति प्रतिदिन के जीवन में प्रजातांत्रिक नियमों, स्वतन्त्रता तथा मातृत्व का पालन करता है। वह प्रत्येक अवसर पर निष्पक्ष रहने का प्रयत्न करता है तथा जाति धर्म एवं कुल का उसकी दृष्टि में कम महत्व होता है।

(घ) सौन्दर्यात्मक मूल्य :

सौन्दर्यवादी व्यक्ति काव्य तथा कला को अधिक महत्व देता है। वह कला को आत्म तृप्ति एवं दूसरों को आनन्द पहुंचाने का साधन मानता है। वह सौन्दर्य एवं स्वच्छता का प्रेमी होता है।

(च) आर्थिक मूल्य :

उच्च आर्थिक मूल्य वाला व्यक्ति भौतिक वस्तुओं के एकत्रीकरण में अपने जीवन को सार्थक मानता है। व्यवसाय में धार्मिक प्रतिबन्ध को पसन्द नहीं करता है। आर्थिक हानि से दुःखी होता है तथा उसकी दृष्टि से उच्च शिक्षा का उद्देश्य धन कमाना है।

(छ) ज्ञानात्मक मूल्य :

सिद्धान्तवादी व्यक्ति सदैव सत्य और ज्ञान की खोज में लगा रहता है। उसका विश्वास है कि ईश्वर को ज्ञान द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इनके अनुसार धार्मिक नेताओं तथा उद्योगपतियों की अपेक्षा ज्ञानी, वैज्ञानिक, देश के विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। उसके लिए ज्ञान ही सद्गुण है।

(ज) सुखवादी मूल्य :

सुखवादी व्यक्ति प्रत्येक कार्य को इन्द्रिय सुख के लिए करता है। उसका प्रत्येक कार्य सुख की आकांक्षा से सम्बन्धित होता है तथा दुःखद स्थितियों की अवहेलना करता है।

(झ) शक्ति मूल्य :

शक्तिवादी व्यक्ति प्रभुत्व प्रिय होता है तथा कठोर अनुशासन एवं नियंत्रण को शासन का आधार मानता है। वह अधिक व्यक्तियों की अधीनता से कार्य नहीं करना चाहता तथा एकतंत्रात्मक शासन में विश्वास रखता है।

(ट) पारिवारिक मूल्य :

उच्च पारिवारिक मूल्य वाला व्यक्ति साम्प्रदायिक परम्पराओं एवं रीतियों में रूढ़िवादी होता है। वह अपने समुदायों के व्यक्तियों को अधिक महत्व देता है। वह कोई भी कार्य ऐसा नहीं करता जिससे कुल की मर्यादा कम हो।

(ठ) स्वास्थ्य मूल्य :

स्वास्थ्य को महत्व देने वाला व्यक्ति उत्तम शरीर में उत्तम मस्तिष्क की उक्ति को उचित मानता है। अपनी शारीरिक सुरक्षा के लिए रोग से बचने का प्रयास करता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता, सन्तुलित भोजन, खेल तथा व्यायाम को आवश्यक मानता है।

प्रशासन एवं प्रदत्त अभिलेखन :

उचित रूप से प्रशासित परीक्षण के द्वारा ही विश्वसनीय एवं वैध परिणाम प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत मापनी को शोधकर्त्री ने समूह में छात्राओं पर प्रशासित किया तथा निर्देश दिया कि अपनी सहपाठियों की नकल न करे।

पाठ्य निर्देश :

मूल्य मापनी में प्रत्येक प्रश्न की तीन उत्तर दिए हैं। छात्रायें इनमें से जिन प्रश्न को सबसे अधिक पसन्द करती हैं उसके सामने कोष्ठक में (√) तथा जिस प्रश्न को सबसे कम पसन्द करती हैं उस कोष्ठक में (×) लगायें तथा एक उत्तर कोष्ठक रिक्त छोड़ना है। यह ज्ञान परीक्षण नहीं है अतः सभी उत्तर सही माने जायेंगे।

समय :

इस परीक्षण में समय की कोई सीमा नहीं है लेकिन साधारणतया छात्रायें इसे 30-40 मिनट में पूरा कर लेती हैं। छात्राओं द्वारा जैसे ही कार्य समाप्त किया गया, प्रश्न पुस्तिकायें एकत्रित कर ली गई।

अंकों की गणना :

मूल्य मापनी प्रश्नों के अंकों की गणना बहुत सरल है। इस प्रपत्र में हर पद के तीन मूल्यों में से एक मूल्य का मापन करना होता है। छात्राओं द्वारा (√) सही किये गये पद में दो (2) शून्य तथा रिक्त छोड़े गये पद में एक (1) अंक प्रदान किया जाता है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक पृष्ठ के प्रत्येक स्तम्भ क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ के अंकों को गिनकर उत्तर पुस्तिका के आवरण पृष्ठ पर स्थानान्तरित कर दिया जाता है। प्रत्येक पंक्ति का कुल योग 24 है तथा पूर्णयोग 120 है।

विद्यार्थियों को इन दस मूल्यों में से जिस मूल्य में सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए, उसी मूल्य को वे अपने जीवन में महत्व देते हैं।

विश्वसनीयता :

विभिन्न मूल्यों की विश्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात की गई। परीक्षण पुनः परीक्षण विश्वसनीयता .53 से .85 के मध्य ज्ञात की गई।

वैद्यता :

परीक्षण के वैधता को विभिन्न मूल्यों में सह सम्बन्ध द्वारा ज्ञात किया गया।

सृजनात्मक योग्यता मापक परीक्षण का चयन (परिशिष्ट संख्या -४)

सृजनात्मक चिन्तन योग्यता का मापन करने के लिए शोधकर्त्री ने बाकर मेंहदी का सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण अपनाया है। इस उपकरण का चयन निम्न विशेषताओं के कारण किया है।

1. यह परीक्षण आठवीं कक्षा से लेकर बी.ए. तक के छात्रों पंर प्रशासित किया जा सकता है, अतः एकादश कक्षा के छात्रों के लिए इसका चयन उपयुक्त है।
2. परीक्षण के मानक निर्धारित हैं एवं परीक्षण उच्च स्तर पर मानकीकृत है।
3. इस परीक्षण की विश्वसनीयता एवं वैधता उच्च है।

बाकर मेंहदी का सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण समस्त बैटरी का एक भाग है एवं चार उप परीक्षणों का मिश्रण है। ये उप परीक्षण निम्न है–

1. यदि ऐसा हो जाये तो।
2. वस्तुओं के नये–नये प्रयोग।
3. नवीन सम्बन्धों का पता लगाना।
4. वस्तुओं को मनोरंजक बनाना।

(१) यदि ऐसा हो जाये तो :

इस क्रिया का आधार गिलफर्ड के प्रभावी परीक्षण है एवं टोरेन्स के (टोरेन्सेज जस्ट सपोज एक्टीविटी) परीक्षण हैं। इस परीक्षण में छात्र के सम्मुख उपकल्पनात्मक

परिस्थिति प्रस्तुत की जाती है जिसमें छात्र अनेकों प्रतिक्रियाएं करता है। विषय से सम्बन्धित अनेकों प्रत्युत्तर दिये जा सकते हैं तथा शब्दों का लचीलापन प्रगट हो जाता है। इस परीक्षण में तीन उपकल्पनात्मक परिस्थितियां बनाई गयी हैं–

1. यदि मनुष्य पक्षियों की भांति उड़ने लगे तो क्या होगा ?
2. यदि आपके विद्यालय में पहिए लग जाएं तो क्या होगा ?
3. यदि मनुष्य को खाने की आवश्यकता न रहे तो क्या होगा ?

(२) वस्तुओं के नए-नए प्रयोग :

इन कार्यो का आधारभूत विचार गिल्फर्ड के ईट का उपयोग (ब्रिक यूजेज टेस्ट) या टोरेन्स का टिन उपयोग परीक्षण (टिन यूजेज टेस्ट है) इन परीक्षण में निम्न प्रत्युत्तरों को रखा जाता है–

1. पत्थर का टुकड़ा
2. लकड़ी की एक छड़ी
3. पानी

इन पदार्थों के अनकों योग्य, रूचिकर एवं अनोखे उपयोग सोचे जा सकते हैं। यह परीक्षण विषयी को विभिन्न दिशाओं में सोचने के अवसर प्रदान करता है। यह खेल के समान प्रतीत होता है तथा बच्चों को नवीन-नवीन उपयोग, प्रयोग सोचने के लिए प्रेरित करता है। इसमें बच्चों का लचीलापन असाधारण व मौलिक विचार करने की योग्यता का पता चलता है।

(३) नवीन सम्बन्ध पता लगाना :

मैजनिक ने साहचर्य शब्द पर काफी कार्य किया, उनके अनुसार सृजनात्मकता की परिभाषा केवल नवीन साहचर्य पर आधारित है। इस कार्य के लिए उपकल्पना तथा असमान वस्तुओ का चयन किया जाता है, तथा छात्र कहां तक उनके नवीन सम्बन्ध सोच सकते हैं, यह ज्ञात किया जाता है। यह परीक्षण के विषय को तीन शब्दों को तीन जोड़ों के साथ उपस्थित करता है, जो लगभग निम्न होते हैं–

1. पेड़ और मकान
2. कुर्सी और सीढ़ी
3. हवा और पानी।

व्यक्ति इनके ऊपर कोई भी योग्य सम्बन्ध सोच एवं लिख सकता है, जो प्रत्येक जोड़े के उद्देश्यों के मध्य सम्भावित हैं। परीक्षण कल्पना एवं मौलिकता को स्वतन्त्र रूप से व्यक्त करने के अवसर देते हैं ताकि प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता उचित रूप से प्राप्त हो सके।

(४) वस्तुओं को मनोरंजक बनाना :

यह कार्य शाब्दिक कल्पना का 'प्रोड्क्ट इम्प्रूवमैन्ट एक्टीविटी' के समान हैं। टोरेन्स ने तो बन्दर का खिलौना प्रयोग किया है लेकिन इस परीक्षण में घोड़े के खिलौने की कल्पना करने को कहा गया है कि वह उसे अपने आप कैसे रूचिकर एवं मनोरंजक बना सकता है। यह कार्य बच्चों की कल्पना की दुनियां एवं विभिन्न दिशाओं में सोचने को प्रेरित करताहै। यह परीक्षण विचार के प्रवाह के अतिरिक्त लचकता एवं मौलिकता को मापता है। इस परीक्षण में बालक को कल्पना करने को कहा जाता है कि आप लकड़ी के साधारण घोड़े के खिलौने को किस प्रकार रूचिकर एवं मनोरंजक बनायेंगे।

इस कार्य के लिए 6 मिनट का समय दिया जाता है।

इस प्रकार चारों परीक्षणों के लिए निर्देश देने तक के समय को मिलाकर 15 मिनट का समय निर्धारित किया गया है।

इन चारों उपपरीक्षणों द्वारा गिल्फर्ड द्वारा बताये गए निम्न सृजनात्मक तत्वों को मापा जाता है–

1. प्रवाह
2. लचकता
3. मौलिकता

(१) प्रवाह :

प्रवाह का तात्पर्य पुनरावृत्ति रहित विचार है, अतः पुनरावृत्ति रहित विचार वह होता है जो समस्या के सम्बन्ध में केवल एक ही बार व्यक्त किया जाता है।

(२) लचकता :

किसी व्यक्ति का लचीलापन, उसके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों में विभिन्नता से है एवं उसके सोचने के विभिन्न तरीकों से प्रदर्शित होता है। वे सभी विचार एवं विधियां जो किसी समस्या को हल करने के लिए एक ही प्रकार के होते हैं, लचीलेपन की गणना में उनको एक ही बार माना जाता है।

इस प्रकार यदि पांच विचार एक ही श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं तो लचीलेपन की गणना में उनको एक ही कहा जायेगा। यदि सभी पांच विचार पांच तरीकों एवं विभिन्नता के आधार पर हों तो लचीलेपन की गणना पांच आयेगी।

(३) मौलिकता :

मौलिकता असामान्य उत्तरों से ही प्रदर्शित होती है जो उत्तर पांच प्रतिशत से कम लोगों के द्वारा दिए जाते हैं, उनको मौलिक विचार कहा जाता है। असामान्य उत्तरों को ही अंक प्रदान किये जाते हैं।

विश्वसनीयता :

इस परीक्षण की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए परीक्षण, पुनर्परीक्षण विधि प्रयुक्त की गई है। परीक्षण के प्रत्येक कारक को अलग 2 व पूरे परीक्षण के साथ विश्वसनीयता निकाली गई है। इस परीक्षण की वैधता .776 से लेकर .996 तक है जो उच्च है।

उपकरण का प्रशासन :

किसी भी परीक्षण की वैधता व विश्वसनीयता उसके उचित प्रशासन पर ही निर्भर करती है।

सृजनात्मक परीक्षण प्रशासित करने के चरण :

परीक्षण को प्रशासित करने से पूर्व परीक्षणकर्ता को निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिये :-

1. **सर्वप्रथम परीक्षणकर्त्री को विद्यार्थियों के समक्ष परीक्षण को प्रशासित करने के उद्देश्यों की व्यापक रूप से व्याख्या की गई।**

2. विद्यार्थियों को परीक्षण के विषय में स्पष्ट रूप से समझाना चाहिए एवं परीक्षणकर्त्री को विद्यार्थियों को परीक्षण के लिए प्रेरित किया गया।
3. परीक्षणकर्त्री के पास स्टॉप वाच तथा पेन्सिल थी।
4. इसके पश्चात उक्त पुस्तिका को वितरित किया गया तथा विद्यार्थियों को उसमें दिए गए रिक्तस्थानों की पूर्ति के लिए निर्देशित किया।
5. पुस्तिका वितरित करने के बाद छात्राओं को पहले सामान्य निर्देश, तत्पश्चात् एक कार्य के विशेष निर्देशों को पढ़ा गया व इसी प्रकार चारों के निर्देशों को पढ़ा गया।

इन समस्त बातों को ध्यान में रखते हुए परीक्षणकर्त्री ने परीक्षण को प्रशासित किया तथा सर्वप्रथम छात्राओं को उत्तर पुस्तिकाएं वितरित कीं और छात्राओं को ऊपर दिए गए रिक्त स्थानों को सही रूप से भरने को कहा। जब उन्होंने समस्त रिक्त स्थान की पूर्ति कर ली तो परीक्षणकर्त्री ने परीक्षण प्रपत्र पर अंकित सामान्य निर्देशों को उच्च व स्पष्ट स्वर में छात्राओं के सम्मुख पढ़ा।

सामान्य निर्देश :

1. जवीन में नवीनता, मौलिकता एवं सृजनात्मक योग्यता का बड़ा महत्व है। जीवन की प्रत्येक खोज, मनुष्य के नये ढंग से सोचने की योग्यता का प्रभाव है। संसार में ऐसी बहुत सी वस्तुएं हैं जिन्हें नये-नये विचारों के द्वारा अनोखी तथा उपयोगी बनाया जा सकता है। ऐसी योग्यता रखने वाले व्यक्तियों ने ही नयी-नयी खोजें एवं आविष्कार किए हैं।

2. आगे पृष्ठें पर कुछ ऐसी समस्याएं दी गई हैं जिन्हें यदि आप विचारात्मक एवं सृजनातमक ढंग से हल करने का प्रयत्न करेंगे तो आप बहुत से नवीन व रोचक उत्तर देने में सफल हो सकेंगे। आपको इन कार्यो को कहने में बहुत आनन्द आयेगा।

3. **यदि कार्य दिन प्रतिदिन की समस्याओं से सम्बन्धित है,. इनका कोई सही या गलत उत्तर नहीं है। देखना यह है कि आप कहां तक ऐसी नई एवं अनोखी बातें सोच सकते हैं जो आपके विचार में आपके साथी नहीं सोच सकते।**

वास्तव में विचित्र एवं नया उत्तर देने से यह पता लग सकेगा कि आप में वस्तुओं को नये-नये ढंग से सोचने की योग्यता कितनी है। आप जितने भी अधिक नये एवं अनोखे विचार आए लिखते जाइये चाहे वे असंभव ही क्यों न मालूम देते हों।

4. आपको चार कार्य करने को दिए गए हैं। जहां तक सम्भव हो शीघ्रता से उत्तर दीजिए, सुविधा के लिए प्रत्येक कार्य के लिए अलग-अलग समय निर्धारित है। यदि आप किसी कार्य को निश्चित समय में पूरा कर लेते हैं तो जब तक आपसे दूसरे कार्य के लिए न कहा जाय, आगे न करें बल्कि उसी कार्य के बारे में सोचते रहें और जो भी नया विचार आपके मन में आए, उसे भी लिख दें। अंत में पांच मिनट का समय और दिया जायेगा। यदि आपके मन में किसी भी भाग के बारे में नया विचार आया तो उसे उस समय लिख दीजिये।

5. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अवश्य दीजिये। जब आपसे कार्य आरम्भ करने को कहा जाये तो तुरन्त शुरू कर दीजिये, यदि आपको कोई बात पूछनी हो तो इस समय पूछ लीजिए। यदि इस समय कठिनाई नहीं है और बाद में कोई कठिनाई आए तो शांतिपूर्वक अपने स्थान से अपना हाथ उठाइए ताकि आपकी कठिनाई दूर की जा सके।

उपर्युक्त निद्रेश देने के पश्चात् छात्राओं ने अपना कार्य प्रारम्भ किया और जब चारों कार्य छात्राओं द्वारा पूरे कर लिए गए तो परीक्षणकर्त्री ने उत्तर पुस्तिका एकत्र कर लीं।

अंकों की गणना :

इस परीक्षण में किसी भी पद के लिए सही या गलत उत्तर नहीं है, इसलिए अंक गणना अत्यन्त सावधानीपूर्वक की गई है। प्रत्येक पद को प्रवाह, एवं मौलिकता के आधार पर अंक दिए गए हैं। अंकों की गणना के लए शोधकर्त्री ने मैनुअल की सहायता ली है।

(१) प्रवाह :

पुनरावृत्ति रहित विचार, स्पष्ट तथा समस्या से सम्बन्धित प्रत्येक विचार को एक प्रवाह अंक दिया गया।

(२) लचीलापन :

लचीलेपन की गणना के लिए विषय की प्रतिक्रिया को अंकन कुंजी में दी गई श्रेणियों के आधार पर विभक्त कर दिया जाता है कि विषयी ने कितनी श्रेणियां प्रयुक्त की हैं। यदि एक ही श्रेणी के आधार पर पांच विचार दिए हैं तो उनको केवल एक अंक प्रदान किया गया है और अगर पांच विचार अलग-अलग पांच श्रेणियों के अन्तर्गत आते हैं तो उनको पांच अंक प्रदान किये गए हैं।

(३) मौलिकता :

मौलिक प्रत्युत्तरों की गणना सांख्यकीय आधार पर की गई है जितना अधिक असाधारण उत्तर था, उसका मौलिक वजन भी उतना ही अधिक था।

इस प्रकार प्रवाह, लचकता एवं मौलिकता के आधार पर अंक दिए गए। प्रत्येक छात्रा को तीन प्रकार के अंक प्राप्त हुए एवं तीनों प्रकार के अंकों को मानक अंकों में परिवर्तित किया गया। मानक अंक ज्ञात करने के लिए मध्यमान 50 व मानक विचलन 10 माना गया है। इन तीनों मानक अंकों का योग ज्ञांत कर कुल सृजनात्मकता के अंक प्राप्त किए गए।

शैक्षिक उपलब्धि :

छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए शोधकर्त्री ने विद्यालयों में जाकर प्रधानाचार्य की अनुसंधानकर्त्री ने अनुमति लेकर परीक्षाफल पंजिका (रिजल्ट रजिस्टर) से प्राप्तांकों के योग को एकत्र किया।

प्रदत्तों का संकलन :

विभिन्न शिक्षा संस्थाओं की प्रधानाध्यापिकाओं की अनुमति लेकर उन शिक्षा संस्थाओं से प्रदत्त एकत्रित किये गये। सर्वप्रथम 1200 छात्राओं पर सामाजिक आर्थिक सूची प्रशासित की गई, जिसे छात्राओं ने 30 मिनट में पूरा किया। इसमें से

600 छात्राएं जो मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर की थीं उनको चुना गया। उन पर पारिवारिक सम्बन्ध सूची व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली और सृजनात्मक चिन्तन का परीक्षण समूह में प्रशासित किया गया। सर्वप्रथम पारिवारिक सम्बन्ध सूची प्रशासित की गई जिसको छात्राओं ने 40 मिनट में पूरा किया, इस सूची को एकत्रित करने के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली प्रशासित की गई एवं निर्देश दिये। छात्राओं से प्रश्नावली के आवरण पृष्ठ पर हाईस्कूल की परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों को लिखने के लिए कहा गया।

छात्राओं ने इस प्रश्नावली को औसत रूप से 30 मिनट में पूरा किया। उसी समय शोधकर्त्री ने आवरण पृष्ठ पर छात्राओं द्वारा लिखे गये नाम, आयु, भाई बहनों की कुल संख्या तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्राप्त कुल अंक आदि का विवरण देखा।

अगले दिन सृजनात्मक चिन्तक का परीक्षण छात्राओं पर प्रशासित किया गया। इस प्रश्नावली को छात्राओं ने 50 मिनट में पूरा किया। तत्पश्चात् छात्राओं से पुस्तिकाएं एकत्रित कर ली गई। आवरण पृष्ठ पर लिखी गई सभी पूर्तियों को शोधकर्त्री द्वारा निरीक्षण किया गया।

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यकीय विधियाँ :

प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए प्रदत्तों के अनुकूल सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए निम्न सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन
3. क्रान्तिक अनुपात
4. सहसम्बन्ध।

(१) मध्यमान :

मध्यमान केन्द्रीय प्रवृत्ति का सबसे अधिक परिशुद्ध एवं विश्वसनीय मापक है। यह वह मान है या एक प्रतिनिधित्वकारी अंक है जिसके दोनों तरफ समान विचलन है।

अधिक सरलता से कहे जाने पर मध्यमान विभिन्न प्राप्तांकों का वह कुल योग है जो उनकी संख्या से भाग देने पर आता है।

व्यवस्थित आंकड़ों से मध्यमान निकालने का सूत्र निम्न है-

लघु विधि से (बड़े न्यादर्श के लिए)

$$\text{मध्यमान} = A.M. + \frac{\Sigma fd}{N} \times i$$

A.M.	-	कल्पित मध्यमान
f	-	आवृत्ति
d	-	विचलन
Σfd	-	आवृत्ति एवं विचलन के गुणनफल का योग
N	-	आवृत्ति की कुल संख्या
i	-	वर्ग अन्तराल का आकार

(२) प्रमाणिक विचलन :

मध्यमान से प्राप्तांकों के विचलन के वर्ग के मध्यमान के गुणात्मक वर्गमूल को ही मानक विचलन के रूप में परिभाषित किया जाता है। मानक विचलन ज्ञात करने के लिए लघु विधि दीर्घ की अपेक्षाकृत सरल व सुगम है, इसकी सांख्यकीय गणनाएं कम समय में सुगमता से, कम गल्तियों की संभावना से हो जाती हैं। निष्कर्ष भी अधिक शुद्ध होते हैं।

$$\text{मानक विचलन } \sigma = i \times \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

Σfd^2	-	विचलनों के वर्ग एवं आवृत्तियों के गुणनफल का योग
N	-	आवृत्तियों का योग

(३) मध्यमान के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करना :

दो बड़े व स्वतन्त्र समूहों के मध्यमानों के अन्तर की जांच क्रान्तिक अनुपात परीक्षण द्वारा की जाती है। इस परीक्षण के अन्तर्गत दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर को दोनों प्रतिदर्शों की अन्तर की मानक त्रुटि (S_{ED}) से विभाजित करने पर जो मान प्राप्त होता है, वह क्रान्तिक अनुपात कहलाता है।

सामान्यतः अन्तर को उस समय सार्थक कहा जाता है जब दो न्यादर्शों के मध्य का अन्तर उस जनसंख्या के प्रचलन के वास्तविक अन्तर की ओर संकेत करता है जिससे यह लिए गए हैं। यदि दो कारकों के मध्यमान के C.R. में अन्तर 1.96 से अधिक होता है तो यह .05 स्तर पर सार्थक माना जाता है और यदि 2.5 से अधिक होता है तो यह .01 स्तर पर सार्थक माना जाता है।

मध्यमान की सार्थकता ज्ञात करने का सूत्र–

$$C.R. = \frac{M_1 - M_2}{S_{ED}}$$

M_1 - पहले समूह का मध्यमान

M_2 - दूसरे समूह का मध्यमान

S_{ED} - दोनों प्रतिदर्शों के अन्तर की मानक त्रुटि

S_{ED} - निकालने का सूत्र– बड़े न्यादर्श के लिए–

$$S_{ED} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

जहाँ σ_1^2 - पहले समूह के मानक विचलन का वर्ग

σ_2^2 - दूसरे समूह के मानक विचलन का वर्ग

(४) सहसम्बन्ध गुणांक :

सहसम्बन्ध गुणांक दो चरों के बीच में सहसम्बन्ध का पता लगाता है। सहसम्बन्ध गुणांक निकालने के लिए प्रोडक्ट मोमेन्ट मेथड का प्रयोग किया है। इसका प्रयोग तब किया जाता है जब न्यादर्श का आकार बड़ा होता है, तब समय और मेहनत को बचाने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

$$\gamma = \frac{n\ \Sigma fdxdy - (\Sigma fdx)\ (\Sigma fdy)}{\sqrt{n\ \Sigma fdx^2 - (\Sigma fdx)^2}\ \sqrt{n.\ \Sigma fdy^2 - (\Sigma fdy)^2}}$$

N	-	पदों की संख्या
dxdy	-	श्रेणी के पदों के विचलन एवं श्रेणी के पदों के विचलन का गुणनफल।
Σfdx	-	x श्रेणी के विचलन एवं आवृत्तियों का गुणनफल।
Σfdy	-	y श्रेणी के विचलन एवं आवृत्तियों का गुणनफल।
Σfdx^2	-	श्रेणी के विचलन एवं आवृत्ति के गुणनफल का वर्ग।
Σfdy^2	-	श्रेणी के विचलन एवं आवृत्ति के विचलनों का वर्ग।
γ	-	सहसम्बन्ध गुणांक।

❋❋❋❋❋❋

अध्याय-४

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन

अध्याय- चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन

अत्यधिक विश्वसनीय तथा वैध परीक्षणों के द्वारा प्रदत्त एकत्रीकरण करने के पश्चात्, प्रदत्तों का उद्देश्यों की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्गीकरण, गणना, विश्लेषण तथा व्याख्या की गई है। वर्गीकरण का अभिप्राय विभिन्न श्रेणियों तथा उपश्रेणियों में प्रदत्तों का विभाजन करना है, गणना का तात्पर्य, प्रदत्तों को विभिन्न सांख्यकीय विधियों के प्रयोग के माध्यम से सार्थक बनाना है, विश्लेषण का अभिप्राय। सांख्यकीय गणना युक्त प्रदत्तों में निहित अर्थ का स्पष्टीकरण करना है जिससे कि शोध प्रश्नों के विषयों में कुछ वास्तविक निष्कर्ष निकाल सकें। व्याख्या का उद्देश्य शोध निष्कर्षों का सम्बन्ध, प्राप्त ज्ञान से करना है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए 'सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी' का प्रयोग किया। छात्राओं को निर्देश दिया गया कि इसी मापनी में अपने भाई-बहनों की संख्या अंकित करें ताकि सामाजिक-आर्थिक स्तर नियन्त्रित कर लघु एवं बृहद् परिवार की छात्राओं का चयन किया जाये, जिसमें कि वे छात्रायें जिनके प्राप्तांक 34 या उससे अधिक थे, उनको उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवारों में सम्मिलित किया, 16 से 33 तक के प्राप्तांकों की छात्राओं को मध्यम वर्गीय सामाजिक-आर्थिक स्तर वाली छात्रायें माना। 6 से 15 तक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाली छात्रायें माना।

मध्यमवर्गीय सामाजिक-आर्थिक स्तर वाली छात्राओं की संख्या 900 है।

(1) लघु एवं बृहद् परिवार का चयन करना :

लघु परिवार से तात्पर्य उस परिवार से है जिसमें बच्चों की संख्या 3 या उससे कम है।[1] जब व्यक्ति इच्छित बच्चों की संख्या प्राप्त करले तो उसे अपने परिवार को सीमित कर लेना चाहिए लेकिन यह संख्या 3 से अधिक न हो।[2]

इस परिभाषा के अनुसार शोधकर्त्री ने अपने परीक्षण में 300 छात्राओं को लघु परिवार के अन्तर्गत रखा है।

बृहद् परिवार से तात्पर्य तीन से अधिक बच्चों से युक्त परिवार से है।[3]

इस परिभाषा के अनुसार शोधकर्त्री ने अपने परीक्षण में 300 छात्राओं को बृहद् परिवार के अन्तर्गत सम्मिलित किया है।

(२) लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के माता-पिता से सम्बन्ध का व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन :

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शोधकर्त्री ने लघु परिवार की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया और बृहद् परिवार की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात करके, लधु एवं बृहद परिवारों के मध्य अन्तर की सार्थकता ज्ञात की।

लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और बृहद् परिवार की छात्राओं के पारिवारिक लगाव के मध्य अन्तर की सार्थकर्ता

तालिका संख्या –1

क्र.सं.	परिवार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता
1.	लघु परिवार	102.2	26.80	--	.01 स्तर पर सार्थक
2.	बृहद् परिवार	90.2	20.45	6.3	

विवेचना :

उपरोक्त तालिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि लघु परिवार की छात्राओं का मध्यमान 102.2 और प्रमाणिक विचलन 26.80 है। बृहद् परिवार की छात्राओं का मध्यमान 90.2 और प्रमाणिक विचलन 20.45 है, इनके मध्य क्रान्तिक निष्पत्ति 6. 3 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट है कि लघु परिवार में माता-पिता बच्चों की ओर अधिक ध्यान देते हैं। बृहद् परिवार की अपेक्षा लघु परिवार के बच्चे

माता–पिता के अधिक सम्पर्क में रहते हैं। बृहद् परिवार में बच्चों की संख्या अधिक होने के कारण, लगाव का वितरण, समयाभाव और अन्य समस्यायें हो जाती हैं।

(अ) लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनके व्यक्तिगत मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकर्ता

तालिका संख्या –2

क्र.सं.	लघु परिवार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	अन्त की सार्थकता
1.	पारिवारिक लगाव	102.2	26.80	--	.01 स्तर पर असार्थक
2.	व्यक्तिगत मूल्य	132.4	21	–16	

विवेचना :

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनके व्यक्तिगत मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता –16 है जो .01 स्तर पर असार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि लघु परिवारों में पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(ब) बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनके व्यक्तिगत मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकर्ता का प्रदर्शन

तालिका संख्या –3

क्र.सं.	बृहद् परिवार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	अन्तर की सार्थकता
1.	पारिवारिक लगाव	90.2	20.45	--	.01 स्तर पर असार्थक
2.	व्यक्तिगत मूल्य	131.4	25	–23	

विवेचना :

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनके व्यक्तिगत मूल्यों के मध्य क्रान्तिक निष्पत्ति –23 है जो .01 स्तर पर असार्थक है। इसका तात्पर्य है कि बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव

का उनके व्यक्तित्व मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसका कारण है कि मूल्य समयानुसार परिवर्तित होते रहते हैं।

(स) लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों से सहसम्बन्ध

तालिका संख्या –4

लघु परिवार	बृहद् परिवार
= + .075	= + .25

उपर्युक्त सारणी संख्या 4 से स्पष्ट है कि लघु परिवारों के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के साथ सहसम्बन्ध + .075 है और बृहद् परिवारों के पारिवारिक लगाव का व्यक्तिगत मूल्यों के साथ सहसम्बन्ध + .25 है। दोनों में तुलना करने पर यह ज्ञात होता है कि बृहद् परिवारों के पारिवारिक लगाव का व्यक्तिगत मूल्यों के साथ सहसम्बन्ध लघु परिवारों से अधिक है। दोनों ही प्रकार के परिवारों में सहसम्बन्ध धनात्मक होते हुए भी निम्न है, इससे स्पष्ट होता है पारिवारिक लगाव का प्रभाव उनके व्यक्तिगत मूल्यों पर बहुत ही कम मात्रा में पड़ता है।

(३) लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव :

(अ) लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी सृजनात्मकता के मध्य अन्तर की सार्थकता

तालिका संख्या –5

क्र.सं.	लघु परिवार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता
1.	पारिवारिक लगाव	102.2	26.80	--	.01 स्तर पर असार्थक
2.	सृजनात्मकता	102.87	27.81	–.30	

विवेचना :

तालिका संख्या 5 से स्पष्ट है कि लघु परिवारों में छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनके सृजनात्मकता के मध्य अन्तर की सार्थकता –.30 है जो .01 स्तर

पर असार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि लघु परिवारों में छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी सृजनात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(ब) बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनके सृजनात्मकता के मध्य अन्तर की सार्थकर्ता

तालिका संख्या –6

क्र.सं.	बृहद् परिवार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता
1.	पारिवारिक लगाव	90.2	20.45	--	.01 स्तर पर सार्थक
2.	सृजनात्मकता	70	23.6	+11.22	

विवेचना :

तालिका संख्या 6 से स्पष्ट है कि बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव की क्रानितक निष्पत्ति +11.22 है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बड़े परिवारों में बालिकायें अधिक सृजनशील होती हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि बृहद् परिवार में भाई–बहनों की संख्या अधिक होने के कारण उनमें स्वयं सोचकर कार्य करने की क्षमता विकसित होती है। उनमें प्रतिस्पर्धा अधिक हो जाती है।

(स) लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी सृजनात्मकता में सहसम्बन्ध

तालिका संख्या –7

लघु परिवार	बृहद् परिवार
+ .37	+ .13

विवेचना :

उपर्युक्त तालिका में लघु परिवारों के पारिवारिक लगाव का उनकी सृजनात्मकता से सहसम्बन्ध + .37 है और बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी सृजनात्मकता से सहसम्बन्ध + .13 है जो कि धनात्मक होते हुए भी बहुत

निम्न हैं। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों ही परिवारों में पारिवारिक लगाव का सृजनात्मकता पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(४) लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव :

(अ) लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता

तालिका संख्या –8

क्र.सं.	लघु परिवार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता
1.	पारिवारिक लगाव	102.2	26.80	--	.01 स्तर पर असार्थक
2.	शैक्षिक उपलब्धि	340.5	43.27	–82.17	

विवेचना :

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लघु परिवारों में छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता –82.17 है जो .01 स्तर पर असार्थक है। इसका तात्पर्य है कि परिवार के आकार का छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यह आवश्यक नहीं कि परिवार छोटा है तो बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होगी। हो सकता है कि धन की अधिकता उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर और सभी सुविधाएं बच्चों को पढ़ाई से विमुख कर दें।

(ब) बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता

तालिका संख्या –9

क्र.सं.	बृहद् परिवार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता
1.	पारिवारिक लगाव	90.2	20.45	--	.01 स्तर पर असार्थक
2.	शैक्षिक उपलब्धि	315	26.3	–117.09	

विवेचना :

तालिका संख्या 9 से स्पष्ट है कि बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 90.2, 315 और उसका प्रमाणिक विचलन क्रमशः 20.45, 26.3 है, इनके मध्य अन्तर की सार्थकता-117.09 है जो .01 स्तर पर असार्थक है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि परिवार के आकार का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(स) लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध

तालिका संख्या -10

लघु परिवार	बृहद् परिवार
+ .08	+ .16

विवेचना :

लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध +.08 और +.16 है जो कि धनात्मक होते हुए भी बहुत निम्न है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों ही परिवारों में पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से बहुत कम सहसम्बन्ध है।

(द) लघु परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और बृहद् परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर की सार्थकर्ता

लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता .01 स्तर पर असार्थक है। दोनों ही प्रकार के परिवारों में पारिवारिक लगाव और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध धनात्मक परन्तु बहुत निम्न हैं। इसका तात्पर्य है कि दोनों ही प्रकार के परिवारों में पारिवारिक लगाव का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर बहुत कम पड़ता है। इसलिए शोधकर्त्री के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता ज्ञात की जाए।

तालिका संख्या –11

क्र.सं.	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता
1.	लघु परिवार	340.5	43.27	--	.01 स्तर पर सार्थक
2.	बृहद् परिवार	315	26.3	8.8	

विवेचना :

तालिका संख्या 11 से स्पष्ट है कि लघु परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और बृहद् परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता 8.8 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। लघु परिवारों में छात्राओं को उचित शैक्षिक सुविधायें और वातावरण उपलब्ध होता है। माता-पिता भी बालकों की ओर अधिक ध्यान देते हैं। दूसरी ओर बृहद् परिवारों में छात्राओं को उचित शैक्षिक सुविधायें उपलब्ध नहीं हो पाती हैं, इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

(५) लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का सृजनात्मकता से सहसम्बन्ध :

तालिका संख्या –12

क्र.सं.	लघु परिवार	सहसम्बन्ध
1.	व्यक्तिगत मूल्य	-.116
2.	सृजनात्मकता	

विवेचना :

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का उनकी सृजनात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। दोनों ही चरों के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध है।

(६) लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों और शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध :

तालिका संख्या –13

क्र.सं.	लघु परिवार	सहसम्बन्ध
1.	व्यक्तिगत मूल्य	
2.	शैक्षिक उपलब्धि	= -.04

विवेचना :

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लघु परिवारों की छात्राओं का व्यक्तिगत मूल्यों और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध है।

(७) लघु परिवारों की छात्राओं की सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध :

तालिका संख्या –14

क्र.सं.	लघु परिवार	सहसम्बन्ध
1.	सृजनात्मकता	
2.	शैक्षिक उपलब्धि	= –.31

विवेचना :

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लघु परिवारों की छात्राओं की सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मक सहसम्बन्ध है जो कि –.31 है। इसका कारण है कि जो बच्चे पढ़ने में बहुत होशियार हों, आवश्यक नहीं कि वो सृजनशील भी हों। सृजनात्मकता एक प्रकृति प्रदत्त गुण है, इसको अर्जित नहीं किया जा सकता है। जबकि शैक्षिक उपलब्धि को परिश्रम के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। लघु परिवारों में अधिक सुविधायें होने से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सकता है। परन्तु उनको सृजनशील नहीं बनाया जा सकता। इसी प्रकार सृजनशील छात्राओं के लिए यह आवश्यक नहीं कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च हो। हो सकता है कि उनका मस्तिष्क नई बातों को जानने में अधिक क्रियाशील हो, परन्तु पढ़ने में उनकी रूचि न हो।

(८) बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का उनकी सृजनात्मकता से सहसम्बन्ध :

तालिका संख्या –15

क्र.सं.	बृहद् परिवार	सहसम्बन्ध
1.	व्यक्तिगत मूल्य	
2.	सृजनात्मकता	= –.13

विवेचना :

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य और सृजनात्मकता में ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। यह सहसम्बन्ध -.13 है। इसका तात्पर्य है कि छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का उनकी सृजनात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। मूल्य निरन्तर परिवर्तित होते रहते हैं।

(९) बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध :

तालिका संख्या -16

क्र.सं.	बृहद् परिवार	सहसम्बन्ध
1.	व्यक्तिगत मूल्य	
2.	शैक्षिक उपलब्धि	= +.18

विवेचना :

तालिका संख्या 16 से स्पष्ट है कि बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों और शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक परन्तु निम्न सहसम्बन्ध है, जो +.18 है। इसका तात्पर्य है कि बृहद् परिवारों में व्यक्तिगत मूल्यों का प्रभाव छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर बहुत कम मात्रा में पड़ता है।

(१०) बृहद् परिवारों की छात्राओं की सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध :

तालिका संख्या -17

क्र.सं.	बृहद् परिवार	सहसम्बन्ध
1.	सृजनात्मकता	
2.	शैक्षिक उपलब्धि	+.28

विवेचना :

तालिका संख्या 17 से स्पष्ट है कि बृहद् परिवारों की छात्राओं की सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध .28 है जो धनात्मक होते हुए भी निम्न है। इसका तात्पर्य है कि बृहद् परिवारों में सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि

कुछ सीमा तक ही आपस में सम्बन्धित है। इसका कारण है कि बृहद् परिवारों में बच्चों की संख्या अधिक होती है, इससे उनमें आपस में तर्क करने और प्रतियोगिता की भावना जागृत होती है।

******

REFERENCES

(1) जेम्स, एस.एस. बोसार्ड- पेरेन्ट चाइल्ड, 1956, पृष्ठ 82-100

(2) डा. होडा एस.एस. "द जरनल ऑफ फेमिलिवेलफेयर", 1962-63, पृष्ठ 1-6

(3) भटनागर, सुरेश, तहीम प्रमिला, "बाल विकास और पारिवारिक सम्बन्ध" लायल बुक डिपो, प्रथम संस्करण 1975, पृष्ठ 383-390

******

अध्याय-५

निष्कर्ष, भावी अनुसन्धान के लिये सुझाव एवं शैक्षिक उपयोगिता

अध्याय- पंचम

निष्कर्ष, भावी अनुसन्धान के लिए सुझाव एवं शैक्षिक उपयोगिता

किसी भी कार्य में प्राप्त परिणामों का अपने में कोई महत्व नहीं होता, जब तक कि उन प्राप्त परिणामों के आधार पर किसी सामान्य निष्कर्ष पर न पहुंच जाये। परिणामों की व्याख्या के समान ही निष्कर्षो के निरूपण के समय भी सूक्ष्म निरीक्षण, विस्तृत दृष्टिकोण तथा तर्कसंगत चिन्तनशीलता की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष :

1. मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर वाली छात्राओं का चयन किया गया जिनमें 300 छात्रायें लघु परिवारों की है और 300 छात्रायें बृहद् परिवारों की हैं।

2. (अ) ***लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव :***

   लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्रांओं के व्यक्तिगत मूल्य .01 स्तर पर असार्थक है। दोनों ही परिवारों में पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

   (ब) ***लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों से सहसम्बन्ध :***

   लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों से निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है। जो कि क्रमशः +.75 और +.25 है।

3. (अ) ***लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव :***

लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव –.03 है जो .01 स्तर पर असार्थक है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि लघु परिवारों में पारिवारिक लगाव का सृजनात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है, जो +11.22 है। और जो .01 स्तर पर सार्थक है।

(ब) ***लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी सृजनात्मकता से सहसम्बन्ध :***

लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी सृजनात्मकता में सहसम्बन्ध +.37 है और बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और सृजनात्मकता के बीच सहसम्बन्ध +.13 है। जो कि धनात्मक होते हुए भी निम्न है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार के आकार का छात्राओं की सृजनात्मकता पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ता।

4. (अ) ***लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव :***

लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि यह .01 स्तर पर असार्थक है।

(ब) ***लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध :***

लघु एवं बृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध क्रमशः +.08 और +.16 है। दोनों ही प्रकार के परिवारों में बहुत निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है।

(स) ***लघु परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और बृहद् परिवारों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता :***

दोनों ही परिवारों की छात्राओं के मध्य अन्तर की सार्थकता 8.8 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि लघु परिवारों में छात्राओं को उचित शैक्षिक सुविधाएं मिल सकतीं हैं जिससे उनकी उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है। माता-पिता भी छात्राओं की शिक्षा पर उचित ध्यान देते हैं। इसके विपरीत बृहद् परिवारों में सुविधाओं के अभाव समयाभाव, व माता-पिता की उपेक्षा के कारण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च नहीं हो पाती।

5. ***लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का सृजनात्मकता से सहसम्बन्ध :***

दोनों ही चरों के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध हैं। अर्थात् लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का उनकी सृजनात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

6. ***लघु परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों और शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध :***

इन दोनों ही चरों के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध (-.04) हैं, इससे यह प्रदर्शित होता है कि व्यक्ति के जीवन में मूल्य बदलते रहते हैं और मूल्यों के बदलने से उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित नहीं होती है।

7. ***लघु परिवारों की छात्राओं का सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध :***

इन दोनों चरों के मध्य सहसम्बन्ध (-.31) है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलबिध में कोई सहसम्बन्ध नहीं है क्योंकि सृजनात्मकता प्रकृति प्रदत्त गुण है और इसको अर्जित नहीं किया जा सकता। जबकि शैक्षिक उपलब्धि को परिश्रम के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

8. ***बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का उनकी सृजनात्मकता से सहसम्बन्ध :***

यह सहसम्बब्ध भी ऋणात्मक और निम्न है (-.13)। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का उनकी सृजनात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

9. ***बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों और शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध :***

इन दोनों ही चरों के बीच सहसम्बन्ध धनात्मक (+.18) हैं। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बृहद् परिवारों की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है।

10. ***बृहद् परिवारों की छात्राओं का सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध :***

इन दोनों चरों के बीच निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध (+.28) हैं, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बृहद् परिवारों में सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलब्धि पर कुछ मात्रा में प्रभाव पड़ता है।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव :

शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया है अतः इस प्रक्रिया को निरन्तर विकसित होते रहना चाहिए। अतएव शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर शोधकार्य आवश्यक है। शिक्षा केवल कला ही नहीं विज्ञान भी है। अतः निरन्तर प्रगति करना आवश्यक है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोधकार्य से सम्बन्धित अन्य शोधकार्य निम्न क्षेत्रों में किए जा सकते हैं।

1. प्रस्तुत शोधकार्य केवल 300 लघु परिवारों की तथा 300 बृहद् परिवारों की छात्राओं पर किया गया है। इसी विषय पर अधिक बड़े न्यादर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन केवल जनपद फिरोजाबाद की छात्राओं पर ही किया गया है, अतः ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. लिंग की दृष्टि से बालक एवं छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. पारिवारिक सम्बन्धों का अन्य मनोवैज्ञानिक चरों, जैसे- चिन्ता, नैराश्य व्यक्तित्व के पक्ष (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी) आवश्यकता आदि के साथ समन्वय भी देखा जा सकता है।

5. बालक व छात्राओं के माता-पिता के स्वीकारात्मक, एकाग्रतापूर्ण एवं अस्वीकारात्मक सम्बन्धों का अलग-अलग अध्ययन किया जा सकता है।

6. सृजनात्मकता में भी प्रवाह (फ्लूएन्सी) लचकता (फ्लैक्सीबिलिटी) और मौलिकता (ओरीजिनलिटी) का अलग-अलग अध्ययन किया जा सकता है।

7. प्रस्तुत अध्ययन स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के मध्य भी किया जा सकता है, क्योंकि इस स्तर पर छात्र-छात्राओं के मूल्य अधिक परिपक्व हो जाते हैं।

शैक्षिक उपयोगिता :

शिक्षा के उद्देश्य काल तथा परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। समय की आवश्यकतानुसार शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं। वर्तमान समय में समाज की जटिलता एवं व्यवसायों में विभिन्नता के कारण शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को भविष्य के लिए तैयार करना है। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों को इस योग्य बनाने का प्रयास किया जाता है कि वे भविष्य में आने वाली समस्याओं एवं संघर्षो का सामना कर सकें। इस दृष्टि से शिक्षा का महत्व अधिक बढ़ जाता है। इसमें परिवार व समाज का सहयोग आवश्यक है।

छात्राओं का अधिकांश समय परिवार में ही व्यतीत होता है, परिवार के वातावरण से छात्राओं का व्यक्तित्व प्रभावित होता है। बृहद् परिवारों के माता-पिता आर्थिक कमी, समय की व्यस्तता तथा अधिक उत्तरदायित्व के कारण अपने बच्चों के लिए उचित शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर पाते। वे अपने बच्चों की योग्यताओं एवं क्षमताओं को पूर्णतया नहीं जान पाते तथा उनके निकट नहीं आ पाते, जिससे बालकों के व्यक्तित्व का विकास तो अवरूद्ध होता ही है साथ ही राष्ट्र को भी भारी क्षति होती है क्योंकि आज का विद्यार्थी ही कल का भावी नागरिक है। आज जब हम शैक्षिक अवसरों की समानता की बात करते हैं तो यह आवश्यक है कि बालक-छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए उनकी योग्यता एवं क्षमतानुसार उपयुक्त शिक्षा सुविधायें प्रदान की जायें। नियोजित परिवार माता-पिता को अपने बच्चों की योग्यता एवं क्षमता को जानने में सहायता प्रदान करता है। लघु परिवारों में माता-पिता अपने बच्चों के साथ अधिक समय व्यतीत करते हैं, अभिभावक बालक

सम्बन्ध सम्भवतः मधुर होते हैं तथा बच्चों को अधिक सुविधायें प्राप्त होती हैं। लघु परिवारों में माता-पिता बच्चे को परिवार का इच्छित सदस्य स्वीकार करते हैं, उनको उनकी आयु के अनुकूल स्वतंत्रता प्रदान करते हैं तथा बालकों की क्षमतानुसार उत्तरदायित्व प्रदान करते हैं। अतः लघु परिवार के छात्र-छात्रायें अपनी योग्यताओं, क्षमताओं के आधार पर अपने उद्देश्य का निर्धारण करते हैं एवं उनको प्राप्त करने में अधिक सीमा तक सफल होते हैं, इन छात्र-छात्राओं को अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता है। लघु परिवारों की छात्रायें बृहद् परिवारों की छात्राओं की अपेक्षा जीवन में प्रजातांत्रिक नियमों, स्वतन्त्रता तथा मातृत्व का भी अधिक पालन करती है। माता-पिता के व्यवहार, उनके नैतिक मूल्यों का प्रभाव भी छात्राओं पर पड़ता है। यदि परिवार का वातावरण स्नेहिल व माता-पिता के सम्बन्ध मधुर होते हैं, उनको उचित मार्गदर्शन मिलता है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है, उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को भी विकसित किया जा सकता है। सृजनात्मकता बालकों का एक विशिष्ट गुण है, बालकों के इस गुण में निरन्तर वृद्धि होनी चाहिए। किसी भी राष्ट्र का उत्थान उस राष्ट्र के नागरिकों की सृजनात्मक शक्ति पर आधारित होता है। इसलिए सृजनात्मकता विकासशील देश की अमूल्य निधि एवं सामाजिक-आर्थिक तथा व्यक्तिगत उन्नति का अमोध शस्त्र है।

आज शिक्षा की धारणा बदल रही है, विद्यालय का कार्य केवल ज्ञान के संगठित भण्डार व बने बनाये मूल्यों का स्थानान्तरण ही नहीं है बल्कि छात्र को इस योग्य बनाना है कि वे अपनी जन्मजात प्रतिभाओं का विकास कर सकें।

बालकों में जिज्ञासु प्रवृत्ति पाई जाती है, यदि उनकी इस प्रवृत्ति पर तथा प्रयोगात्मक क्रिया पर रोक लगा दी जायेगी तो लाखों छात्राओं का यह प्रकृति प्रदत्त गुण नष्ट हो जायेगा।

अतः यह स्पष्ट है कि राष्ट्र एवं व्यक्ति दोनों दृष्टि से विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्तियों का विकास होना आवश्यक है।

अतः यह परिवार का कर्तव्य है कि छात्राओं की सृजनात्मकता के विकास के लिए उचित अवसर प्रदान किए जायें। जिन क्षेत्रों में छात्राओं की रुचि हो उन्हें उन्हीं

क्षेत्रों में प्रगति करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। ताकि वे एक सुयोग्य कलाकार, वैज्ञानिक व एक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बन सकें और देश की उन्नति में अपना योगदान दे सकें। बालक-छात्राओं के नैतिक स्तर को उच्च करने में अभिभावकों व शिक्षकों का प्रमुख योगदान है, अतः अभिभावकों एवं शिक्षकों को निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं।

अभिभावकों के लिए सुझाव :

किसी भी देश के बुद्धिमान विद्यार्थी उसके शिलाधार होते हैं, उसका धन होतेहैं। वे ही भविष्य के नेता व योजना बनाने वाले होते हैं तथा देश के भावी स्वरूप को निश्चित करते हैं। अतः ऐसे बालक-छात्राओं का ध्यान रखना व उनका समुचित विकास करना अभिभावकों का कर्तव्य है।

पारिवारिक संस्कारों का प्रभाव छात्राओं पर अमिट होता है, अतः अभिभावकों का कर्तव्य हो जाता है कि वे छात्राओं के समक्ष ऐसा वातावरण प्रस्तुत करें जिससे अच्छी मनोवृत्ति एवं नैतिक गुणों का विकास हो सके। परिवार में बालिकायें पिता की अपेक्षा अपनी माता से अधिक प्रभावित होती हैं, अतः मां को उनकी शिक्षा पर विशिष्ट ध्यान देना चाहिये तथा अधिकांश समय उनके साथ व्यतीत करना चाहिये, विशेषकर बाल्यावस्था के समय जो विकास की महत्वपूर्ण अवस्था है। अभिभावक अपने बच्चों के प्रति निरन्तर स्वीकारात्मक व्यवहार प्रकट कर उन्हें निरनतर प्रगति में प्रोत्साहन प्रदान करें। आवश्यकता पड़ने पर सहायता प्रदान करें। वे अपने दैनिक व्यवहार में अपने बच्चों के प्रति उदार रहें व उनकी भावनाओं का आदर करें। अभिभावकों को स्वनिर्मित आकांक्षाओं को छात्राओं पर थोपना नहीं चाहिए, उन्हें एक सीमा तक स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए अर्थात् वे अपने साथियों के चयन, विषय के चयन में स्वतन्त्र हों, परिवार में प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण होना चाहिए। ताकि उनमें कुंठा एवं हीनता की भावना जाग्रत न हो सके। अभिभावकों को सामान्यतः बच्चों की विद्यालयी क्रियाओं में रूचि लेनी चाहिये, उनकी शैक्षिक उपलब्धि को उच्च करने के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने चाहिए। जिस छात्र में उनकी रूचि हो उसी क्षेत्र में उनको विकास के अवसर दिए जाएं। यदि छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि निम्न है, तो उन कारणों को जानने का प्रयत्न किए जाएं जिनके कारण वह सफलता

के शिखर पर नहीं पहुंच पा रहीं हैं। उन मनोवैज्ञानिक कारणों को भी जानने का प्रयत्न किया जाए और उनका निदान किया जाए, जिनके कारण उनमें शैक्षिक पिछड़ापन है। लघु परिवार में माता-पिता बालकों की उपलब्धि पर अधिक ध्यान दे सकते हैं, क्योंकि उनके पास समय का अभाव नहीं होता और वे आर्थिक रूप से भी समर्थ होते हैं। बृहद् परिवार में अभिभावक व्यक्तिगत रूप से छात्राओं को अधिक समय नहीं दे पाते, और वे आर्थिक रूप से अधिक समर्थ नहीं होते हैं।

बालक एवं छात्राओं में देश काल एवं परिस्थिति के अनुसार उपयुक्त मूल्यों के निर्धारण में सहायक होना चाहिए।

अभिभावकों को छात्राओं की सृजनात्मक रूचि को बढ़ाने में भी पर्याप्त सहायता देनी चाहिए। उनकी सृजनातमकता का दमन नहीं किया जाए, वरन् सृजनात्मकता को विकसित करने के लिए उचित निर्देशन दिया जाये। परिवार ही ऐसा स्थल है जहां बालक को सर्वप्रथम अपनी क्षमताओं के विकसित करने का अवसर मिलता है। देश में प्रतिभाशाली बालकों के अभाव की समस्या है लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि प्रतिभाशाली बालकों की कमी है अपितु इसका कारण है कि हम प्रतिभाशाली बालकों को पहचानने में असमर्थ रहे हैं। प्रत्येक क्षेत्र की उन्नति कुछ प्रतिभाशाली बालकों की ही देन है। यदि हम सृजनात्मकता को पहचानते हैं तो हमारे देश की समस्याएं हल हो सकती हैं और देश उन्नति के शिखर तक पहुंच सकता है। अतः यह आवश्यक है कि अभिभावक, छात्राओं की सृजनात्मकता को पहचाने और उनके विकास के उचित से उचित अवसर प्रदान करें।

<u>शिक्षकों के लिए सुझाव</u>:

परिवार के पश्चात् छात्राओं का अधिक समय विद्यालय में व्यतीत होता है। यद्यपि विद्यालय छात्राओं के व्यवहार, उनकी परिस्थितियों को पूर्णतया परिवर्तित नहीं कर सकता तथापि शिक्षकों की रूचियों, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों आदि का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से छात्राओं पर प्रभाव पड़ता है।

कोठारी कमीशन[1] के अनुसार– भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है तथा कक्षाओं का भाग्य निश्चित रूप से शिक्षकों के हाथ में है,

अतः अध्यापकों के व्यवहार जो मूल्यों द्वारा निर्धारित होते हैं। वे भारत के भाग्य का निर्माण करते हैं। अतः शिक्षकों को चाहिए कि वे अपने विद्वतापूर्ण ज्ञान गरिमा से समायोपयोगी मूल्यों के निर्धारण में छात्राओं की सहायता करे। विद्यालयों में जनसंख्या शिक्षण पर उचित ध्यान दिया जाए।

शिक्षकों को चाहिए कि वे लघु एवं बृहद् परिवार की छात्राओं का पता लगायें, उनके पारिवारिक परिवेश का उचित प्रकार से अध्ययन करके उनकी आवश्यकताओं को समझें। शिक्षकों को छात्राओं की व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखते हुए शिक्षण व्यवस्था करनी चाहिए जिससे उनके व्यक्तिगत मूल्यों का उचित विकास हो सके तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च हो सके। निम्न उपलब्धि का तात्पर्य निम्न बुद्धि कदापि नहीं बल्कि यह कई कारणवश हो सकती है। इसके लिए दोषपूर्ण निर्देशन, प्रेरणा की कमी व परिवार का वातावरण भी उत्तरदायी है। अतः शिक्षक का कर्तव्य है कि वह छात्राओं को सहानुभूति से समझें, उनका निर्देशन करें व उनके 'स्व' का हनन न होने दें। यदि परिवार में छात्राओं को स्नेह की आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती है तो शिक्षक को चाहिए कि वे उन्हें विद्यालय में उचित वातावरण प्रदान कर उनकी त्रुटियों के लिए उनको तिरस्कृत न करें बल्कि उनके साथ सहृदयाता का व्यवहार करें।

शिक्षक को छात्राओं की संकीर्ण धार्मिकता को दूर करके उनमें उच्च नैतिक भावनाओं का विकास करना चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह छात्राओं में समाज के प्रति सद्भावना उत्पन्न करें तथा स्वयं ऐसे समाज कल्याण के कार्य करें जिससे छात्राओं में सामाजिक भावना का विकास हो। भारत एक प्रजातांत्रिक देश है और इसको सुदृढ़ बनाने के लिये छात्राओं में प्रजातांत्रिक नियमों का पालन आवश्यक है। अतः शिक्षक उनमें स्वतन्त्रता, समानता तथा मातृत्व की भावना का विकास करे। शिक्षक को भ्रष्ट तरीके से धन कमाने की निन्दा करके स्वस्थ आर्थिक मूल्य का विकास करना चाहिये। शिक्षक को छात्राओं में ज्ञान के प्रति रूचि उत्पन्न करनी चाहिये जिससे वह किसी भी बात को बिना तर्क के स्वीकार न करे और सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करें। छात्राओं को स्वास्थ्य मूल्य का ज्ञान दें क्योंकि उत्तम स्वास्थ्य में ही उत्तम मस्तिष्क का निवास होता है।

शिक्षक छात्राओं की आवश्यकताओं को उचित ढंग से पूर्ण करें तथा छात्राओं को उनकी शैक्षिक प्रगति, मानसिक स्तर एवं विशिष्ट योग्यताओं की जानकारी दें जिससे छात्रायें स्वमूल्यांकन करके अपना उचित विकास कर सकें। शिक्षक को छात्राओं को विद्यालय में जनसंख्या शिक्षा के विषय में भी ज्ञान प्रदान करना चाहिए।

शिक्षक को छात्राओं को पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं देना चाहिए, वरन् उनको अपने आप सोचने, नये व मौलिक विचार प्रस्तुत करने के अवसर प्रदान करने चाहिए। छात्राओं को अधिक से अधिक वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध, लेख आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

शिक्षकों को अपने शिक्षण विधियों में भी सुधार करना चाहिए। पुरानी, घिसीपिटी शिक्षण विधियों को त्याग कर नयी शिक्षण विधियों को अपनाना चाहिए, जिससे छात्राओं को अधिक से अधिक सोचने और तर्क करने का अवसर प्राप्त हो। आज बालक शिक्षा के लिए नहीं वरन् शिक्षा, बालक के लिए है, इसलिए शिक्षक को बालक की व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।

शिक्षा के प्रत्येक स्तर के बच्चों को उनकी जीवन की पूर्णता व गहराई का ज्ञान कराना अति आवश्यक है जिससे उनकी प्रतिभायें विनिष्ट न हो जायें।

अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा विकास आयोग का कथन है कि शिक्षा को 'प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सांस्कृतिक उन्नति का सृजनकर्ता एवं विशेषज्ञ बनने में सहायता करनी चाहिये।'[2]

शिक्षकों को यह भी जानना चाहिए कि मौलिकता आविष्कारिता एवं कल्पना कुछ लोगों की ही बौद्धिक निधि नहीं है बल्कि यह सभी बालकों में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है।

एक प्रजातांत्रिक देश का भविष्य योग्य नागरिकों, नेताओं एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियों पर ही निर्भर करता है। अतः अपने शैशव प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए, भौतिक सम्पन्नता के लिए सृजनात्मकता को विकसित करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

शिक्षकों को कार्य केवल ज्ञान के संगठित भण्डार व बने बनाये मूल्यों का स्थानानतरण करना ही नहीं है वरन् छात्र को इस योग्य बनाना है कि वह अपने मूल्यों का निर्माण कर सके, अपनी समस्याओं के नवीन व मौलिक हल खोज सके और अपनी जन्मजात प्रतिभाओं का विकास कर सके।

एक सृजनशील अध्यापक में ही बच्चों के सृजनात्मकता रूपी पौधे को पल्लवित व पुष्पित करने की उत्कण्ठा होती है। सृजनात्मक चिन्तन का तभी विकास होता है जब शिक्षक यह समझते हैं कि सभी बच्चों में सृजनात्मक चिन्तन की क्षमता है।

सृजनात्मक चिन्तन का विकास न होने पर बालकों में आत्मविश्वास का अभाव हो जाता है और उनके व्यक्तित्व का विघटन भी हो जाता है।

छात्राओं का यह प्रकृति प्रदत्त गुण नष्ट न हो जाए इसलिए शिक्षकों को उनकी सृजनात्मकता का विकास करने में पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

******

REFERENCES

(1) शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (1964-66) शिक्षा और राष्ट्रीय विकास, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित (दिल्ली) प्रथम संस्करण 1968, हिन्दी, पृष्ठ 1 व 22

(2) द इन्टरनेशनल कमीशन आन डेवलपमैन्ट आफ एजूकेशन (1971-72) जरनल आफ एजूकेशन

******

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

BIBLIOGRAPHY

1. Dr. Ahuza Ram : Adhunik Bharat Ki Samajik Samasaya, Meenakshi Prakashan.
2. Alport G.W. : Some value differences among adults and children in South Africa.
3. Agrawal and Asthana : Psychology and Measurement, IV Ed. 1976, Vinod Pustak Mandir, Agra.
4. Anastacy : Psychological testing IV Ed.
5. Avert, W.J. : Moral Values – 1968.
6. Bruner J. : "Value and need as organising factor in perception".
7. Bell. E.H. : Social foundation of human behaviour.
8. Broudy. H.S. : Building a philosophy of Education, Printice Hall of India, Pvt. Ltd., New Delhi 1965.
9. Barshah and Lock : The family of Institution Columbio.
10. Brubaker J.S. : Modern philosophy of Education, Tokyo, IIIrd Edition.
11. Bhatnagar Suresh, Taheem promila : Bal vikas and Parivarik Sambandh, Loyal book Depot, Ist Ed. 1975.
12. Brakan : Percieve parental attitude and parental identification into field of vocatinal child.
13. Bhargava M.C. : Adhunik Manovigyanik Parikshan avam Mapan, Agra, IVth Ed. 1962.
14. Boarg W.R. : Introduction to Research Methods.
15. Bulomaquist John : 1957- Some special factors in schools, familiar international educational research, Volume-3.
16. Baldwin Alfred and Das 1945 : The pattern of parents behaviour physical management 58. No. 3. 1945.

17. Burger and Shaker : Review of Educational Research, 1971, Volume II.

18. Baist John, W. : Research in Education.

19. Clausmier H.J. and Richard E.R. : Barren Co-learning and human abnormalition, IIIrd. Edition.

20. Cerlton : Manovigyan Avam Shiksha Me Mapan Avam Mulyakan.

21. Carter B. Good : Essentilals of Educational Research and Desizn.

22. Captain : A study of Isolistic Achievement of People and relation to Social Status, Economic Condition and Educational Environment-1968.

23. C.R. Parmesh : Psychological studies, 1970.

24. Chitra Srivastava : Comperative Study of Personal Values of Rural and Urban Students. M. Ed. Dessertation 1974, Agra University.

25. Cooper Smith : A Method of Determining Types of self Esteen, Journal of Education.

26. Compbell W. 1952 : The Influence of Home Environment of Educational progress of Selective Secondary School Children British Book of Educational Psychology.

27. Charles E. Skinner : Educational Psychology, IVth Ed.

28. Carter V. Good : Methodology of Educational Research IVth Ed.

29. Durkhim : Sociology and Philosophy.

30. Davis Kingslay : Human Society.

31. D.J. Bogg : Demography.

32. Elisca Vivas : Anatomy of the Creativity.

33. Falson J.K. : Family and Democratic Society.

34. Gieger G. : Values and Social Sciences. The Journal of Social Issues-641, 1950.

35. Freeman. F.S. : Theory and Practice of Psychology, New Delhi, 1975.

36. Gupta, Ram Babu : Theory of Eductional, New Publishing House, Kanpur.

37. Grey Elagy : "Country Church".

38. Gallaphar : Productive Things- A Review of Child Development Research by Gatzels J.W. and Jackson P.W. American Sociological Review.

39. Garrett H.O. : Statistics in Psychology and Educationa N.Y.

40. Gates and others : Educational Psychology 1948 McMillan Comp. N.Y.

41. Harlock- 1978 : "Child Development".

42. Hentry E. : Scientific Creativity, Quoted by Blair G.M. Tones, R.S. and Roy H.S. Educational Psychology.

43. Helper, M.M. : Learning Theory and Self Concepts, Abnormal Sociology, 1951.

44. James S.S. Bossard : Parent Child 1956.

45. John. W.E. Hest : Research in Education, Printon Hall of India.

46. Jaiswal, S.C. : Educational Psychology.

47. Joshi, O.P. : Indian Social Institution Jaipur, IX Edition 1971.

48. Jarchield : A Child Psychology.

49. Girijesh Kumar : Indian Educational Review- Hindu College, Moradabad.

50. Khare, P.C. : Occupational Differences in Life Values. Indian Psychological Review 1968, Vol. 8, No.2.

51. Kumar Anand : Bhartiya Samaj Tatha Sanstha, Vimal Prakashan Mandir, 1976.

52. Kedar Singh : A Study of Adjustment of High and Low Achievers 1970-71, R.B.S. College of Education, Agra.

53. Kapil Hans Kumar : Anusandhan Vidhiya.

54. Lindzey Gardner : "A handbook of Society" Harvard University Press, Vol. Ist. 1959.

55. Mehta, T.S. : National Seminar on Population Education, Delhi, N.C.E.R.T.

56. Machivar R.M. and Page C.A. : Society.

57. Mackinnaon P.W. 1962 : The Nature and the Nurture of Creative Talent.

58. Mittal, V.K. : A Study of the Socio Economic Status, Adjustment and Achievement of eleventh class. M.Ed. Dissertation, Agra University.

59. Mathaya B.C. : Some Corelates of Achievement Motive among High and Low Achievers in the Scholastic Field of Journal of Psychological Research 1965.

60. Mathur S.S. : Educational Psychology.

61. Naik J.P. : Quoted by V.P. Sharma in Anatomy of Creativity.

62. Others and Gotes J. : Educational Psychology, IIIrd Edition.

63. Peck R.E. : Psychology of Character Development, N.Y. Willy, 1962.

64. Pathak Avam Tyagi : Siksha Ke Samanya Sidhanta.

65. Buch F.L. : Psychology and Life Taraparavata Sons and Co. Pvt. Ltd. Bombay, 1970.

66. Rawat D.N. : Measurement, Evaluation and Statistics.

67. Rao. S.M. : Problem of Adjustment and Academic Achievement. The Journal of Educational and Vocational Guidence, Vol. 10, No.3.

68. R. Spouling : Achievement, Creativity and self concept, corclates of teacher pupil, transaction in elementary school. IInd Ed. N.Y.

69. Souther land and Woodword : Introducing Sociology.

70. Saylor J.G. : Curriculum Planning in Modern Schools Winston, N.Y. 1966.

71. Symond P.M. : The Psychology of parent child relatinship application centuary craft, 1939.

72. Singh Asha : A study of Creativity of populars, Isolates and Rejects in relation to their Socio-economic status and Achievement, M.Ed. Dissertatin, Indore-1977.

73. Skimit. William C. 1952 : Investigation through doll play of parent dimence in families Master thesis.

74. Srivastava. S.S. : Creativity as a function of birth order, Socio Economic Status and personality types, Journal of Educational and Psychology, Vol. XXXVI No.3, Oct. 1978.

75. Saxena Rekha : Comparative Study of S/C and Non S/C Students, M.Ed. Dissertation Agra University.

76. S. Badri Nath. S.B. Satyanarayanana : Creativity news letter, Vol. 7, No. 8, 1978.

77. Soudding R. : Achivement, Creativity and Self Concepts, Corelates of Teachers Pupil, N.Y. High Court Brass and world. 1964.

78. Stagner. B. : Economic status and Personality McGrow Hill Book Company, N.Y.

79. Symonds P.M. : Essentials of good parent child Relationship. N.Y. Teachers College, 1968.

80. Singh Prasad : Manovigyan avam Shakshik Sankhyiki Ka Mul Adhar. IVth Ed. 1977.

81. Thompson Ralph H. : The Administrators, Battleground, Conflict among Values. The Journal of Education, Vol. 47, No.5, March, 1970.

82. Tripathi. S.N. : Creativity and Education, N.C.E.R.T.

83. Torrance E.Paul : Guiding Creative talent.

84. Taylor L.D. : The Psychology of human diference Bombay.

85. Vargal E.W. : The family from institution to companionship.

86. Willard S.C. : Value Bases for Curriculum Decisions Peaboy, The Journal of Education, Vol. 51, No.1, October, 1973.

87. Welthman : National Societry for the Education Vol. I.

88. Wendelon P.B. and Mayor J.W. : Understanding Education Research M.C. Grow Hill Book Company, N.Y.

89. Young Kimble : A Hand Book of Social Pshychology.

90. Weisberg and Springer K.J.-1961: Involvement factors in Creative functions achivers of Journal Psychology.

JOURNALS

1. Journal of Abnormal and Social Psychology.
2. Journal of Education. Vol. No. 51, 1973.
3. Jorunal of Social Issue, 1950.
4. Journal – "Teacher Today"- April-June, 1981.
5. The Journal of family welfare, 1962.
6. Education for Creativity- 1972. July-September (ii).
7. Creativity in Education, 1975, October-December (iii).
8. Hindi Siksha ME Srijnatmata 1978, April to June, Vol.4.
9. Personality, Adjustment and Achivement Patterns of Accelarated and non-accelerated children, 1981.
10. Academic achievement as a function of sex, Socio Edonomic Status, family size and family type, 1952. July-Dec. Vol. 18, No. 3-4.
11. New-Frontiers in Education-

The influence on levels of achievement amongst students, 1981, April-June, Vol. XI, No. 21.

12. Teacher Today :

(a) Educational evaluation a measurement 1972, Vol. 14, No.3.

(b) Creativity in Education, 1972, Vol. 15, No. 2.

(c) Creativity in the class room, 1974, Vol. 16, No. 3.

(d) Education and Creativity, 1977-78, October-December.

(e) The nature of creativity, April to June II.

13. The Education digest :

Creative thinking, reading and writing in the class-room 1974, October.

14. Quest in Education :

(a) Basic Education through creative work. 1972, Vol. IX. No.3.

(b) Measurement of Creativity 1974, Vol. XI, No.2.

(c) Creativity and teacher effectiveness 1979, Vol. XVI. No.2 July.

(d) Adjustment of Scholastic achivement of low and high achievers. A Comparative study, 1979, April, Vol. 16, No.2.

(e) Value Orientation of Creative and non creative student teachers in Indian 1980, Oct. Vol. 17, No.4.

(f) Contribution of teachers in the development of creativity- Among students 1981, Vol. 18, No.21.

15. N.I.E. Journal :

(a) Creativity its level and phases 1974. Vol. IX, No.2.

(b) Teachability of creativity 1977, Vol.3, No.2.

(c) Testing achievements in language. Skills, 1976, Vol.2, No.1.

16. Journal of Higher Education :

(a) Devaluation of Education 1975, Vol. I, No. 1.

(b) Methodological problems in innovating evaluation system 1976, Vol.2, No.1.

(c) A sample of study of evaluation teacher by students 1979. Vol.5, No.2

17. Indian Educational Review :

(a) Students achievements and teachers 1972, July, Vol.7, No.2.

(b) Low academic achievement and emotonality, 1978, Vol. 13, No.2.

(c) Anxiety and academic achievement 1978, Oct. Vol. 13, No.4.

(d) Analysis of certain dimensions of creativity 1978, Vol.13, No.4.

(e) Adolscents with high and low creativity, 1979, Vol. 14, No.2.

(f) Creativity, its relation with interest 1981, Vol. XVI, No.2.

(g) The effect of knowledge of results on achievement of School subjects in relationship with certain variables 1981, Vol. XVI, No.3.

(h) The prediction of creativity 1982, Vol. 17, No.2.

18. Journal of Indian Education :

(a) The concept of creativity in education 1975, Vol. J. No.2.

(b) Educational Teachnology for creative education, 1979, Vol.5, No.4.

(c) Creativity and Education 1980, Vol. 5, No.5.

19. Journal of the institute of educatinal Research :

(a) Intelligence socio economic status and family size as coralation of achievement 1980, Vol.4, No.3.

(b) A study of achievement of students of different Socio economic status 1980, Vol.14, No.3.

20. The Asian Journal of Psychology and Education :

(a) Creativity and academic achivement among secondary school children 1980, Vol. 6, No.1.

(b) Creativity and its componenets in relation to different levels of intelligence and academic subject among high school students 1988, Vol. II, No.2.

(c) Creativity and old age 1983, Vol.II, No.3.

21. Asian Journal of Psychology and education-1978, Vol.III, No.1, January.

ENCYCLOPEDIA

1. International Encyclopedia Psychatary Psychology, Psychoanalyses and Neurology, Wolmen, Volume No.4.
2. Encyclopedia of Educational Research IV Ed. (N.C.E.R.T.).

YEAR BOOK

1. Lavinger J- 39th year of the national society for the study of education- chapter on intelligence and related to Socio-Economic status-1950.

MANUALS

1. Manual for family relationship by G.P. Sherry and J.C. Sinha.
2. Personal Value Questionnaire By G.P. Sherry and R.P. Verma.
3. Socio-Economic Status Scale (Urban) By Gynendra P. Srivastava.
4. Verbal Test of Creative thinking by Baqer Mehdi.

परिशिष्ट

SESS [Urban]
(HINDI VERSION)

GYANENDRA P. SHRIVASTAVA

नाम..आयु......................यौन.................दिनांक....................

स्कूल/कालेज..कक्षा........................सेक्सन.......................

रौल नं. ....घर का पता..

निर्देश : इस प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न के कई सम्भावित उत्तर दिए हुए हैं जिनमें से केवल एक उत्तर को चुनकर आप उसके सामने चौकोर घेरे (□) में गुणा का चिन्ह (×) लगा दें। यदि पिता न हों तो अपने अभिभावक या संरक्षक (Guardian) के सम्बन्ध में सूचना दें।

1. आपके पिता ने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की है? (उत्तीर्ण परीक्षा के आधर पर उत्तर दें)
   (a) शोध (रिसर्च) डिग्री (Ph.D., D.Phil., D.Litt. आदि) .... □
   (b) मेडिकल, इन्जीनियरिंग आदि की टेक्नीकल डिग्री या स्नातकोत्तरीय डिग्री (M.A., M.Sc., M.Com. आदि) .... □
   (c) स्नातकीय शिक्षा (B.A., B.Sc., B.Com. आदि) .... □
   (d) इण्टरमीडिएट शिक्षा (I.A., I.Sc., I.Com. आदि) .... □
   (e) हाईस्कूल (Matric, Higher Secondary, Pre-University आदि) .... □
   (f) मिडिल स्कूल .... □
   (g) प्राइमरी या अल्पशिक्षित .... □
   (h) अशिक्षित या अनपढ़ .... □

2. आपके पिता का व्यवसाय या पेशा क्या है?
   (a) उच्च प्रशासनिक (गजटेड) अधिकारी, लेक्चरर, रीडर, प्रोफेसर, प्रिन्सीपल, डाक्टर, वकील, इन्जीनियर, समाचार पत्र के सम्पादक, ओडीटर, बैंक मैनेजर, विशिष्टता प्राप्त कलाकार, औद्योगिक या व्यवसायिक संस्था के मैनेजिंग डायरेक्टर, किसी फैक्टरी या फर्म के मालिक, अवैतनिक उच्च पदाधिकारी, वैतनिक राजनैतिक नेता (M.L.A., M.L.C., M.P. आदि) .... □
   (b) मध्यवर्गीय प्रशासनिक (नन-गजटेड) अधिकारी, मध्य श्रेणी के वकील या डाक्टर, हाईस्कूल या इन्टरमीडिएट कालेज के अध्यापक, रिसर्च असिटेंस्ट, प्रयोगशाला प्रदर्शक, केमिस्ट, जूनियर इन्जीनियर, कमीशन एजेन्टस, कलाकार, थोक विक्रेता या बड़े दुकानदार .... □
   (c) क्लर्क, टाइपिस्ट, एकाउन्टेन्ट, लेबोरेट्री असिस्टेन्ट, लेबोरट्री टेकनीसियन, प्राइमरी तथा मिडिल स्कूल के शिक्षक, स्टेशन मास्टर, गार्ड, टिकट कलेक्टर, टी.टी., संवाददाता, दूकान सहायक (सेल्समैन) या छोटे दूकानदार, टेलीफोन या टेलीग्राफ ऑपरेटर, प्रूफरीडर, किसी फैक्टरी या खान के सुपरवाइजर, ड्राफ्टमन या अन्य सरकारी तृतीय श्रेणी की नौकरी .... □
   (d) मोटर ड्राइवर, इन्जिन ड्राइवर, पेन्टर, कम्पोजीटर, मैकेनिक, निपुण बढ़ई, या राजमिस्त्री तथा अन्य कौशल के कार्य .... □
   (e) कार्यालय का सेबक (चपरासी) पीउन या अन्य चतुर्थ श्रेणी की नौकरी, फैक्टरी मजदूर, खोंचा वाले, या चलता फिरता दूकानदार, खलासी, कृषि कार्य या अन्य मामूली कौशल के कार्य .... □
   (f) पहरेदार, दरवान, घरेलू नौकर, कुली आदि .... □
   (g) बेरोजगार- दूसरों पर आश्रित .... □

3. आपके पिता की आय (कुल आमदनी) प्रति माह कितनी है? (अन्य स्त्रोतों से प्राप्त आय को भी सम्मिलित करें)

(a) 1700 रु0 से अधिक .... ☐
(b) 1000 रु0 से 1700 .... ☐
(c) 500 रु0 से 999 .... ☐
(d) 200 रु0 से 499 .... ☐
(e) 100 रु0 से 199 .... ☐
(f) 100 रु0 से कम .... ☐

4. क्या आपके घर में अखबार (समाचार पत्र) लिया जाता है?

(a) प्रतिदिन .... ☐
(b) कभी-कभी .... ☐
(c) कभी नहीं .... ☐

5. क्या आपके घर में पत्रिकाएं (मैगजीन) ली जाती है? यदि प्रति सप्ताह और प्रतिमाह दोनों लागू हों तो प्रति सप्ताह का ही उल्लेख करें।

(a) प्रति सप्ताह .... ☐
(b) प्रति माह .... ☐
(c) कभी-कभी .... ☐
(d) कभी नहीं .... ☐

6. क्या आपको भोजन जलपान के अतिरिक्त प्रतिमाह कुछ पैसे जेब खर्च के लिये मिलते हैं?

(a) हाँ .... ☐
(b) नहीं .... ☐

7. क्या आपके पिता किसी क्लब (जहां सन्ध्या में मनोरंजन का आयोजन होता है) के सदस्य हैं?

(a) हाँ .... ☐
(b) नहीं .... ☐

8. क्या आपके पिता किसी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक या धार्मिक संस्था के कार्यक्रम में भाग लेते हैं? यदि किसी संस्था के सदस्य हों और किसी संस्था के पदाधिकारी (प्रेसिडेन्ट, सेक्रेटरी आदि) तो पदाधिकारी का ही उल्लेख करें।

(a) नहीं .... ☐
(b) किसी एक संस्था के सदस्य .... ☐
(c) एक से अधिक संस्था के सदस्य .... ☐
(d) किसी एक संस्था के पदाधिकारी .... ☐
(e) एक से अधिक संस्था के पदाधिकारी .... ☐

Total Score ☐ **SESS Class** ☐

National Psychological Corporation
4/230, KACHERI, GHAT, AGRA-4

गोपनीय

पारिवारिक सम्बन्ध सूची

FAMILY RELATION INVENTORY (F R I)

निर्मित एवं मानकीकृत द्वारा

डा. (श्रीमती) जी.पी. शैरी
निदेशिका
दयालबाग एजुकेशन इन्सटीट्यूट
आगरा

ए
व
म्

डा. जगदीश चन्द्र सिन्हा
शिक्षा विभाग
दयालबाग एजुक्रेशन इन्सटीट्यूट
आगरा

कृपया निम्नलिखित संगत विवरण दीजिये

नाम...पिता का नाम...

आयु...पिता की शैक्षिक योग्यता...

कक्षा...व्यवसाय...

ऐच्छिक विषय...मासिक आय...

विद्यालय/महाविद्यालय...माता की शैक्षिक योग्यता...

व्यवसाय (यदि कोई हो)...परिवार की सम्पूर्ण मासिक आय...

केवल परीक्षणकर्ता के प्रयोग हेतु

पृष्ठ सं.	स्वीकारोक्ति (Accepted)		एकाग्रता (Concentrated)		अस्वीकारोक्ति (Avoided)	
	माता M.A.	पिता F.A.	माता M.C.	पिता F.C.	माता M.V.	पिता F.V.
1						
2						
3						
4						
5						
6						
योग						

नेशनल साइक्लाजिकल कॉरपोरेशन

4/230 कचहरी घाट, आगरा-4

निर्देश

प्रस्तुत सूची में निम्नलिखित कथन आप तथा आपके माता-पिता/संरक्षक के मध्य अतीत तथा वर्तमान में स्थापित सम्बन्धी प्रकट करते हैं। हर कथन को पढ़िये तथा यह निश्चय कीजिए कि क्या यह कथन आपके पारिवारिक सम्बन्ध का वास्तविक वर्णन करता है। यदि यह कथन आपके पारिवारिक सम्बन्ध का वास्तविक वर्णन करता है तो फिर आप कथन विशेष के क्रमांक के आगे 'सत्य' के कालम में सही (√) का चिन्ह लगाइए। यदि यह कथन आप तथा आपके माता-पिता के मध्य पारिवारिक सम्बन्ध का वास्तविक वर्णन नहीं करता है तो फिर क्रमांक के आगे असत्य के कालम में सही (√) का चिन्ह लगायें।

निम्नलिखित उदाहरण को ध्यान से पढ़िए-

	सत्य	असत्य
कथन- मेरे पिता मेरे मित्रों का घर आना पसन्द किया करते थे।	√	

प्रस्तुत्तरदाता के लिए पिता के सम्बन्ध में यह कथन सत्य था इसलिए उसने 'सत्य' के कालम में सही (√) का चिन्ह लगाया। यदि किसी के लिए यह कथन असत्य होता है वह 'असत्य' के कालम में सही का चिन्ह लगाता। उत्तर में हर कथन को (सत्य या असत्य के कालम में) अंकित करते समय केवल 'सत्य' या 'असत्य' कालम का ही प्रयोग करें। यह निश्चित होइए कि आप कथन की क्रम संख्या के अनुसार ही उत्तर में भी इसी क्रम संख्या के 'सत्य' अथवा 'असत्य' कालम का प्रयोग कर रहे हैं। आपको हर कथन के क्रमानुसार 'सत्य' तथा 'असत्य' कालम में से केवल एक ही कालम का प्रयोग करना है। चाहे कथन की सत्यता तथा असत्यता के सम्बन्ध में केवल अनुमान ही क्यों न लगाना पड़े।

यह ज्ञान परीक्षण नहीं है अतः सभी उत्तर सही माने जायेंगे। इन सभी को गोपनीय रखा जायेगा।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए किसी प्रश्न को छोड़ना नहीं है। समय की कोई सीमा नहीं है। किन्तु जो उत्तर आपको पहले विचार में उचित प्रतीत हो उसे ही अंकित कर दीजिए।

सावधानी - कथन घरेलू सम्बन्धों पर आधारित है अतः आप सोच सकते हैं कि कथन का वही उत्तर दें जिसे समाज अच्छा समझता है, तब आप सत्य बात को व्यक्त नहीं कर पायेंगे। आप सही उत्तर दीजिए चाहे समाज उसे अच्छा समझता है या बुरा। आप केवल सत्य सम्बन्ध ही व्यक्त कीजिए।

क्रमांक		सत्य	असत्य
1.	मेरे पिता अधिकतर व्यस्त रहने के कारण मुझसे बातचीत नहीं कर पाते थे।	.....	.....
2.	अधिकतर मेरे सम्बन्ध में निर्णय मेरी माताजी ही लिया करती थीं।	.....	.....
3.	यदि मैं किसी झगड़े में पड़ जाता था तो मेरे पिताजी यह बताने का प्रयास करते थे कि कौन सही है और क्यों?	.....	.....
4.	मेरे पिताजी ने शायद ही कभी किसी मामले में मेरी राय ली हो।	.....	.....
5.	मेरे पिताजी का विचार है कि मैं उचित सीमा के अन्तर्गत, जितना सम्भव हो प्रगति के अवसर प्राप्त करूं।	.....	.....
6.	मेरी माँ ने मुझसे कहा कि मैं कभी भी उनसे पैदा ही नहीं हुआ होता।	.....	.....
7.	मैंने जब कभी भी हिम्मत हारी तो मेरी माँ ने मेरा उत्साह ही बढ़ाया।	.....	.....
8.	मैं अपने पिता के साथ जब भी कोई कार्य करता था तो वे काम के साथ में बहुत सी चीजों को स्पष्ट करते थे।	.....	.....
9.	मैंने अनुभव किया कि मेरे पिताजी मेरे विचारों से भली भांति परिचित थे।	.....	.....
10.	यदि कोई काम मेरी शक्ति से बाहर होता तो मैं अपनी माँ से साफ-साफ कह दिया करता था।	.....	.....
11.	मेरी माँ मेरी बात को सुनने तथा उस पर विचार करने के लिए सदैव ही इच्छुक रहा करता है।	.....	.....
12.	मेरी माँ ने मेरी छोटी-छोटी योजनाओं पर कभी भी ध्यान नहीं दिया।	.....	.....
13.	मैं अपनी माँ से जब भी कभी किसी वस्तु को मांगता था तो वे उसे दे ही दिया करती थीं।	.....	.....
14.	मैंने शायद ही कभी यह अनुभव किया हो कि मेरी माँ ने अनुचित रूप से मेरी बुराई की हो।	.....	.....
15.	पिता के विचारों के समीप आने के मेरे प्रयत्न अधिकतर उनके द्वारा ध्यान में नहीं लाए जाते थे।	.....	.....
16.	मेरी माँ ने मुझे सिखाने की यह चेष्टा ही नहीं की कि सामाजिक अवसरों पर किस प्रकार कार्य करना चाहिए।	.....	.....
17.	मुझे तो उसी जगह खेलने जाना था जहाँ पर मेरी मां देखभाल कर सके।	.....	.....
18.	मुझे दुःखी हुआ देखकर माँ परेशान हो जाया करती थीं।	.....	.....
19.	बचपन में मैं शायद ही कभी अपने पिताजी की गोद में बैठा हूँ।	.....	.....
20.	मैंने अपनी स्वयं की समस्याओं के सम्बन्ध में शायद ही कभी माँ से बातचीत की हो।	.....	.....
21.	मेरी माँ को कभी भी जानने की इच्छा ही नहीं हुई कि मैं दिनभर कहाँ रहा तथा मैंने क्या किया?	.....	.....
22.	किसी परेशान अथवा कठिनाई में पड़ने पर मैं अपनी माँ की सहायता पर निर्भर रह सकता था।	.....	.....
23.	मेरे लिए अपने व्यक्तिगत विचारों तथा समस्याओं के बारे में अपने पिताजी से बातचीत करना कठिन है।	.....	.....
24.	मैंने अपनी माँ की तुलना में अपने बचपन का अधिकांश समय किसी नौकरानी के सम्पर्क में व्यतीत किया।	.....	.....
25.	मुझे बचपन में बाहर घूमने अथवा खेलने जाने के लिए माँ से आज्ञा लेनी पड़ती थी।	.....	.....
26.	बहुत कम अवसरों पर मेरी माँ ने मुझे प्यार किया।	.....	.....

क्रमांक		सत्य	असत्य
27.	मेरे पिता यह चाहते थे कि मैं अपनी आयु के मित्रों के साथ कार्य करने के बजाय उनके साथ ही कार्य करूं।	.....	.....
28.	मेरे पिता ने मुझे आवश्यकता से अधिक पैसा खर्च करने को दिया।	.....	.....
29.	बचपन में मैं बिना माँ द्वारा आपत्ति किए हुए अपनी कुछ बातों को गुप्त रख सकता था।	.....	.....
30.	मुझे कई बार भूखा रहना पड़ा है क्योंकि किसी ने भी मेरे लिए भोजन तैयार नहीं किया।	.....	.....
31.	मैं अपनी माँ के साथ जब भी कोई कार्य करता था तो वे मुझे बीच में कार्य से सम्बन्धित विशेष बात को बता देती थी।	.....	.....
32.	मेरे पिताजी को कभी भी चिन्ता नहीं हुई कि मैंने परीक्ष में कैसे अंक प्राप्त किये।	.....	.....
33.	विद्यालय में आज शिक्षा प्राप्त करने का मुख्य कारण मेरे पिताजी की ही इच्छा है।	.....	.....
34.	मैंने अधिकतर यह अनुभव किया है कि मेरे पिताजी मुझसे पीछा छुड़ाना चाहते हैं।	.....	.....
35.	मुझे याद नहीं कि मैंने कभी भी अपने पिताजी से अपने भविष्य की योजनाओं के सम्बन्ध में विचार किया हो।	.....	.....
36.	मेरे पिताजी मुझे अपने विचार को प्रस्तुत करने का अवसर दिया करते थे तथा उस पर पूरा विचार भी करते थे।	.....	.....
37.	मेरे पिताजी ने मेरे बिना सूचना दिए हुए आधे दिन तक घर से बाहर घमते रहने पर भी कभी चिन्ता नहीं की।	.....	.....
38.	मेरी माँ ने सदैव इस बात का ध्यान रखा कि मुझे पर्याप्त चिकित्सा सुविधा मिलती रहे।	.....	.....
39.	जब मेरी माँ ने कोई कार्य मुझसे करने को कहा तो उनकी यह इच्छा होती थी कि वह तुरन्त हो जाये।	.....	.....
40.	मेरी माँ ने मेरे सम्बन्ध में बहुत से निर्णय सवयं लिए।	.....	.....
41.	मैं शायद ही कभी यह सोचता हूं कि मेरे पिता ने बिना कारण मेरी आलोचना की हो।	.....	.....
42.	मेरी माँ मेरी बीमारी के सम्बन्ध में शायद ही कभी चिन्तित हुआ करती थीं।	.....	.....
43.	मेरी माँ ने मेरी बुराई की तुलना में मेरी प्रशंसा अधिक की और दोनों में से किसी को भी अधिक मात्रा में वयक्त नहीं किया।	.....	.....
44.	विशेष अवसरों पर भी (जन्म दिन) कभी ही मेरे पिता ने कोई उपहार दिया हो।	.....	.....
45.	यदि मैंने अपने पिताजी से किसी भी सम्बन्ध में कोई प्रश्न पूछने की इच्छा प्रकट की, तो उन्होंने यह कहकर टाल दिया कि 'अपनी माँ से पूछो।'	.....	.....
46.	मैंने यह अनुभव किया है कि मेरी माँ मेरी आदतों से पूर्णरूप से परिचित है।	.....	.....
47.	बचपन में मेरी माँ ने मुझे खेलने तथा घूमने की उतनी ही स्वतन्त्रता प्रदान की जितनी कि मेरे मित्रों को उनकी माँ द्वारा प्राप्त थी।	.....	.....
48.	विद्यालय से घर वापिस लौटने पर मेरी माँ अधिकतर मुझे घर पर नहीं मिला करती थी।	.....	.....
49.	मेरे पिता मेरे मित्रों का घर पर आना पसन्द किया करते थे।	.....	.....
50.	मेरे पिता अधिकतर मेरे द्वारा किए गए कार्यों में रूचि लिया करते थे।	.....	.....
51.	विशेष अवसरों (जन्म दिन) पर मेरी माँ ने कोई उपहार दिया हो।	.....	.....
52.	माँ मुझे विद्यालय तथा मित्रों के साथ घूमने जाने के लिए तैयार करने में काफी समय व्यतीत करती थीं।	.....	.....

क्रमांक		सत्य	असत्य
53.	जब मैं बड़ा हुआ तो मेरे पिता ने मुझसे बातचीत करने तथा मेरे साथ घूमने जाने में बहुत कम समय दिया।	.....	.....
54.	मेरे पिता अधिक गुस्सा हुआ करते थे तथा मेरी बात को काट दिया करते थे।	.....	.....
55.	मेरे मित्रों द्वारा थोड़ा सा भी मुझे छेड़े जाने पर अथवा नोंचे जाने पर मेरी माँ उन्हें डाँट दिया करती थी।	.....	.....
56.	पिताजी ने मुझे आवश्यका से अधिक विशेष अवसरों पर उपहार दिए।	.....	.....
57.	मेरी माँ उस समय तक किसी काम को अकेले करने देती थी जब तक मैं उसकी सहायता नहीं मांगा करता था।	.....	.....
58.	मैंने प्रायः अनुभव किया है कि मेरी माँ ने मुझे प्रेमपूर्वक रखने की अपेक्षा मेरी साधारण देखभाल ही की।	.....	.....
59.	बचपन में जब मैं अपनी माँ के साथ कहीं किसी के यहां भोजन करने या अन्य उत्सव पर जाता था तो मेरी माँ मुझे या तो गोद में लिए रहती थी या उंगली पकड़े रहती थीं।	.....	.....
60.	मेरे पिता को इस बात की कभी चिन्ता ही नहीं हुई कि मैं किस प्रकार के साथियों (संगीत) के साथ घूमता हूँ।	.....	.....
61.	यदि कोई कार्य मेरी शक्ति से बाहर होता था तो मैं अपने पिता से साफ कह दिया करता था।	.....	.....
62.	मेरे काफी बड़े हो जाने पर भी मेरी माँ मुझे कपड़े तो स्वयं ही पहनाया करती थी।	.....	.....
63.	मैं जब भी कभी अपने मित्रों को अपने साथ घर लाया तो मेरी माँ को उनका आना अच्छा लगा।	.....	.....
64.	खेल में पहने जाने वाले मेरे कपड़े यदि खेल में गन्दे हो जाते थे तो मेरी माँ नाराज नहीं हुआ करती थीं।	.....	.....
65.	मेरी माँ बहुत से मामले पर मेरी राय लिया करती थीं तथा उस पर काफी गम्भीर रूप से ध्यान भी दिया करती थीं।	.....	.....
66.	मेरी माँ किसी भी कार्य को करने के लिए आशा देने के स्थान पर प्रार्थना ही किया करता है।	.....	.....
67.	मेरे पिता यह बिल्कुल भी पसन्द नहीं किया करते थे कि मैं रात को किसी मित्र के यहाँ जाऊँ या किसी स्कूल द्वारा आयोजित कैम्प (शिविर) में रात को रूकूँ।	.....	.....
68.	मेरे पिताजी मेरे बारे में अधिक चिन्तित रहते हैं लेकिन मैं उनको यह बताना नहीं चाहता कि मैं उसके बारे में ऐसा सोचता हूँ।	.....	.....
69.	मैं जो कुछ भी चाहता था उसी के प्रतिरूप में अपने पिता से अधिकतर करा लिया करता था।	.....	.....
70.	मैं अपने पिता के इधर-उधर के कार्यों को करने में भी आनन्द लेता हूँ।	.....	.....
71.	भोजन करते समय (पिता के साथ) ऐसे बहुत कम अवसर आए जबकि मेरे पिता ने मेरे खाने-पीने के गलत तरीकों पर टोका हो।	.....	.....
72.	मेरे पिता मेरे ही विचारों के अनुसार मेरे मित्रों को देखा करते थे।	.....	.....
73.	मेरी माँ अधिकतर मेरे मुकाबले में दूसरे बच्चों के साथ अधिक आदर तथा विनम्रता का व्यवहार किया करती थीं।	.....	.....
74.	मेरी माँ किसी भी काम को अच्छे से अच्छा करने के लिए अनेक बार कहा करती थीं।	.....	.....
75.	आवश्यकता पड़ने पर अपने पिता की सलाह (अपने निजी मामलों) पर विश्वास कर लिया करता था।	.....	.....

क्रमांक		सत्य	असत्य
76.	यदि मैं किसी कठिन परेशानी में फंस जाता था तो मेरे पिताजी अपनी शक्ति के अनुसार उस परेशानी से मुझे निकालने का प्रयास करते थे।	.....	.....
77.	जब कभी मैं बचपन में अपनी माँ के साथ खलौने अथवा जनरल स्टोर की दूकान पर गया तो मेरी माँ ने मेरे ही लिए खिलौने या टॉफी का डिब्बा नहीं खरीदा।	.....	.....
78.	मेरी माँ का तो यही दृष्टिकोण था कि बच्चे ज्यादातर खराब ही हुआ करते है।	.....	.....
79.	मेरी माँ उस समय अधिक चिन्तित होती थीं जब मैं विद्यालय से छुट्टी होने के पश्चात् तुरन्त घर नहीं लौटता था।	.....	.....
80.	मेरे विचारों से मेल न खाने पर भी अधिकतर मेरे पिताजी इच्छानुरूप ही कार्य किया करते थे।	.....	.....
81.	मेरे पिताजी वर्ष में कई बार मेरे स्कूल में मेरे सम्बन्धित अध्यापकों से मिलने जाया करते थे।	.....	.....
82.	मेरी माँ मुझसे अधिकतर वायदे तो कर लिया करती थीं पर उनको बहुत कम बार ही पूरा किया करती थीं।	.....	.....
83.	जब मैं छोटा था तो मेरी माँ यह परवाह नहीं करती थीं कि मैं कितना भोजन करता हूँ।	.....	.....
84.	मैंने यह अनुभव किया कि मेरे पिताजी मेरे लिए एक अच्छे पिता के साथ-साथ अच्छे मित्र भी थे।	.....	.....
85.	यदि मैं किसी समस्या को विचार विमर्श हेतु माँ के समक्ष प्रस्तुत करता था तो वे सदैव उस पर पर्याप्त समय दिया करती थीं।	.....	.....
86.	मैंने शायद ही कभी अपनी व्यक्तिगत समस्या को हल करने हेतु पिता के समक्ष रक्खा हो।	.....	.....
87.	माँ मेरी प्रशंसा और निन्दा दोनों ही अधिक मात्रा में किया करती थीं।	.....	.....
88.	मेरी इच्छा के अनुसार मेरी माँ मुझे घर से बाहर खेल खिलाने ले जाया करती थीं।	.....	.....
89.	मेरे पिताजी ने शायद ही कभी किन्हीं अवसरों पर मेरी उत्साहवर्धन किया हो।	.....	.....
90.	मेरी माँ ने मुझे इतने उपहार (खिलौने, पेंसिल, टॉफी, पैन आदि) भेंट स्वरूप प्रदान किए जितने के लिए मैं लायक नहीं था।	.....	.....
91.	मेरी माँ मुझ पर विश्वास किया करती थीं।	.....	.....
92.	मेरे (कक्ष में दिए गए) गृह कार्य अपूर्ण रहने पर मेरे पिता मुझे संध्या को बाहर घूमने जाने के प्रस्ताव पर विचार ही नहीं किया करते थे।	.....	.....
93.	मेरे पिताजी अपनी कर्मशाला अथवा दूकान/ऑफिस में काम करने तथा घूमने फिरने नहीं दिया करते थे।	.....	.....
94.	मुझे यह याद है कि जब मैं बहुत छोटा था तो मेरे छोटे मामलों में मुझे अकेले ही निर्णय लेने में प्रोत्साहित किया करते थे।	.....	.....
95.	जब मैं किसी गम्भीर परेशानी में पड़ जाता था तब मैं उन परेशानियों को दूर करने में अपने पिता से बहुत ही कम सहायता की आशा करता था।	.....	.....
96.	मेरे पिता तो मुझे यह समझाने में रूचि ही नहीं लिया करते थे कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों में किस प्रकार का व्यवहार किया जाये।	.....	.....
97.	मेरी अक्सर यह इच्छा होती थी मेरे पिता कठिनाइयों का सामना मुझे स्वयं ही करने दें।	.....	.....
98.	मुझसे कम आयु में मेरे मित्रों को उनके पिता द्वारा रात्रि को घर से बाहर घूमने जाने की आज्ञा मिल जाया करती थी।	.....	.....
99.	जब मैं कभी अपनी माँ का बहुत अधिक प्यार से मुँह चूमता तो कुछ घबड़ाई हुई सी प्रतीत होती थीं।	.....	.....

क्रमांक	सत्य	असत्य
100. मेरे पिता बहुधा मुझसे मेरी सामर्थ्य से अधिक कार्य कराने की आशा रखते थे।	.....	.....
101. विद्यालय में सामान्य अंक प्राप्त करने पर मेरे पिताजी मेरी प्रगति के सम्बन्ध में निराश हो जाया करते थे।	.....	.....
102. मेरी माँ मेरी योजना एवं राय में बहुत कम रूचि लेती हुई दिखाई पड़ती थीं।	.....	.....
103. जब कभी मैं अपने पिता के साथ दूकान पर जाया करता था तो मेरे लिए ही कोई विशेष वस्तु तथा खिलौने, गुब्बारा, मिठाई या टॉफी इत्यादि नहीं खरीदा करते थे।	.....	.....
104. मेरे पिता यह ज्यादा पसन्द करते थे कि मैं घर से बाहर कक्षा के मित्रों के साथ सैर करने न जाऊँ।	.....	.....
105. जब कभी मैंने अपने पिता से किसी भी चील को लेने की माँग की तो वे मुझे व्यस्त ही दिखाई पड़े।	.....	.....
106. मेरी माँ तो अब भी यह नहीं सोचती है कि अब मैं बच्चा नहीं हूँ (बड़ा हो गया हूँ)।	.....	.....
107. मैंने बहुधा यह अनुभव किया है कि मेरे माँ मुझसे सामर्थ्य से अधिक कार्य किये जाने की आशा रखती थी।	.....	.....
108. मेरे पिता को बहुत से अवसरों पर अपनी बात को मनवा लेने का ढंग आता था।	.....	.....
109. मेरी माँ ने शायद ही कभी मुझे बिस्तर पर थपकी देकर रात में सुलाया हो।	.....	.....
110. मेरे पिता मेरे विद्यालय कार्यों में कभी रूचि लेते हुए प्रतीत नहीं होते थे।	.....	.....
111. अनेक बार मेरी प्रार्थना उचित होती थी फिर भी मैंने तो अपने पिता के मुख से 'नहीं' शब्द ही सुना।	.....	.....
112. मेरे पिता मेरी समस्या तथा कठिनाइयों के बारे में बड़ी उत्सुकता के साथ मेरी बात सुना करते थे।	.....	.....
113. मेरी माँ ने शायद ही कभी मुझे नैतिक बल प्रदान किया हो।	.....	.....
114. अपनी माँ से दिल खोलकर बातचीत करना तो मुझे पूर्णतः असम्भव सा ही प्रतीत होता था।	.....	.....
115. मेरी माँ ने कभी भी यह जानने की परवाह नहीं की कि मुझे विद्यालय (वार्षिक तथा अर्द्धवार्षिक) परीक्षा में किस प्रकार के अंक अथवा श्रेणी प्राप्त हुई।	.....	.....
116. अनेक अवसरों पर जब मुझे माँ की सहायता की आवश्यकता पड़ती थी तो वे मुझे या तो अधिक व्यस्त ही दिखाई पड़ीं या फिर मुझे वे मिल ही नहीं पाती थीं।	.....	.....
117. मेरी माँ ने मेरे प्रति बहुत ही कम प्रेम प्रदर्शित किया।	.....	.....
118. मैं बचपन में शायद ही कभी अपनी माँ की गोदी में बैठ पाया।	.....	.....
119. मेरे पिता के व्यवहार से यह प्रतीत होता था कि मैं उनके लिए परेशान करने वाला हूँ।	.....	.....
120. मुझे याद है कि मेरी माँ सामान्यतः मुझसे ही कहा करती थीं कि मुझे क्या करना चाहिए।	.....	.....
121. मेरे पिता बहुत से मामलों में मुझसे परामर्श लिया करते थे तथा उन पर पर्याप्त विचार भी किया करते थे।	.....	.....
122. जब तक मैं रात को वापिस घर लौट कर नहीं आ जाता था, मेरी माँ सोती नहीं थी।	.....	.....
123. मेरे दोपहर तक घर से बाहर घूमते रहने पर भी मेरी माँ बहुत कम चिन्तित हुआ करती थी।	.....	.....
124. मेरी माँ ने मुझे अधिकतर अपने बराबर का सा ही माना।	.....	.....
125. मेरे पिता ने मेरी बुराई की अपेक्षा मेरी प्रशंसा ही अधिक की किन्तु दोनों में कोई सीमा से अधिक नहीं थी।	.....	.....

क्रमांक	सत्य	असत्य
126. जब कभी भी मैंने माँ से कोई चीज माँगी तो वे मुझे अधिक व्यस्त दिखाई दीं।	.....	.....
127. मेरी माँ सोचती थीं कि मेरी गणना कक्षा के सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले छात्रों में होनी चाहिए।	.....	.....
128. बीमार पड़ने पर जब भी कभी मुझे चिकित्सा की आवश्यकता पड़ी तो मेरे पिताजी बहुतधा मेरी (मंहगी तथा उपयुक्त) चिकित्सा करने के लिए टाल दिया करते थे।	.....	.....
129. विद्यालय से जब कभी मैं माँ के लिए या बाजार से माँ के लिए कोई वस्तुत लाता था तो वे उनमें विशेष रूचि लेती हुई दिखाई नहीं पड़ती थीं।	.....	.....
130. मेरे पिता वस्तुओं के सम्बन्ध में इस प्रकार स्पष्ट कर दिया करते थे जिससे कि मेरी केवल उत्सुकता ही शान्त हो।	.....	.....
131. मेरे पिता मेरे रूचिकर कार्यों में मुझे पर्याप्त सहायता प्रदान किया करते थे।	.....	.....
132. मेरी माँ बहुधा व्यस्त होने के कारण मुझसे बातचीत नहीं कर पाती थीं।	.....	.....
133. मेरे पिताजी मेरे साथ खेलने में अपना समय व्यतीत किया करते थे।	.....	.....
134. बचपन में मेरे खेलने के मध्य मेरी माँ अधिकतर मेरी देखभाल लगातार करती रहा करती थीं।	.....	.....
135. बचपन में मुझे याद है कि मेरी माँ मेरे छोटे-छोटे मामलों पर मुझे निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया करती थीं।	.....	.....
136. बचपन में मैं बिना माँ की आज्ञा लिए घर से बाहर जा सकता था तथा मित्रों के साथ खेल सकता था।	.....	.....
137. मैंने अनुभव किया कि मेरे पिता खाने-पीने के तौर तरीकों को सिखाने के सम्बन्ध में अधिक कठोर थे।	.....	.....
138. मेरे पिता ने शायद ही कभी मेरी नवीन छोटी योजनाओं में रूचि दिखाई हो।	.....	.....
139. मैं अपने पिता को पूर्णतः सन्तुष्ट करने के लिए कोई भी कार्य भली प्रकार न कर सका।	.....	.....
140. मैं अपनी माँ के छोटे-छोटे कार्यों को करने में आनन्द का अनुभव किया करता था।	.....	.....
141. यदि मैं किसी गम्भीर समस्या से ग्रसित हो जाता तो मेरी माँ मेरी सहायता करने के लिए तैयार रहा करती थीं।	.....	.....
142. मेरी इच्छा के अनुरूप ही मेरी माँ मेरी योजनाओं को पूर्ण करने में मुझे पर्याप्त सहायता प्रदान किया करती थी।	.....	.....
143. मेरे पिता मुझसे सम्बन्धित मामलों में मेरा विश्वास किया करते थे।	.....	.....
144. मेरे पिताजी की इच्छा थी कि मैं कक्षा में सर्वप्रथम आऊं।	.....	.....
145. बचपन में मेरे पिता ने मुझे उतनी ही स्वतन्त्रता प्रदान की जितनी कि मेरे मित्रों को उनके पिता द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्त हुई थी।	.....	.....
146. मेरी माँ मेरे विचारों के अनुसार ही मेरे साथियों को देखा करती थीं।	.....	.....
147. घर या बाहर जाने या किसी मित्र के यहाँ रूकने पर मेरी माँ अप्रसन्न हो जाया करती थीं।	.....	.....
148. मेरी माँ बहुधा मुझे उसी प्रकार के कपड़े पहनाया करती थीं जैसे कि मेरे मित्र पहना करते थे।	.....	.....
149. बहुत कम ऐसे अवसर आए जबकि मेरी माँ ने किसी काम को करने के लिए मुझे सिखाया।	.....	.....
150. मेरे पिता की इच्छा थी कि मैं अपने मित्रों की तुलना में अधिक अच्छा कार्य कर दिखाऊँ।	.....	.....

गोपनीय

व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली (P V Q)

डा. (श्रीमती) जी.पी. शैरी
निदेशिका
दयालबाग एजुकेशन इन्सटीट्यूट
आगरा

डा. आर.पी. वर्मा
रीडर, शिक्षा विभाग
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी-5

द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत

कृपया निम्नलिखित संगत विवरण दीजिये

1. नाम.. 2. आयु ....
3. लिंग.. 4. जाति.....................................
5. धर्म... 6. ग्रामीण/शहरी.............................
7. विवाहित/अविवाहित.............................. 8. शैक्षिक योग्यता..............................
9. व्यवसाय... 10. मासिक आय..............................

- फलांकन तालिका -

पृष्ठ सं.	क ख ग	घ च छ	ज झ ट ठ
4			
5			
6			
7			
8			
योग			

National Psychological Corporation
4/230, Kacheri Ghat, AGRA – 282004 (INDIA)

निर्देश

कुछ परिस्थितियों में आप क्या करना पसन्द करेंगे/करेंगी यह जानने के लिए यह प्रश्नावली तैयार की गई है। प्रत्येक प्रश्न के मीन उत्तर दिये गये हैं। इन उत्तरों को अपनी पसन्द के अनुसार नीचे दिये गये ढंग से आप कृपया क्रम (Order) प्रदान करें।

किसी प्रश्न के :

1. (अ) जिस उत्तर को आप सबसे अधिक पसन्द करते/करती हैं उसके सामने कोष्ठक में आप सही (√) का चिन्ह लगा दीजिए।
   (ब) जिस उत्तर को आप सबसे कम पसद करते/करती हैं उसके सामने कोष्ठक में (x) का चिन्ह लगा दीजिए।
   (स) अब जो उत्तर बच रहे उसके सामने कोई चिन्ह न लगाइये।
   (द) केवल एक उत्तर के सामने सही (√) का चिन्ह और एक उत्तर के सामने क्रौस (x) का चिन्ह लगाना है।

उदाहरण- नीचे दिये उदाहरण को ध्यान से पढ़िये।

प्रश्न	उत्तर के लिये स्थान
आपके विचार में आवश्यकता से अधिक धन का अच्छा उपयोग क्या है?	
(च) और धन कमाने के लिए पूंजी के रूप में लगाना।	च (x)
(ख) दीन दुखियों को दान देना	ख (√)
(ज) जीवन के भौतिक सुखों और आरामों को प्राप्त करने के लिए खर्च करना।	ज ( )

इन उदाहरण में उत्तरदाता ने उत्तर (ख) सबसे अधिक पसन्द किया है और उसके सामने कोष्ठक में सही (√) का चिन्ह लगाया है। उसने उत्तर (च) को सबसे कम पसन्द किया है और उसके सामने कोष्ठक में क्रौस (x) का चिन्ह लगाया है। उत्तर (ज) को उसने छोड़ दिया है। आपकी पसन्द इससे भिन्न हो सकती है।

2. प्रत्येक परिस्थिति में दिये गये उत्तरों से भिन्न भी बहुत से उत्तर हो सकते हैं, जो आपको सबसे अधिक या सबसे कम पसन्द होंगे। किन्तु आपको केवल दिये गये उत्तरों पर ही विचार करना है।
3. यह ज्ञान-परीक्षण नहीं है। अतः सभी उत्तर सही माने जायेंगे।
4. आपके उत्तर पूर्णतया गोपनीय रखे जायेंगे।
5. प्रश्न सामाजिक परिस्थितियों पर आधारित हैं। अतः आप यह सोच सकते/सकती हैं कि उसी उत्तर को सबसे अधिक पसन्द किया जाये जिसे समाज अच्छा समझता है। लेकिन यह ठीक नहीं होगा क्योंकि तब आप अपने विचारों को सही रूप में नहीं प्रकट कर सकते/सकती हैं। अतः आप अपनी पसन्द को निडर होकर व्यक्त करें चाहे समाज उसे अच्छा समझता है या नहीं।
6. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये, किसी प्रश्न को छोड़ना नहीं है।
7. समय की कोई सीमा नहीं है, किन्तु जो उत्तर आपको पहले विचार में उचित मालूम पड़े उसे ही अंकित कर दीजिए।

सबसे अधिक पसन्द (√) सबसे कम पसन्द (x)

1. अपने निजी सम्बन्धी (बहिन, लड़की) के लिए योग्य वर के चुनाव में आप किस बात को महत्व देंगे/देंगी?
   - ट- वर का कुल। ट ( )
   - च- वर की अधिक धन कमाने की योग्यता। च ( )
   - ठ- वर का अच्छा स्वास्थ्य। ठ ( )

2. आप कैसे काम को पसन्द करते/करती हैं? ऐसा काम जिसमें-
   - झ- आपके नियन्त्रण में कुछ लोग हों। झ ( )
   - ज- आपके शरीर को सुख और आराम मिले। ज ( )
   - च- आपके धन कमाने की अच्छी सम्भावना हो। च ( )

3. यदि दंडित होने का भय न हो तो आप किस परिस्थिति में असत्य बोल सकते/सकती हैं?
   - ख- अपने मित्र की भलाई के लिए। ख ( )
   - ट- अपने खानदान की इज्जत के लिए। ट ( )
   - झ- अपने पद की इज्जत के लिए। झ ( )

4. आप कहां नौकरी/व्यवसाय करना पसन्द करते/करती हैं?
   - च- जहां पर अन्य जगहों से अधिक आय हो। च ( )
   - ठ- जहां की जलवायु आपके लिए स्वास्थ्यपूर्वक हो। ठ ( )
   - ग- जहां सबके साथ समानता का व्यवहार होता हो। ग ( )

5. यदि ईश्वर है तो आपके विचार में उसे समझा जा सकता है?
   - छ- ज्ञान से। छ ( )
   - क- भक्ति से। क ( )
   - ख- लोक सेवा से। ख ( )

6. अवकाश को आप किस प्रकार बिताना पसन्द करते/करती हैं?
   - घ- अपने घर फुलवारी को सजाने या किसी कलात्मक रचना को पूरा करने में। घ ( )
   - ख- समाज हित के कार्यों को करने में। ख ( )
   - ज- सिनेमा सरकस देखने या किसी अन्य मनोरंजन के कार्य में। ज ( )

7. सुखी जीवन के लिए आप किस बात को महत्व देते/देती है?
   - ट- बहुत अच्छा स्वास्थ्य। ठ ( )
   - छ- मानव स्वभाव का अच्छा ज्ञान। छ ( )
   - घ- ललित कलाओं में अभिरूचि। घ ( )

8. आप किस कार्य को करना बुरा मानते/मानती हैं?
   - ज- विपरीत लिंगी (oppsotie sex) मित्र के सिनेमा देखने के प्रस्ताव को ठुकराना। ज ( )
   - ग- अपने खिलाफ होने पर पंचायत का फैसला न मानना। ग ( )
   - क- धन कमाने के लिये झूठ बोलना। क ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (√) सबसे कम पसन्द (x)

9. आप किसी नीची जाति के घर किस अवस्था में खाना खा सकते हैं? यदि
   ठ- खाना पौष्टिक (healthful) हो। ठ ( )
   ख- वह आपका मित्र हो। ख ( )
   झ- वह आपका अफसर हो। झ ( )

10. अनुचित तरीके के धन कमाने/कोई आचरण करने में आपको क्या भय लगता है?
   क- भगवान के दण्ड का। क ( )
   झ- कानूनी दण्ड का। झ ( )
   ख- बदनामी का। ख ( )

11. आपके विचार में शिक्षा कैसी होनी चाहिए? जिसमें :
   ग- लोग धर्म और जाति का विचार किये बिना सबके साथ समानता का व्यवहार करें। ग ( )
   च- लोक जीविका कमाने के योग्य बनें। च ( )
   क- लोग धर्म की मान्यताओं के अनुसार जीवन में आचरण करें। क ( )

12. आपके विचार में अधिक मेहनत से पढ़ना कब सफल होता है? जब
   च- अधिक धन कमाने की योग्यता बढ़ती है। च ( )
   झ- ऊंचे अधिकारी बनते हैं। झ ( )
   छ- नवीन सत्यों का पता लगाने की क्षमता उत्पन्न होती है। छ ( )

13. आप किस चित्रकला को अच्छी मानते/मानती हैं?
   ज- जो मनोरंजन करे। ज ( )
   घ- जो सुन्दर भाव उत्पन्न करे। घ ( )
   छ- जो किसी सत्य बात का निरूपण करे। छ ( )

14. आजकल के लोगों में आपको कौन सी कमी नापसन्द है?
   क- ईश्वर में विश्वास की कमी। क ( )
   घ- कलाओं में रूचि की कमी। घ ( )
   ट- कुल मर्यादा की भावना में कमी। ट ( )

15. आप किस श्रेणी के व्यक्तियों को पसन्द करते/करती हैं?
   छ- विद्वान जो नवीन खोजों से ज्ञान बढ़ाते हैं। छ ( )
   ठ- डाक्टर, वैद्य, हकीम जो स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं। ठ ( )
   च- उद्योगपति जो देश की आर्थिक उन्नति करते हैं। च ( )

16. यदि आपका भाई/लड़का नीचे कुल की लड़की से शादी करना चाहता है, तो आप क्या करना पसन्द करेंगे/करेंगी?
   ग- शादी करने देना क्योंकि आप सभी कुलों को समान समझते/समझती हैं। ग ( )
   ट- शादी नहीं करने देना क्योंकि इससे कुल का सम्मान कम हो जायेगा। ट ( )
   ज- शादी करने देना क्योंकि आप प्रेम में कुल की अपेक्षा सुख को अधिक महत्व देते/देती हैं। ज ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (√) सबसे कम पसन्द (x)

17. आप किससे मित्रता करना पसन्द करते/करती हैं? जो
    ट- आपके समान खानदान का हो। ट ( )
    क- अपने धर्म में पूर्ण विश्वास रखता हो। क ( )
    घ- कला या साहित्य में रूचि रखता हो। घ ( )

18. आप महात्मा गांधी को किस लिए पसन्द करते/करती हैं?
    झ- उन्होंने कांग्रेस संगठन को अपने नियन्त्रण में रखकर काम किया। झ ( )
    क- उनका ईश्वर में अटूट विश्वास था। क ( )
    ग- उन्होंने सबको समान अधिकार दिलाने का प्रयास किया। ग ( )

19. अपने व्यवसाय/नौकरी में सफलता पाने के लिए आप किस बात को महत्व देते/देती हैं?
    झ- अपने अधीन कर्मचारियों को नियंत्रण में रखने की योग्यता। झ ( )
    छ- काम के मुख्य सिद्धान्तों का ज्ञान। छ ( )
    ग- सभी के साथ जाति, वर्ग (अमीर-गरीब) या धर्म का भेद किये ग ( )

20. आपको अपनी किस भूल से दुख होगा? जिससे
    च- बड़ी आर्थिक हानि होती है। च ( )
    क- धार्मिक मान्यता टूटती है। क ( )
    ठ- स्वास्थ्य खराब होता है। ठ ( )

21. कलाओं को सीखने के लिए किये गये परिश्रम (साधना) को आप कब सफल मानते/मानती हैं? जब
    घ- उससे कलाकार को आत्म सन्तोष मिलता है। घ ( )
    ख- उससे दूसरों को आनन्द मिलता है। ख ( )
    च- उसे जीविका का साधन बनाया जा सकता है। च ( )

22. लड़के/लड़की को अपनी शादी में किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
    च- नये सम्बन्धी की आर्थिक दशा का। च ( )
    ज- अपनी स्वयं की पसन्द का। ज ( )
    ट- अपने कुल के लोगों की राय का। ट ( )

23. आप कैसे खाने को पसन्द करते/करती हैं?
    ख- जिसे कोई प्रेम पूर्वक खिला दे। ख ( )
    ज- जो खाने में आपको स्वादिष्ट लगे। ज ( )
    ठ- जिसमें पोषक पदार्थ उचित अनुपात में हों। ठ ( )

24. आपने एक साथ के साथ कोई काम करना प्रारम्भ किया। किस परिस्थिति में आप उस काम को नहीं करना चाहेंगे/चाहेंगी?
    ट- जब उससे आपके कुल पर धब्बा लगने का भय हो। ट ( )
    ज- जब उससे आपके शरीर को कष्ट होने का भय हो। ज ( )
    छ- जब आप निश्चित रूप से जान लें कि काम बुरा है। छ ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (√) सबसे कम पसन्द (x)

25. आप कैसे मुहल्ले में रहन पसन्द करेंगे/करेंग?
घ- जो कायदे से बसा हो और देखने में सुन्दर लगे। घ ( )
ट- जहां आपके जैसे खानदान के पड़ोसी हों। ट ( )
झ- जहां आप लोगों का नेतृत्व कर सकें। झ ( )

26. आप किसे अच्छा प्रशासक मानते/मानती हैं।
ख- जिसमें सहानुभूति एवं दया हो। ख ( )
झ- जो सख्त अनुशासन रखे। झ ( )
छ- जिसे प्रशासन के सिद्धान्तों को ज्ञान हो। छ ( )

27. धन कमाने के लिये अत्यधिक आवश्यकता पड़ने पर भी आप किस काम को करना कठिनता से स्वीकार करेंगे/करेंगी?
ठ- जहां आपके स्वास्थ्य के खराब होने का डर हो। ठ ( )
झ- जहां आपको बहुतों के आधीन रहकर काम करना पड़े। झ ( )
ट- जिसे आपके कुल के लोग नीचा समझते हों। ट ( )

28. एक-एक लाख रूपया लाटरी में इनाम पाने पर तीन व्यक्तियों ने उसका अधिकांश भाग निम्नलिखित तरीके से व्यय किया। आपके विचार में किसने धन का अच्छा उपयोग किया?
ज- अपने सुख सुविधा की सामग्रियों को खरीदने में। ज ( )
च- अपनी आय को बढ़ाने के लिये पूंजी के रूप में लगाने में। च ( )
ख- अपनी जाति की तरक्की करने के लिये। ख ( )

29. तीन व्यक्तियों में आप निम्नलिखित भिन्न-भिन्न गुण पाते हैं। आप किसका सम्मान करेंगे/करेंगी?
क- जिसका जीवन सादा और जिसके विचार धार्मिक हैं। क ( )
ग- जो अमीर गरीब का भेद किये बिना सबके साथ एक सा व्यवहार करता है। ग ( )
ख- जो जरूरतमन्द लोगों की मदद करने में अपने सुख-दुख की परवाह नहीं करता है। ख ( )

30. आपके विचार में कविता का उद्देश्य क्या होना चाहिए?
छ- समाज को यथावत चित्रित करना। छ ( )
घ- सुन्दरता का चित्रण करना। घ ( )
ज- मनोरंजन करना। ज ( )

31. आपके विचार में 'सुबह के अच्छे समय में' किस काम को वरीयता (प्रमुखता) देनी चाहिए?
ट- स्वास्थ्य ठीक रखने के लिये टहलना, कसरत करना। ठ ( )
छ- ज्ञान वर्धन के लिये अध्ययन करना। छ ( )
क- ईश्वर की पूजा या चिंतन करना। क ( )

32. आप अच्छे स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण क्यों समझते/समझती हैं? क्योंकि तभी :
ज- आप इस दुनियां के सुखों का आनन्द ले सकते/सकती हैं। ज ( )
ठ- आप अपनी योग्यताओं का पूर्ण विकास तथा उपयोग कर सकते/सकती हैं। ठ ( )
ग- आप निडर होकर सभी के साथ समानता का व्यवहार कर सकते/सकती हैं। ग ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (√) सबसे कम पसन्द (x)

33. यदि आपको व्यक्तिगत सहायक की आवश्यकता हो तो आप किस उम्मीदवार को रखना पसन्द करेंगे/करेंगी?
ट- जिसके पास आवश्यक योग्यता है और साथ ही जो अच्छे कुल का है। ट ( )
ग- जिसकी योग्यता सबसे अच्छी है। ग ( )
ख- जिसके पास आवश्यक योग्यता है और साथ ही जो बहुत जरूरतमन्द है। ख ( )

34. आप किसी शुभ अवसर पर (जैसे जन्म दिन) पर किस उपहार को लेना पसन्द करेंगे/करेंगी?
घ- ड्राइंग रूम की सजावट के लिए नई शैली की वस्तु। घ ( )
च- सोने की अंगूठी। च ( )
ठ- किसी स्वास्थ्यवर्धक खेल का सामान जैसे वैडमिण्टन सेट। ठ ( )

35. आपके विचार में आज की परिस्थिति में अपने देश की भलाई के लिये कौन महत्वपूर्ण है?
क- सच्चा धार्मिक नेता। क ( )
छ- अच्छा वैज्ञानिक। छं ( )
च- परिश्रमी उद्योगपति। च ( )

36. यदि कुछ समय के लिए आपको घर से बाहर एक ही कमरे में किसी के साथ रहना पड़े तो आप किसे पसन्द करेंगे/करेंगी।
ट- जो आप जैसे कुल का हो। ट ( )
ग- जो जाति, धर्म, भाषा एवं वर्ग का भेद न रखता हो। ग ( )
घ- जो संगीत, चित्रकला, काव्य में रूचि रखता हो। घ ( )

37. कोई काम करने में आप किस बात का ध्यान रखते/रखती हैं?
ख- उससे किसी व्यक्ति को दुःख न हो। ख ( )
ट- उससे खानदान की इज्जत कम न हो। ट ( )
ठ- उससे आपका स्वास्थ्य खराब न हो। ठ ( )

38. निम्नलिखित कुलों में से आप किस का सम्मान करेंगे/करेंगी?
छ- जिसमें बहुत से विद्वान/वैज्ञानिक पैदा हुए हों। छ ( )
ग- जिसके सदस्य अपने प्रजातान्त्रिक गुणों (जैसे धर्म में उदारता, भेदभाव न करना) के लिये प्रसिद्ध हों। ग ( )
झ- जिसमें से प्रशासक (जैसे कलक्टर, पुलिस कप्तान) पैदा हुए हों। झ ( )

39. आपके विचार में सच्चा क्या है? जो यह विश्वास उत्पन्न करे कि :
ग- जाति, धर्म, भाषा आदि के आधार पर भेद नहीं करना चाहिए। ग ( )
घ- ईश्वर सभी सुन्दर चीजों में वास करता है अतः सुन्दरता (कला) की साधना करनी चाहिए। घ ( )
क- ईश्वर सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापी है, अतः धर्मभीरू होना चाहिए। क ( )

40. किस कथन में आपका विश्वास है?
झ- बड़ी जगह में सेवा करने से अच्छा है कि छोटी जगह में शासन किया जाय। झ ( )
ज- दुनियां में आकर जिसने अपनी इच्छाओं को तृप्त नहीं किया, वह जीते हुए भी मरा हुआ है। ज ( )
घ- साहित्य, संगीत और कला के लिए प्रेम से विहीन पुरूष पशु के समान है। घ ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

गोपनीय

TCW

डा. बाकर मेंहदी
प्रोफेसर ऑफ ऐजूकेशन
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

नाम- आयु-

कक्षा- विद्यालय-

पिता/अभिभावक का नाम- व्यवसाय-

घर का पता- दिनांक-

निर्देश

जीवन में नवीनता, मौलिकता एवं रचनात्मक योग्यता का बड़ा महत्व है। जीवन की प्रत्येक नई खोज मनुष्य के नये ढंग से सोचने की योग्यता का परिणाम हैं संसार की बहुत सी ऐसी वस्तुएं हैं जिन्हें नये-नये विचारों के द्वारा अनोखी तथा उपयोगी बनाया जा सकता है। ऐसी योग्यता रखने वाले व्यक्तियों ने ही नई-नई खोजें एवं आविष्कार किये हैं। आगे के पृष्ठों पर कुछ ऐसी समस्यायें दी गई हैं जिन्हें यदि आप विचारात्मक एवं सृजनात्मक ढंग से हल करने का प्रयत्न करेंगे तो आप बहुत से नवीन तथा रोचक उत्तर देने में सफल हो सकेंगे। आपको इन कार्यों के करने में बहुत आनन्द आयेगा।

1. ये कार्य दिन प्रतिदिन की समस्याओं से सम्बन्धित है; इनका कोई सही या गलत उत्तर नहीं हैं। देखना यह है कि आप कहां तक ऐसी नई एवं अनोखी बातें सोचते हैं जो आपके विचार में आपके साथी नहीं सोच सकते। वास्तव में विचित्र एवं नवीन उत्तर देने से ही यह पता लग सकेगा कि आप में वस्तुओं को नये ढंग से सोचने की कितनी योग्यता है; अतः जितने भी अधिक नये एवं रोचक विचार आयें लिखते जाइये चाहे व असम्भव ही क्यों न मालूम होते हों।
2. इस पत्रिका में आपको चार प्रकार के कार्य करने के लिये दिये गये हैं। सुविधा के लिये प्रत्येक कार्य का अलग-अलग समय निश्चित है; जहां तक सम्भव हो शीघ्रता से उत्तर दीजिये। यदि आप किसी कार्य को निश्चित समय से पहले पूरा कर लेते है तो भी जब तक आपसे अगले कार्य के लिये न कहा जाये, आगे न बढ़ें बल्कि उसी कार्य के बारे में शांतिपूर्वक सोचते रहें और जो भी नया विचार आपके मन में आये उसे भी लिख दें। अन्त में पांच मिनट का समय और दिया जायेगा। यदि आपके मन में किसी भी प्रश्न के किसी भाग के बारे में कोई नवीन विचार आया है जिसे आप पहले नहीं लिख पाये थे, तो उसे इस समय में लिख सकते हैं।
3. प्रत्येक कार्य के हर भाग का उत्तर अवश्य दीजिये। जब आपसे कार्य आरम्भ करने को कहा जाय तो तुरन्त शुरू कर दीजिये।

यदि आपको कोई बात पूछनी है तो इस समय पूछ लीजिये। यदि इस समय कोई कठिनाई नहीं है और बाद में कोई कठिनाई आये तो शांतिपूर्वक अपने स्थान से हाथ उठायें ताकि आपकी कठिनाई दूर की जा सके।

EST 1971 *PHONE 65780*

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION

4/230, KACHERI GHAT, AGRA – 282004 (INDIA)

कार्य – 1

यदि ऐसा हो जाय तो.........

निर्देश :–

1. इस कार्य में नीचे तीन असम्भव बातें दी गई हैं जो कि कभी सत्य नहीं हो सकतीं। आप केवल यह मान लें कि ऐसा हो गया है। तब आप सोचें कि ऐसा हो जाने पर क्या परिणाम हो सकते हैं।
2. प्रश्नों का उत्तर देते समय अपने ध्यान और सोचने की शक्ति को पूरी तरह प्रयोग करने का प्रयत्न कीजिए और 15 मिनट में आप जितने उत्तर दे सकते हैं दीजिए। ऐसे उत्तर देने का प्रयत्न कीजिए जो आपके विचार में आपके किसी साथी ने न सोचे हों।
3. उत्तर छोटे-छोटे वाक्यों में देने का प्रयत्न कीजिये ताकि दिये हुये समय में आप अधिक से अधिक लिख सकें।
4. याद रखिए आपको 15 मिनट में इस कार्य की तीनों समस्याओं के विषय में लिखना है। जब पहले प्रश्न के विषय में कोई अन्तर समझ में न आये तो आप तुरन्त दूसरे प्रश्न को हल करना शुरू कर दीजिए। अगर बीच में या बाद में पहले प्रश्न के विषय में कोई नया उत्तर ध्यान में आए तो उसे भी पहले उत्तरों के साथ लिख दीजिए। आपकी सुविधा के लिए हर 5 मिनट समाप्त होने पर आपको बता दिया जायेगा।
5. जब आपसे काम आरम्भ करने को कहा जाए तो तुरन्त शुरू कर दीजिए।

नीचे एक उदाहरण दिया जा रहा है जिससे स्पष्ट हो जायेगा कि आपको क्या करना है-

प्रश्न : यदि पशु-पक्षी भी मनुष्य के समान बोलने लगें तो क्या होगा?

उत्तर : (1) यह संसार एक विभिन्न प्रकार का संसार दिखाई देगा।
(2) पशुओं के राज्य में बहुत से नेता उत्पन्न होंगे।
(3) सम्भव है कि एक गधा हमारा नेता हो जाए।
(4) यह भी सम्भव है कि वह हमारा प्रधानमंत्री बन जाए।
(5) मनुष्य अपने पशु मित्रों को अपना राजदार (विश्वस्त) बना ले।
और (6) पशु भी अपने भेद अपने मनुष्य मित्रों से कह सकेंगे; आदि।

समस्यायें

1. यदि मनुष्य पक्षियों की भाँति उड़ने लगे तो क्या होगा?

2. यदि आपके विद्यालय में पहिये लग जायें तो क्या होगा?

3. यदि मनुष्य को खाने की आवश्यकता न रहे तो क्या होगा?

कार्य – 2 ***वस्तुओं के नये–नये प्रयोग***

निर्देश :–

1. इस कार्य में नीचे तीन वस्तुओं के नाम दिए गए हैं जिनको कई नए कोई विभिन्न तरीकों से प्रयोग किया जा सकता है। आपको इनमें से प्रत्येक के नए-नए, विचित्र तथा रोचक प्रयोग अधिक संख्या में लिखने हैं। प्रयोग साधारण हों या असाधारण आप सबको लिखिए। यदि आप नए-नए और असाधारण प्रयोग जिन्हें आपके साथी आसानी से नहीं सोच सकते, लिखेंगे तो उससे यह मालूम हो सकेगा कि आप में वस्तुओं को नए ढंग से सोचने की कितनी योग्यता है।
2. प्रत्येक प्रश्न का उतरत देना अनिवार्य है।
3. तीनों वस्तुओं के बारे में लिखने के लिए आपको 12 मिनट का समय दिया जायेगा। जब आप एक वस्तु के प्रयोग लिख चुकें तो तुरन्त दूसरी वस्तु के प्रयोग लिखना आरम्भ कर दीजिए। बीच में या बाद में यदि कोई अन्य नया प्रयोग पहली वस्तु के बारे में याद आ जाए तो उसे भी लिख दीजिए। उत्तर छोटे-छोटे वाक्यों में लिखिए ताकि आप अधिक से अधिक प्रयोग लिख सकें। हर चार मिनट समाप्त होने पर आपको बता दिया जायेगा।
4. जब आपसे कार्य आरम्भ करने को कहा जाए तो तुरन्त आरम्भ कर दीजिए।

नीचे दिए उदाहरण से आपको समझ में आ जायेगा कि आपको क्या करना है-

उदाहरण : 'समाचार-पत्र'

प्रयोग : (1) समाचार पढ़ने के लिए
(2) धूप से बचने के लिए
(3) बच्चों के खेलने की चीजें बनाने के लिए
(4) लपेटने के लिए
(5) रद्दी कागज जमा करने के लिए
(6) गन्दे स्थान को ढकने के लिए; आदि।

समस्यायें

1. पत्थर का टुकड़ा

2. लकड़ी की एक छड़ी

3. पानी

कार्य – 3 *नये सम्बन्ध पता लगाना*

निर्देश :-

नीचे कुछ शब्दों के जोड़े दिए गए हैं जो आपस में कई प्रकार से सम्बन्धित हो सकते हैं। आपको यह सोचना है कि वे कितने प्रकार से आपस में सम्बन्ध रखते हैं। देखने में तो जोड़े के दोनों शब्द अलग-अलग मालूम होते हैं लेकिन यदि ध्यान से देखा जाए तो नए-नए प्रकार के सम्बन्ध समझ में आ सकते हैं। जितने भी सम्बन्ध आप सोच सकें उन्हें दिए हुए स्थान पर छोटे-छोटे वाक्यों में लिख दीजिए। देखना यह है कि आप कितने अधिक और नवीन सम्बन्ध सोचकर लिख सकते हैं।

आपको इस कार्य के लिए 15 मिनट का समय दिया जायेगा। आपको वस्तुओं के सभी जोड़ों के बारे में विचार लिखने हैं। अतः जहां तक सम्भव हो उत्तर शीघ्रता से दीजिए। हर पांच मिनट समाप्त होने पर आपको बता दिया जायेगा। जब आपसे कार्य आरम्भ करने को कहा जाए तो तुरन्त शुरू कर दीजिए।

नीचे दिए उदाहरण से यह स्पष्ट हो जायेगा कि आपको क्या करना है-

उदाहरण : आदमी और जानवर

उत्तर : (1) आदमी और जानवर दोनों में जीवन होता है।
(2) दोनों को भोजन पानी की आवश्यकता है।
(3) दोनों को रोग हो सकते है।
(4) दोनों को शत्रु का डर रहता है।
(5) दोनों को सर्दी-गर्मी का अनुभव होता है।
(6) दोनों अपने रहने की व्यवस्था करते हैं; आदि।

समस्यायें

1. पेड़ और मकान

2. कुर्सी और सीढ़ी (नसैनी)

3. हवा और पानी

कार्य – 4 *वस्तुओं को मनोरंजक तथा विचित्र बनाना*

निर्देश :–

आपने घोड़े का खिलौना तो देखा ही होगा; अन्य जानवरों के भी खिलौने होते हैं जिनसे बच्चे बड़ी प्रसन्नता से खेलते हैं। साधारणतया ये खिलौनी छोटे आकार के होते हैं ताकि बच्चे उनसे आसानी से खेल सकें। आप घोड़े के एक सादे खिलौने को ध्यान में रखिए और फिर नीचे आप उन अनोखे तथा मनोरंजक तरीकों को लिखिए जिनके द्वारा आप इस खिलौने में ऐसे परिवर्तन ला सकें जिनसे बच्चों को इस खिलौने को खेलने में अधिक आनन्द आने लगे। इस बात की परवाह मत कीजिए कि इस प्रकार के परिवर्तन पर क्या लागत आयेगी। आपको केवल यह सोचना है कि खिलौने को बच्चों के लिए किस तरह अधिक से अधिक मनोरंजक तथा विचित्र बनाया जा सकता है।

जब आपसे काम आरम्भ करने को कहा जाए तो तुरन्त काम आरम्भ कर दीजिए। आपको इस कार्य के लिए 6 मिनट का समय दिया जायेगा।